

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अप्रैल, 2022
डाक प्रेषण तिथि 10 अप्रैल, 2022

वर्ष : 80 अंक : 04
चैत्र, 2079 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

अप्रैल, 2022



Website : www.jinwani.in

मिती मे सब्बभूएसु, वेरं मज्झं न केणई।

– प्रभु महावीर

विश्व के सभी प्राणियों के प्रति मेरी मैत्री हो, किसी के भी साथ
वैर न हो—यही आत्मशान्ति एवं विश्वशान्ति का सूत्र है।

॥ जय गुरु हीरा ॥

श्री महावीराय नमः
श्री कुशलस्त्वगजेद्गणिभ्यो नमः

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु माव ॥

अंक सौजन्य

श्रिंहंतो महदेवो, जावज्जीवं शुशाहुणो गुरुणो,
जिण-पणतं ततं, इश्र शम्मतं मए गहियं॥



धर्मनिष्ठ, श्रद्धाशील, त्याग तप की मूर्ति
मातुश्री स्व. श्रीमती उगमकँवरजी मोदी
धर्मसहायिका स्व. श्री सायरनाथजी मोदी
(जन्म 1912-स्वर्गवास 1996)



परस्सरोपग्रहो जीवानाम्



अनन्य गुरुभक्त, दृढधर्मी, समर्पित, गाँधीवादी,
सर्वोदयी, सरल स्वभावी, सेवाभावी, सादगी सम्पन्न,
करुणाभावी श्रावकरत्न स्व. श्री सिद्धेश्वरनाथजी मोदी
सुपुत्र स्व. श्री सायरनाथजी मोदी
(जन्म 1931-स्वर्गवास 1975)

:: श्रद्धाथनत ::

- | | |
|------------------------|---|
| धर्मसहायिका | :: श्रीमती शान्ता मोदी |
| बहिन | :: श्रीमती विजयलक्ष्मी स्व. श्री धनरूपमलजी सुराणा |
| सुपुत्र एवं सुपुत्रवधू | :: प्रदीप-मधु मोदी |
| सुपुत्री एवं दामाद | :: श्रीमती वीणा-स्व. श्री अभय कुमारजी पारख, श्रीमती वन्दना-श्री सुभाषजी भण्डारी |
| सुपौत्र एवं सुपौत्रवधू | :: प्रखर-मानसी मोदी |
| सुपौत्री एवं दामाद | :: सुश्री प्रज्ञा मोदी, श्रीमती कृति-श्री सौरभजी सिंघवी |
| दोहिता एवं दोहितावधू | :: अनुराग-डॉली पारख, प्रतीक-स्नेहा भण्डारी |
| दोहित्रियाँ एवं दामाद | :: श्रीमती स्वाति-श्री मनीषजी अरोरा, श्रीमती प्रेक्षा-श्री हिमांशुजी बाफना |
| परदोहिते | :: अर्नव, शारव, ऋग, निवान, वीरांश, वीर और सिद्ध |

श्री महावीराय नमः

श्री कुशलखण्डगजेन्द्रगणियो नमः

॥ जय गुरु हीरा ॥

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु माव ॥

अंक सौजन्य

संसार की समस्त सम्पदा और भोग के साधन भी
मनुष्य की इच्छा पूरी नहीं कर सकते हैं।

-आचार्यश्री हस्ती

किसी भी अन्य प्राणी की वेदना को अपनी वेदना समझिए,
फिर देखिए आपका व्यवहार बदलता है या नहीं।

-आचार्यश्री हीरा

जयं चरे जयं चिट्टे, जयमासे जयं सए।

जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ।।

यतना से चले खड़ा होवे, यतना से बैठे शयन करे।

यतना से खाये बोले तो, ना पाप-कर्म का बन्ध करे।।

--: श्रद्धाशील बाफना परिवार ::-



कस्तूरचन्द चुन्नीलाल बाफना
सुशीलकुमार कस्तूरचन्द बाफना
सुनिलकुमार कस्तूरचन्द बाफना
राहुल सुशीलकुमार बाफना
सिद्धार्थ रतनलाल बाफना
अभिषेक सुनिल बाफना
रिषभ सुनिल बाफना

अभिनन्दन, 32, दीनानाथ वादी,

रिंग रोड,

जलगाँव-425001 (महाराष्ट्र)

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द्र जैन

सह-सम्पादक

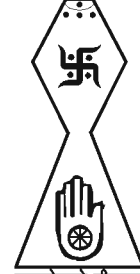
नीरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परस्परप्रेममो जीवानाम्

तिष्णो हु सि ब्रह्मणवं महं,
किं पुण चिद्धसि तीरमागद्धो।
ब्रह्मितुर पारं गमित्तुए,
समयं गोयम! मा पमायडु।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.34

कर गया पार तू महाभवोदधि,
तट पर आकर क्यों रहा ठहर।
कर जल्दी पार पहुँचने की,
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर।।

अप्रैल, 2022

वीर निर्वाण सम्वत्, 2548

चैत्र, 2079

वर्ष 80

अंक 4

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापत्रों (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	मानसिक स्वास्थ्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	साधना के सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	संघ एवं समाज में परस्पर सहयोग जरूरी	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	समत्व की साधना : सामायिक (2)	-मधुरव्याख्यानीश्री गौतममुनिजीम.सा.	16
	प्रशस्त लेश्या एवं विशुद्धि से पुण्य का सम्बन्ध	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	22
	गर्म दूध का दही नहीं, गर्म स्वभाव का सन्त नहीं-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.		28
	चिन्ता और चिन्तन में बहुत फर्क है	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	31
जन्म-शताब्दी-	गुरु सुदर्शन : साम्प्रदायिकता-मुक्त जीवन	-बहुश्रुत श्री जयमुनिजी म.सा.	34
महावीर-वाक्-	कर्मसूत्र	-श्री हेमन्त लोढ़ा	39
जैन सिद्धान्त-	जैनदर्शन में कर्मवाद : एक विश्लेषण	-प्रो. सुमेरचन्द जैन	40
English-section	Jain Religion And Philosophy For Betterment of Social Life	-Dr. Dharm Chand Jain	43
वैज्ञानिक आलेख-	क्या आधुनिक विज्ञान अनन्त: जैनदर्शन की ओर बढ़ रहा है?	-डॉ. सुरेन्द्रसिंह पोखरना	51
जीवन-व्यवहार-	धर्म संगत हो व्यापार अनमोल मोती (1)	-श्री जयदीप ढड्डा	55
		-श्री पी.शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	65
संगोष्ठी आलेख-	दिगम्बर परम्परा में प्रतिपादित सामायिक : स्वरूप एवं प्रयोग	-डॉ. अनिल कुमार जैन	57
महावीर-जयन्ती-	महावीर तेरे शासन के लिए सफल जीवन का सॉफ्टवेयर : महावीर वाणी	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	63
	अहिंसा एवं विश्व शान्ति के अग्रदूत 'महावीर'	-श्री दिलीप गाँधी	66
गीत/कविता-	महावीर को भेंट चढ़ाएँ तुम महावीर स्वयं ही बन जाना	-श्री पदमचन्द गाँधी	67
	रूस-यूक्रेन युद्ध : तीन कविताएँ	-श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	11
	वक्त यूँ ही गुज़र रहा	-सुश्री दिशा जैन	15
विचार/चिन्तन-	एक भारतीय आत्मा की अभिलाषा	-डॉ. रमेश 'मयंक'	30
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री त्रिलोकचन्द जैन	33
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-डॉ. दिलीप धींग	70
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-श्री गौतमचन्द जैन	68
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-संकलित	71
		-संकलित	89
		-विभिन्न लेखक	91

मानसिक स्वास्थ्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

तीर्थङ्कर प्रभु महावीर उच्च कोटि के मनोचिकित्सक थे। उन्होंने आत्म-चिकित्सा और मनोचिकित्सा के अनेक सूत्र प्रतिपादित किए। उनके उपदेशों के आचरण से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तीनों प्रकार के स्वास्थ्य प्राप्त किये जा सकते हैं। शरीर, मन एवं आत्मा इन तीनों की स्वस्थता समग्र स्वास्थ्य की द्योतक है। वस्तुतः स्वस्थ भी उसे कहा जाता है जो स्व में स्थित हो 'स्वस्मिन् स्थितः स्वस्थः' जो बाहर भटकता है, वश में नहीं रहता, ऐसा मन स्वस्थ नहीं है, जो तन विकारग्रस्त है वह भी स्वस्थ नहीं है और जो आत्मा स्व में स्थित नहीं है, वह भी स्वस्थ नहीं है। आयुर्वेद में भी स्वस्थता का लक्षण देते हुए कहा गया है-प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते। जिसकी आत्मा, इन्द्रिय और मन प्रसन्न हैं, वह स्वस्थ कहलाता है।

शरीर का रोग प्रायः हमें अनुभव में आ जाता है और उसके सहस्रां चिकित्सालय भी विद्यमान हैं। एलोपैथी, आयुर्वेद, होम्योपैथी, नेचुरोपैथी आदि अनेक चिकित्सा विधियाँ भी उपलब्ध हैं। किन्तु मानसिक रोग के चिकित्सालय सीमित शहरों में इने-गिने उपलब्ध हैं, और उनमें भी मन को ठीक करने के समुचित साधन नहीं हैं। विभिन्न रसायनों एवं विद्युत् संसाधनों से पुरानी बातों को भुलाने का उपचार किया जाता है अथवा शरीर के रासायनिक तत्त्वों को ठीक किया जाता है, जिसका प्रभाव मन पर भी पड़ता है। प्रभु महावीर द्वारा प्रज्ञप्त धर्म ऐसा साधन है जो मन को आमूल-चूल रूप से स्वस्थ बनाने में सहायक है।

शारीरिक स्वास्थ्य हेतु अनेकविध जाँचें एवं उपकरण हैं, जिनके द्वारा यह ज्ञात हो जाता है कि व्यक्ति के शरीर में कहाँ समस्या है? किन्तु मानसिक स्वास्थ्य

के सम्बन्ध में अभी कोई विशेष उपकरणों का विकास नहीं हुआ, जिससे यह जाना जा सके कि व्यक्ति के मन में या आवेगों में कहाँ समस्या है और किस तरह की समस्या है? हाँ, व्यक्ति को स्वयं यह अनुभव हो जाता है कि उसके चित्त में बेचैनी, हताशा, निराशा, कुण्ठा, हीनभावना, भय, अशान्ति, तनाव आदि हैं। चित्त उद्विग्न है, खिन्न है, हर्षित है, प्रफुल्लित है, अधीर है, व्याकुल है, इस प्रकार का अनुभव होता रहता है। अनेक बार व्यक्ति अपने को मानसिक रूप से स्वस्थ समझता है, किन्तु वह वास्तव में अस्वस्थ होता है।

कुछ मनोरोग जब बृहद् रूप धारण कर लेते हैं तो कहा जाता है कि यह व्यक्ति पागल हो गया है। कभी कुछ बोलना और कभी कुछ बोलना भी मन की अस्वस्थता को व्यक्त करता है। व्यक्ति का अनर्गल प्रलाप भी मानसिक विकृति या मानसिक असन्तुलन को प्रतिबिम्बित करता है। सिजोफ्रेनिया, हिस्टीरिया, डिप्रेशन आदि के रोगी मनोचिकित्सकों के पास पहुँचते हैं। किन्तु इनमें औषधि के माध्यम से डिप्रेशन आदि के कुछ रोगियों को ही लाभ होता है, सबको नहीं। जिस प्रकार शरीर की कुछ असाध्य बीमारियाँ होती हैं, उसी प्रकार मन के भी असाध्य रोग होते हैं, जिनकी चिकित्सा प्रायः सम्भव नहीं है। मानसिक रोग असाध्य न बनें, उसके पहले ही सजग होने की आवश्यकता है। सामान्यतौर पर प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की मानसिक विकृति से ग्रस्त रहता है। कोई व्यर्थ ही चिन्तित रहता है, कोई प्रतिपल भयभीत बना रहता है। कोई शंकालुवृत्ति का बन जाता है, कोई ईर्ष्याग्रस्त रहता है, कोई दूसरों की निंदा-विकथा में लगा रहता है, कोई अपराध प्रवृत्ति से ग्रस्त होता है, कोई अपनी इच्छाओं को नियन्त्रित नहीं रख पाता है, कोई स्वार्थ और परिग्रह

की परिधि से आगे सोचता ही नहीं है। इस तरह के सभी व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य का अनुभव नहीं कर पाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य से आशय मन, बुद्धि और आवेग (Emotion) के सन्तुलन से है, जो मनुष्य के प्रसन्न रहने में सहायक होता है। ऐसा व्यक्ति कभी किसी का अहित करने का चिन्तन नहीं करता। अपना और दूसरों का सब का हित चाहता है, सबके प्रति मैत्री भाव से ओतप्रोत रहता है। गुणीजनों के प्रति उसमें प्रमोदभाव होता है, दुःखी प्राणियों के प्रति वह करुणाभाव से आप्लावित रहता है तथा हर परिस्थिति में अपने को समायोजित करने की सामर्थ्य रखता है। मन से सत् चिन्तन करता है, बुद्धि से सम्यक् निर्णय करता है तथा धैर्यपूर्वक आवेगों को नियन्त्रित रखता है। उसका कार्य करने का सामर्थ्य बढ़ जाता है।

मन यद्यपि पौद्गलिक है, वह पुद्गलों द्वारा निर्मित है, किन्तु भावमन के कारण वह जानने, चिन्तन करने, स्मृति रखने, विचार-विमर्श करने आदि में भी सहयोगी होता है। जब हम बाह्य पदार्थों को इन्द्रियों से जानते हैं तब भी इन्द्रियों के साथ मन का संयोग होना आवश्यक होता है, यदि मन कहीं अन्यत्र संलग्न है तो चक्षुइन्द्रिय से देखते हुए भी सामने उपस्थित वस्तु, व्यक्ति आदि का ज्ञान नहीं होता है, मन कहीं अन्यत्र होता है तो कक्षा में अध्यापक क्या पढ़ा रहा है, उसको छात्र सुन नहीं पाता है। इसलिये इन्द्रियों से जानने में भी मन की भूमिका होती है। आत्मा से मन का और मन से इन्द्रियों का सम्बन्ध होने पर ज्ञान होता है। मन बिना इन्द्रियों के मात्र आत्मा के संयोग से भी जानता है, सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, चिन्ता-भय आदि का ज्ञान मन के द्वारा भी किया जा सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य का धन-सम्पत्ति और सुख-सुविधाओं के साथ कोई व्याप्ति सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि जो परिग्रह के शिकञ्जे में जितना अधिक फँसा हुआ है अथवा जो निर्धन होते हुए भी फँसना चाहता है, वह प्रायः मानसिक रूप से अधिक उद्विग्न, अशान्त और दुःखी देखा जाता है। यह सर्वेक्षण से ज्ञात हो सकता है

कि परिग्रह का परिमाण कर लेने वाला अणुव्रती मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ है या अमर्यादित परिग्रह की दौड़ में शामिल व्यक्ति? हिंसा के विचारों से आक्रान्त, प्रतिशोध की भावना से युक्त, नारी सहित पर का उत्पीड़क व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ है या सबके प्रति सद्भावना एवं सेवा का व्यवहार करने वाला व्यक्ति? सदैव निन्दा-विकथा में लगा रहने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ होता है या उसमें निरर्थक समय व्यतीत न कर सद्गुणों को प्रोत्साहित करने वाला व्यक्ति? सदैव दूसरों में दोष दर्शन करने वाला व्यक्ति मन से स्वस्थ है या अपने को निर्दोष बनाने के लिए सजग रहने वाला व्यक्ति? दूसरों का शोषण करने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ है या दूसरों का दुःख दूर करने वाला व्यक्ति? परस्त्री के प्रति कुदृष्टि रखने वाला अथवा कामान्ध व्यक्ति मन से स्वस्थ है या परस्त्री को मातृवत् एवं भगिनीवत् समझने वाला मानव? अपने को ही श्रेष्ठ समझने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ है या दूसरों को अपने समान समझने वाला मानव? एक गृहस्थ का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है या सन्त का? जिस सन्त के पास कोई परिग्रह नहीं होता, वह एक गृहस्थ की अपेक्षा अधिक प्रसन्न और स्वस्थ होता है, परन्तु वहाँ पर भी कोई ईर्ष्या, द्वेष, हीन भावना, उच्च भावना, आशा, अपेक्षा आदि से आक्रान्त होता है, तो वह भी शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाता है। क्योंकि मन का प्रभाव शरीर पर पड़ता है।

शरीर के अनेक रोग मन की अस्वस्थता के कारण उत्पन्न होते हैं। दूसरी ओर आहार का भी मन एवं चित्त पर प्रभाव पड़ता है। सात्त्विक आहार जहाँ शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए हितकर होता है वहाँ तामसिक आहार शरीर एवं मन दोनों को अस्वस्थ बनाता है। कभी मन की विकृति भी मनुष्य को तामसिक आहार की ओर प्रवृत्त करती है। मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति नशीली वस्तुओं की ओर आकृष्ट होता है और फिर मन एवं स्नायुतन्त्र उसका दास बन जाता है।

मन के कारण मनुष्य भूतकाल एवं भविष्यकाल का भी चिन्तन-मनन करने में समर्थ होता है। वह पदार्थों के गुण-दोषों को जान सकता है, वह कल्पना करने में कुशल हो सकता है, वह स्वप्न संजो सकता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने 'साइकोएनालिसिस' नामक पुस्तक में स्वप्नों का विश्लेषण करके मनुष्य की मानसिक अवस्था का चित्रण किया है। मन और चित्त शब्दों का प्रयोग पर्यायवाची शब्दों के रूप में भी हुआ है। अतः यहाँ मानसिक स्वास्थ्य में चित्त की स्वस्थता को भी समाविष्ट समझना चाहिए।

आचाराङ्गसूत्र में कहा गया है- 'अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे' यह मनुष्य अनेक चित्त वाला है। इसका मन बदलता रहता है, कभी कुछ सोचता है और कभी कुछ। कभी स्वादिष्ट भोजन खाने को मन करता है तो कभी दर्शनीय स्थानों के भ्रमण के लिए मन करता है, कभी होटल में जाने का मन करता है तो कभी सन्तों के यहाँ जाने का मन करता है। यह चञ्चल है, एक स्थान पर टिकता नहीं, क्योंकि यह अपने नियन्त्रण में नहीं है अर्थात् स्वस्थ नहीं है। इसके स्वस्थ होने पर इसे जहाँ ले जाया जायेगा वहाँ यह जायेगा। इसमें जो ग्रन्थियाँ या विकार विद्यमान हैं उनका विरेचन करने की आवश्यकता है। उस समय समता में रहने की जरूरत है। समता में रहने पर विकार दूर होकर मन स्वस्थ हो जाता है। भगवान महावीर ने मन की चिकित्सा करने के लिए समता को उपाय बताया है। यह मन को वश में करने का भी उपाय है और उसे स्वस्थ करने का भी। मन को दुश्चिन्तन से हटाकर सच्चिन्तन में लगाया जाए तो भी मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त हो सकता है।

प्रभु महावीर ने इसके लिए मनसमाधारणता, मनःसुप्रणिधान तथा मनोगुप्ति के सूत्र दिए हैं। मन को एकाग्र करना मनसमाधारणता है। उसे सच्चिन्तन में लगाना मनःसुप्रणिधान है तथा अशुभ चिन्तन से निवारित करना मनोगुप्ति है। इसे स्वाध्याय और ध्यान में लगाना भी मानसिक स्वास्थ्य के उपाय हैं। कहीं माला, जाप आदि भी मन को स्वस्थ रखने में साधन बनते हैं। मन को स्वस्थ रखने का अचूक उपाय है सभी प्राणियों

के प्रति मैत्री भाव-मिर्त्ति भूएसु कप्पए। इसके साथ ही क्षमाभाव भी चित्त को स्वस्थ करता है। हमारी अधिकांश ग्रन्थियाँ क्षमा धारण नहीं रखने से उत्पन्न होती हैं। अपनी भूल को स्वीकार कर, उसकी समालोचना कर मिच्छा मि दुक्कडं देने रूप प्रतिक्रमण करना भी मानसिक स्वास्थ्य का सुन्दर उपाय है। की हुई भूल को पुनः न दोहराने का संकल्प प्रत्याख्यान है। यह भी एक सुन्दर उपाय है जिसके द्वारा नई मानसिक विकृतियों को उत्पन्न होने से रोका जा सकता है। हिंसा का अल्पीकरण, सत्यवादिता और ईमानदारी मनुष्य को निर्भय एवं तनाव रहित बनाती है।

अपने से अधिक दूसरों की सुख-सुविधा का ध्यान रखना, दूसरे प्राणियों को अपने समान समझना, आत्मीयता का विस्तार करना भी मानसिक स्वास्थ्य का साधन है। आगमों में आत्मवद्भाव का स्थान-स्थान पर प्रतिपादन किया गया है। सूत्रकृताङ्गसूत्र में भी कहा गया है-आयतुले पयासु सभी प्राणियों को अपने समान समझें। अनित्य, अशरण आदि 12 भावनाओं का चिन्तन भी मानव को निर्द्वन्द्व, अनुद्विग्न एवं स्वस्थ बनाने में साधन बनता है। आसक्ति भाव का त्याग करते ही मन की स्वस्थता का अनुभव होता है। अनेकान्त दृष्टि का प्रयोग कर आग्रह बुद्धि का त्याग करने से भी मानसिक स्वास्थ्य अधिगत होता है। आर्त एवं रौद्रध्यान का परित्याग तथा धर्मध्यान का आराधन चित्त को स्वस्थ बनाता है, जो साधक को शुक्लध्यान की ओर ले जाता है। प्रभु की स्तुति भी चित्त को स्वस्थ बनाने में सहायक है। सेवा और दान की प्रवृत्तियाँ भी मानसिक बोझ को हल्का करती हैं तथा भीतरी प्रसन्नता का अनुभव कराती हैं। प्रज्ञा के प्रकटीकरण से मानसिक स्वास्थ्य पूर्णता को प्राप्त होता है। जिसमें क्रोध आदि कषायों का अभाव होता है, वह मानसिक रूप से स्वस्थ है। वह निर्भय, क्षमाशील, उदार, प्रज्ञाशील एवं सम्यक् सोच से युक्त होता है। प्रभु महावीर के द्वारा निरूपित आध्यात्मिक सूत्र मानसिक स्वस्थता का अनुभव कराते हैं। इसलिए प्रभु महावीर का उपदेश हम सबके लिए उपादेय है।

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द्र जैन

जीवा णं भंते! किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा?

गोयमा! अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, नो अनारंभा। अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा।

-व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, शतक 1, उद्देशक 1, 7.1

अर्थ—हे भगवन्! क्या जीव आत्मारम्भी हैं, परारम्भी हैं, तदुभयारम्भी हैं अथवा अनारम्भी हैं?

हे गौतम! कुछ जीव आत्मारम्भी भी हैं, परारम्भी भी हैं, तदुभयारम्भी भी हैं, किन्तु अनारम्भी नहीं हैं। कुछ जीव आत्मारम्भी नहीं है, परारम्भी नहीं हैं, तदुभयारम्भी भी नहीं हैं, किन्तु अनारम्भी हैं।

विवेचन—व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र में गौतम गणधर के द्वारा पूछा गया प्रश्न तो महत्त्वपूर्ण है ही, भगवान महावीर के द्वारा दिया गया उत्तर भी अत्यन्त स्पष्ट एवं मार्गदर्शक है। इस प्रश्नोत्तर की शृङ्खला आगे भी चली है। जिसमें स्पष्ट किया गया है कि संसार में जीव दो प्रकार के हैं—संसार समापन्नक और असंसार समापन्नक। जो संसारी जीव हैं, वे संसार समापन्नक हैं तथा सिद्ध जीव असंसार समापन्नक हैं। सिद्ध जीव आठ कर्मों से मुक्त हैं अतः वे किसी प्रकार का आरम्भ नहीं करते, न दूसरों से आरम्भ करवाते हैं और न ही तदुभयारम्भी हैं। वे तो पूर्णतः अनारम्भी हैं। यहाँ आरम्भ का तात्पर्य मात्र हिंसा नहीं है। आगम में अनेक स्थानों पर जब आरम्भ और परिग्रह शब्द प्रयुक्त हुए हैं तो आरम्भ का अर्थ हिंसा किया जाता है। हिंसा के साथ यहाँ आस्रव के जितने कारण हैं उन सबका समावेश किया जा सकता है। अतः यहाँ आरम्भ शब्द आस्रव का द्योतक माना गया है। परन्तु सिद्ध आस्रव रहित होने के कारण पूर्णतः अनारम्भी होते हैं।

जो संसार समापन्नक जीव हैं, वे दो प्रकार के हैं—(1) संयत और (2) असंयत। संयत अर्थात् संयमी जीव भी पुनः दो प्रकार के होते हैं—(1) प्रमत्त संयत और (2) अप्रमत्त संयत। इनमें जो अप्रमत्त संयत हैं, वे भी सिद्धों की भाँति अनारम्भी होते हैं। न वे आत्मारम्भी होते हैं, न वे परारम्भी होते हैं और न ही तदुभयारम्भी। जो प्रमत्त संयत छोटे गुणस्थावर्ती जीव होते हैं, वे शुभयोग से युक्त होने पर आत्मारम्भ, परारम्भ और तदुभयारम्भ से रहित होते हैं अर्थात् अनारम्भी होते हैं।

यहाँ शुभयोग का महत्त्व ज्ञात होता है। जो प्रमत्त संयत जीव अशुभयोग से युक्त होते हैं, वे आत्मारम्भी भी होते हैं, परारम्भी भी होते हैं, तदुभयारम्भी भी होते हैं, किन्तु अनारम्भी नहीं होते। जो असंयत जीव होते हैं, वे अविरति के कारण आत्मारम्भी, परारम्भी और तदुभयारम्भी होते हैं, किन्तु अनारम्भी नहीं होते।

यहाँ पर ज्ञातव्य है कि स्वयं आस्रव में प्रवृत्त होना आत्मारम्भ है, दूसरे को आस्रव में प्रवृत्त करना परारम्भ है तथा इन दोनों से युक्त होना तदुभयारम्भ है। ज्ञान, दर्शन के उपयोगपूर्वक स्वाध्याय, प्रतिलेखना आदि प्रवृत्ति करना एवं जीवन जीना अनारम्भ है। ज्ञानोपयोगपूर्वक योग की प्रवृत्ति शुभयोग है तथा प्रमादपूर्वक की जाने वाली मन-वचन-काया की प्रवृत्ति अशुभयोग है।

यहाँ पर प्रश्न हो सकता है कि अप्रमत्त संयत के शुभयोग होने पर भी कर्मों का बन्धन तो चालू रहता है, क्योंकि उनके कषाय शेष हैं और बिना आस्रव के कर्मबन्ध नहीं होता। तो इस प्रसङ्ग में कहना होगा कि अप्रमत्त संयत इतना जागरूक होता है कि नया आस्रव उस समय नहीं होता है। अप्रमत्तता का काल अन्तर्मुहूर्त का होता है। इसमें साधक पूर्ण जागरूक होता है, अतः वह पापास्रव से पूर्णतः विरत हो जाता है। पापों से विरत

होना ही अनारम्भी होना है। इस तथ्य को स्वीकार करने पर अप्रमत्तसंयत के अनारम्भी होने में कोई बाधा नहीं होती। इसी प्रकार जो प्रमत्तसंयत शुभयोगी होता है, वह भी पाप के आस्रव से विरत होने के कारण अनारम्भी होता है।

जो असंयत होता है उसको आगमकार ने आत्मारम्भी, परारम्भी एवं तदुभयारम्भी कहा है। यहाँ पर यह ज्ञातव्य है कि श्रावक पापों से पूर्णतः विरत तो नहीं होता, किन्तु आंशिक रूप से विरत होता है, इसलिये उसे देशविरत कहा गया है। वह भी यदि शुभयोग में हो तो पापास्रव से आंशिक रूप में विरत अवश्य होता है। वह अनारम्भी अवस्था को तो प्राप्त नहीं होता, किन्तु अल्पारम्भिता को प्राप्त हो जाता है। आत्मारम्भी, परारम्भी और तदुभयारम्भी होने की

अपेक्षा उसमें अल्पता होना भी श्रेष्ठ है।

यह शुभयोग ही उसे पञ्चमहाव्रतधारी अप्रमत्तसंयत बनने की ओर भी अग्रसर करता है। इसलिये शुभयोग का होना अत्यन्त लाभकारी है। उत्तराध्ययनसूत्र में कहा गया है कि प्रशस्तयोग को प्राप्त अनगार अनन्त घाती कर्मों का क्षय करता है—पसत्थजोगडिवन्ने य णं अणगारे अणंतघाइपज्जवे खवेइ। (उत्तराध्ययनसूत्र 29.7) अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि शुभयोगी श्रावक भी कुछ अंशों में उन कर्मों का क्षय करता ही होगा। मिथ्यात्वी जीव भी शुभयोग के माध्यम से ही आरम्भादि में कमी कर पाते हैं। इसलिए शुभयोग आत्मिक विकास का प्रारम्भिक द्वार कहा जा सकता है।

महावीर को भेंट चढ़ाएँ

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

चैत्र शुक्ला तेरस दिन आये
भगवान महावीर का जन्म दिवस मनायें
कैसे मनायें? कैसे मनायें?
उनके सिद्धान्तों पर चल मनायें

रूस-यूक्रेन का झगड़ा मिटवाएँ
सुख-शान्ति का सरगम बजायें

विश्व युद्ध की सम्भावना टालें
अहिंसा सत्य का झण्डा फहरायें
सुलझा हुआ व्यक्ति बनायें
झूठ-कपट-छल-प्रपञ्च से मुँह मोड़ें

चोरी करने से दुःख पाते
लोगों में हँसी कराते
ऐसे भावों से छुटकारा पायें

सुख की नींद का आनन्द लेवें

संयम से शुद्ध जीवन बितायें
जात-पाँत से छुटकारा पायें
संयम से मोक्ष-मार्ग बनायें
धन्य-धन्य हम सब हो जायें

परिग्रह से पीछा छोड़ाएँ
भौतिक वस्तुओं से ममत्व हटाएँ
धर्म-ध्यान में जीवन लगाएँ
कर्मों की निर्जरा कर लेवें

देश-विदेश 'औ' घर-घर
सिद्धान्त-रूपी दीप जलाएँ
चारों दिशाओं में सत्पथ की ज्योति जगाएँ
भगवान को हमारी श्रद्धा भेंट चढ़ाएँ

भगवान महावीर स्वामी को शत-शत नमन

-ई 123, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

साधना के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- ❧ तन और वाणी से तो क्रिया होती रहे और मन कहीं अन्यत्र भटकता रहे, उसे द्रव्य-क्रिया समझिए।
- ❧ उजाला भय मिटाता है और अन्धेरा भय फैलाता है। इसी प्रकार ज्ञान से भय मिटता है और अज्ञान से भय बढ़ता है।
- ❧ व्रत रखते हुए भी प्रमाद नहीं छोड़ा तो पाप का मूल छूटेगा नहीं।
- ❧ बन्धन वाला जब तक बन्धन-मुक्त को लक्ष्य में नहीं लेगा, तब तक बन्धन-मुक्त नहीं हो सकेगा।
- ❧ जो मूक भावदाता होते हैं, वे चुपचाप शान्त और त्यागमय जीवन से, शान्त मुखमुद्रा से, अपनी चर्या से, बिना बोले आगन्तुक व्यक्ति को शान्ति का रस देते हैं।
- ❧ पहले-पहल विचार-शुद्धि होनी चाहिए और उसके बाद दूसरे नम्बर पर आचार-शुद्धि होनी चाहिए।
- ❧ कर्म को काटना है तो उसका रास्ता-श्रुतधर्म और चारित्रधर्म को अपनाना है।
- ❧ श्रुतधर्म से विचार शुद्धि होती है और आचार धर्म से चारित्र शुद्धि।
- ❧ वाणी का संयम, तन का संयम, मन का संयम ही हमारी आत्मशुद्धि में सहायक होता है।
- ❧ जहाँ भौतिक लाभ होता है, वहाँ संगठन आसानी से हो जाता है, लेकिन धार्मिक संगठन मुश्किल से होता है। वैसा संगठन करने में देर लगती है।
- ❧ मिथ्या विचार और मिथ्या आचार बन्ध के हेतु हैं।
- ❧ हमारी मनःस्थिति में, राग और द्वेष के रूप में जो चिन्तन चलता है, परिणामन होता है, वह विकार है और वही बन्ध का कारण है।
- ❧ तन योग से, मनोयोग से और वाणीयोग से सामायिक की साधना की जाए तो अनन्त-अनन्त अशुभ कर्म समाप्त हो सकते हैं।
- ❧ आर्त्त-रौद्र ध्यान को छोड़कर जो धर्मध्यान में लीन होता है और एक मुहूर्त्त का समय सामायिक या धर्मध्यान के चिन्तन में लगाता है, वह कल्याण को प्राप्त होता है।
- ❧ सामायिक-व्रत एक दर्पण है। यदि धर्मध्यान की ओर अग्रसर होना है तो यह जरूरी आलम्बन है।
- ❧ मन को मजबूत करने के लिए संकल्प आवश्यक है। बिना संकल्प के करणी नहीं होगी और बिना करणी के कर्म नहीं कटेंगे।
- ❧ उचित एवं हितकर मानकर भी मन स्थिर नहीं रहता, यह साधना का बड़ा विघ्न है।
- ❧ धर्मप्रेमी श्रावक अपने गाँव में बालक-बालिकाओं को धर्म तथा निर्व्यसनता की ओर प्रेरित करें तो बड़े लाभ का कारण है।
- ❧ मानव जब तक मिथ्या विचार और मिथ्या आचार में रहता है तब तक अपनी आदत में, विश्वास में गलत धारणाएँ रखता है। वह धर्म के बारे में गलत मानता है, गलत सोचता है और गलत बोलता है।
- ❧ सम्यक् विचार और आचार बन्धन काटने के साधन हैं।
- ❧ चाय एक तरह का व्यसन है। यह खून को सुखाने वाली, नींद को बाधित करने वाली और भूख को कम करने वाली है।
- ❧ प्रभु की प्रार्थना साधना का ऐसा अङ्ग है जो किसी भी साधक के लिए कष्ट सेव्य नहीं है। प्रत्येक साधक, जिसके हृदय में परमात्मा के प्रति गहरा अनुराग हो, प्रार्थना कर सकता है।

संघ एवं समाज में परस्पर सहयोग जरूरी

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने कल्पतरु गार्डन-कांदिवली, मुम्बई में 20 सितम्बर, 2008 को जो प्रवचन फरमाया, उसका आशुलेखन सह-सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता ने किया है। -सम्पादक

सर्वज्ञ-सर्वदर्शी तीर्थङ्कर भगवन्तों के चरणों में वन्दन एवं सर्वज्ञता पाने के लिए दोषों का निकन्दन कर गुणवर्धन की प्रेरणा करने वाले सन्त-भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि नमन!

तीर्थङ्कर भगवान महावीर ने अपनी अन्तिम देशना उत्तराध्ययनसूत्र के मोक्षमार्ग अध्ययन में द्रव्यों के असाधारण गुणों का वर्णन करते हुए, छह द्रव्यों का विवेचन किया है। उन छह द्रव्यों में धर्मास्तिकाय का चलने में उपकार है, तो अधर्मास्तिकाय द्रव्य ठहरने में सहयोग करता है। आकाशास्तिकाय अवगाहना देने में अवलम्बन बनता है तो जीव द्रव्य का असाधारण गुण 'परस्परपग्रहो जीवानाम्' सूत्र के अनुसार एक-दूसरे का सहयोगी बनकर एक-दूसरे का उपकारी बनना बताया गया है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह बिना सहयोग के अपने जीवन को नहीं चला सकता। उसके शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति, चाहे वह रहने की हो या खाने की, पहनने-ओढ़ने की और दूसरी जो भी जरूरते हैं, उनकी पूर्ति के लिए सहयोग लेना ही पड़ता है। परिवार, समाज, प्रान्त और देश का मूल आधार सहयोग है। बिना सहयोग के न घर चल सकता है, न समाज।

सहयोग कैसा हो? अभी तत्त्वचिन्तक मुनिश्री द्वारा परस्पर सहयोग के माध्यम से संघ-समाज की अपेक्षाओं की बात रखी गई। कई संघ सदस्यों ने नियम लिया कि हम रात्रि-भोजन नहीं करेंगे, सामूहिक भोज में जर्मीकन्द का उपयोग नहीं करेंगे। एक भाई ने कहा- महाराज! ये नियम पहले भी लिए थे, आज भी ले रहे हैं, परन्तु समाज में इन नियमों की पालना नहीं हो रही है। समाज के मुखिया ही नियमों की उपेक्षा करते हैं। कारण

क्या? कारण है संघ-समाज के लिए सोचने वाले पुराने मुखिया या तो रहे नहीं अथवा उनकी बात विस्मृत की जा रही है।

सेठ मोहनमलजी चोरड़िया ने अपनी हवेली में चिकित्सा-शिक्षा का काम शुरू किया, धर्म-साधना के लिए कई भवनों का निर्माण करवाया। चोरड़ियाजी की तरह बैंगलोर के सेठ छगनमलजी मूथा का नाम सुना जाता है। आज कइयों के पास आठ-आठ, दस-दस बंगले हैं, उनके पास पर्याप्त जमीनें भी हैं, पर समाज के लिए उनका क्या उपयोग? उनकी सोच अपनी सुख-सुविधा के साथ परिवार तक सीमित है। समाज के प्रति जिम्मेदारी का न निर्वहन है और न ही सोच।

आज अन्य-अन्य समाजों में धर्मशालाएँ हैं, अतिथिगृह हैं, सामाजिक भवन भी हैं। आपको हर जात, हर न्यात की सराय-धर्मशाला मिल जायेगी। अग्रवालों की, माहेश्वरियों की तो है ही, नाई-दर्जी, जाट-मालियों की भी धर्मशालाएँ हैं, पर ओसवालों की कितनी हैं? कहाँ-कहाँ हैं? संघ या समाज के स्थान होने पर नियमों की पालना होना सहज है। मैंने सुना है कि बैंगलोर के समाज-भवन जर्मीकन्द का प्रयोग करने वालों को नहीं दिए जाते हैं यह तो अच्छा है, किन्तु कभी किन्हीं सन्त-मुनिराजों का पधारना हो तो संघ के लोग आगे होकर कह देते हैं कि अभी तीन दिन के लिए स्थानक दूसरों को दिया हुआ है। मैं इस बात को विस्तार से नहीं कहता, क्योंकि आप खुद अपनी स्थिति जानते हैं, परन्तु यह विचारणीय है।

आप यह भी जानते हैं कि 'घर के बिना दर नहीं।' हर व्यक्ति अपने रहने का घर बनाता है, पर समाज के

लिए कौन सोचे? सोचना किनका काम है? संघ-समाज का काम परस्पर सहयोग से होता है, इसलिए समाज में और समाज के भवनों में समाज-नियम हों और जरूर हों।

आपमें से कई लोगों ने प्रतिज्ञा ली है। आप ओसवाल-भूपाल हैं, आपका खान-पान शुद्ध होना चाहिए। आप और आपके बच्चे-बच्चियाँ मांसाहारी होटलों में जायेंगे तो और लोग उन्हें अंगुली निर्देश तो नहीं करेंगे? शराब की दुकान पर आप भले ही खड़े-खड़े दूध पीते हों, तो लोग यही समझेंगे कि अमुक सेठजी का बच्चा शराब की दुकान पर कुछ पी रहा था। आप मांसाहारी होटलों में जाकर भले ही शाकाहारी भोजन करके आए हैं, पर लोगों के मन में तो सन्देह रहेगा ही। मांसाहारी होटलों में बर्तन अलग-अलग भी शायद नहीं होते।

संघ-समाज का दायित्व है कि वह व्यक्ति की मर्यादा और प्रतिज्ञा में सहयोगी बने। हर व्यक्ति सहयोग का वातावरण बनाने में पहल करे तो निश्चित रूप से समाज में सुधार का सूत्रपात शुरू होगा। आपको ही नहीं, आपके बच्चे-बच्चियों को भी इस दिशा में विचार-चिन्तन करना होगा। क्यों? तो व्यक्ति एक-दूसरे का सहयोगी बनेगा तो ही व्यक्ति के साथ समाज-धर्म पुष्ट होगा।

आप जानते हैं-सहयोग के बिना कुछ भी सम्भव नहीं होता। व्यक्ति को घर-परिवार के साथ संघ-समाज का सहयोग भी करना चाहिए। यह जरूरी है, क्यों? तो जीव का एक-दूसरे पर उपकार है और बिना सहयोग के वह पूरा नहीं होता। सहयोग के बिना न व्यक्तिगत जीवन और न ही आध्यात्मिक जीवन का उत्थान सम्भव है। जीवन चाहे गृहस्थ का हो या साधक का, वह बिना सहयोग के कभी ऊँचा नहीं उठ सकता। अभी तत्त्वचिन्तक मुनि श्री ने कहा-साधु का सहयोग श्रावक करता है और श्रावक का साधु। दोनों एक-दूसरे के सहयोगी हैं, सहयोग बना रहना चाहिए।

परिवार में सहयोग जरूरी है तो संघ-समाज में तो सहयोग नितान्त आवश्यक है। संघ-समाज विशाल होता है। विशालता के कारण प्रभावना के लिए कार्यकर्ताओं का भी अधिक सहयोग आवश्यक होता है। कार्यकर्ता व्यवस्था जमाते हैं तो कभी-कभी कुछ कमी भी रह सकती है। पर ज्यों ही कमी का अनुभव होता है तो कुछ आवाजें उठती हैं- हमें कार्यकर्ता बदलने चाहिए। कार्यकर्ताओं की टीम में परिवर्तन किया जाना चाहिए।

संघ-समाज में सबको साथ लेकर चलना होता है। परिवार में भी सब सदस्य एक जैसे नहीं हो सकते। एक भाग्यशाली है तो कोई एक उद्योग-धन्धे में माहिर। कोई मन्द-बुद्धि वाला है तो किसी में कुछ भी करने की क्षमता नहीं। परिवार में जब एक-दूसरे की तुलना नहीं की जा सकती तो संघ-समाज में यह कैसे सम्भव है? परिवार में जन्म लेने वाला कैसा बनेगा, यह किसी के हाथ की बात नहीं है। जब परिवार में सबको साथ लेकर चलना होता है तो फिर संघ-समाज में तो परस्पर सहयोग की और अधिक आवश्यकता है और रहेगी। एक-दूसरे की एक-दूसरे से न तुलना की जा सकती है और न ही सब एक जैसे हो सकते हैं।

परस्पर सहयोग की बात शरीर से समझी जा सकती है। यदि किसी का मस्तिष्क कमजोर है तो व्यक्ति का जीवन श्रेष्ठ नहीं बन पाता। कान सुनते हैं, आँखें देखती हैं, मुँह खाता है, हाथ-पैर अपना-अपना काम करते हैं, पर जिसका मस्तिष्क ढीला है, कमजोर है तो...? पैर जमीन पर चलते हैं। चलते-चलते कभी पैर में काँटा लग जाय तो शरीर के सभी अङ्ग काँटा निकालने की प्रक्रिया में सहयोग करते हैं।

संघ-समाज में एक-दूसरे का सहयोग हो, विश्वास हो, तो ही संघ या समाज आगे बढ़ सकता है। संघ-समाज में किसी की उपेक्षा नहीं करें और न ही एक-दूसरे की, एक-दूसरे से तुलना करें। क्यों? तो सबका क्षयोपशम एक जैसा नहीं होता। किसी के प्रति

हीन भावना नहीं चाहिए। सब कर्तव्य का पालन करें तो स्वतः प्रभावना होती जाएगी। हम सब मिलकर प्रयास करें तो संघोन्नति में सब अपना-अपना योगदान करने हेतु आगे आएँगे।

संघ-समाज में हजारों लोग हैं। सन्त सीमित संख्या वाले हैं। एक-एक गाँव में अनेक घर हैं, एक-एक घर में कई-कई सदस्य हैं। जरूरत है एक-एक व्यक्ति सम्भले, एक-एक परिवार आगे आए, एक-एक

संघ-सदस्य संघोन्नति में सक्रिय सहयोग करे तो संघ-दीप्ति में चार चाँद लगेंगे ही, संघ का वर्चस्व और प्रभाव सबको स्वतः दिखेगा और संघ का हर एक सदस्य सहयोग करने को तत्पर होगा तो फिर सुधार की प्रक्रिया के लिए पुनः पुनः कहने की जरूरत नहीं रहेगी।

आप सब संघ-समाज के हितचिन्तन में, संघ-सेवा में और संघ-दीप्ति में सक्रिय-सजग बनें, यही अपेक्षा है।

तुम महावीर स्वयं ही बन जाना

सुश्री दिशा जैव

तीर्थङ्कर सी चर्या, संयम की अभिव्यक्ति बन जाना।
हे मुमुक्षु! तुम महावीर स्वयं ही बन जाना॥

समस्त कर्मों-संस्कारों से, अलगाव का प्रयास हो,
त्याग बाह्य-आभ्यन्तर की, संयम में सुवास हो।
सदा उज्ज्वल मार्ग का, उज्ज्वल तारा बन जाना,
हे मुमुक्षु! तुम....॥1॥

फकीरी में अनन्त सुखों को, प्रत्यक्ष दिखा देना,
और समता को तुम, अपना उपनाम बना लेना।
प्रवृत्ति-निवृत्ति की निर्दोष पालना से, अदोष बन जाना,
हे मुमुक्षु! तुम....॥2॥

संयम की सीमा में रहकर भी, अनन्त का आभास हो,
एकान्त साधना हो और, अनेकान्त में विश्वास हो।
गुरु शरण में समर्पित हो, सर्वज्ञ तुम बन जाना,
हे मुमुक्षु! तुम....॥3॥

तूफान वेग तेज हो या, मस्त पवन बहार हो,
सुलगती अग्नि अङ्गार हो या, शीतल जल की फुहार हो।
प्रतिकूलता-अनुकूलता में, आत्मभावों में रम जाना,
हे मुमुक्षु! तुम....॥4॥

शुद्ध, विशुद्ध, अविचार सी, पूर्णता पाना है,

प्रवचन माँ की गोद पा, अब अमरत्व जगाना है।
अदृश्य प्रकाश का दर्शन हो, गुणश्रेणी चढ़ जाना,
हे मुमुक्षु! तुम....॥5॥

आगे राह हो धुन्धली, फिर भी हर कदम बढ़ाना है,
बीत गया सो बीत गया, पीछे रहा हुआ भुलाना है।
अब कदम जो उठ गए हैं, मञ्जिल तक है जाना,
हे मुमुक्षु! तुम....॥6॥

ऋजुता मृदुता और लघुता का, पान करते जाना है,
'क्षमा वीरस्य भूषणम्' का, हार पहनते जाना है।
साहस और निर्भयता की, परिभाषा बन जाना,
हे मुमुक्षु! तुम....॥7॥

'गज गुरु' ने तपाई जो भूमि हो,
उसका नवीन रत्न बन जाना।
'गुरु हीरा' की महिमा जिसने गाई हो,
उस लोक की गूँज बन जाना॥

'महेन्द्र गुरु' के ज्ञान-विनय से सम्मानित शासन है,
उस शासन की ज्योति बन जाना,
'मान गुरु' ने साधना जहाँ सिखाई हो,
उस शोध-शाला का दृढ़ स्तम्भ बन जाना॥
हे मुमुक्षु! तुम....॥

-सुपुत्री डॉ. राजीवजी जैव, 1344 बी,
श्री नाथपुरम्, कोटा (राज.)

समत्व की साधना : सामायिक (2)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा 25-26 सितम्बर, 2021 को मानसरोवर-जयपुर चातुर्मास में आयोजित विद्वत् संगोष्ठी में फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्री गौतमचन्द्रजी जैन (पूर्व डी.एस.ओ.), जयपुर ने किया है।

-सम्पादक

(गताङ्क से आगे)

(2) आत्मसंयम

आत्मसंयम का अर्थ है भोग-बुद्धि का परिहार, आसक्ति और ममत्व भाव से उपरत होना, अहंत्व और ममत्व से मुक्ति। जो-जो अनुकूल साधन, सुविधाएँ और सामग्री प्राप्त हुई हैं, उनमें तीन सूत्रों के आधार पर चिन्तन करें—(i) सुखाभास, (ii) अनित्य बोध और (iii) उदारता।

(i) सुखाभास—ये जितने भी जड़ पदार्थ हैं, उनमें से एक में भी सुख देने की शक्ति नहीं है। जो स्वयं नश्वर हैं, चञ्चल हैं, अस्थिर हैं, मिटने और छूटने वाले हैं, भला वे कैसे सुख दे सकते हैं? यदि पदार्थ में सुख देने की शक्ति होती तो देखा जाता है कि वही पदार्थ एक व्यक्ति के लिए दुःख का कारण और दूसरे के लिए सुख का कारण बन जाता है। जैसे कि आम का फल एक के लिए रसप्रद और दूसरे के लिए रोग का कारण बन जाता है। कई बार ऐसा भी होता है कि एक ही पदार्थ का निरन्तर भोग भी दुःख का कारण बन जाता है। वह सुख सुख नहीं है, जिसमें दुःख छुपा हुआ हो। इसलिये ज्ञानीजन फरमाते हैं कि ये सुख भोग 'खणमित्त सुखा, बहुकाल दुखा।' अर्थात् इन जड़ पदार्थों का उपभोग इस भव, परभव और भव-भव के लिए दुःखदायी है। कारण कि इनके उपभोग से आसक्ति और अहं पलता है। हिंसा, झूठ आदि पाप होते ही हैं और इन पापाम्रवों से जीव की आत्मा दूषित होती है, मलिन होती है, कर्मभार से बोझिल होती है। परिणामस्वरूप यह जीवात्मा दुर्गति दर दुर्गति में दुःख उठाते हुए भटकने के लिए मजबूर हो जाता है। यहाँ पर यह समझना होगा कि

ये भोग सामग्रियाँ मृग-मरीचिका से कम नहीं हैं। बेचारे मृग को रेगिस्तान में सूर्य की किरणों से चमकते रेतीले कणों में पानी का आभास होता है और वह दौड़कर वहाँ पहुँचता है, परन्तु वहाँ पर उसे पानी नहीं मिलता। तब वहीं से दृष्टि उठाकर देखता है तो उसे फिर कुछ दूर पानी का दृश्य भासमान होता है, परन्तु वहाँ पहुँचने पर भी उसे पानी नहीं मिलता। इस प्रकार से मृग दौड़-दौड़कर जीवन को समाप्त कर देता है और अन्त में प्यासा ही रह जाता है। ठीक इसी प्रकार से संसारी प्राणी भी आसक्ति और अज्ञानता के सहारे भोग में सुख खोजते-खोजते हर जन्म में अतृप्त ही रहा, हर जन्म में दुःखी का दुःखी ही रहा। क्या कभी पसीने से तरबतर व्यक्ति धूप में खड़ा होकर पसीना सुखा सकता है? कभी नहीं। बस, इसी तरह इन नश्वर पदार्थों से तीन काल में भी कभी न सच्चा सुख मिला है और न मिलेगा। सच्चा सुख तो त्याग में है, अन्तर्मुखी चेतना के जागरण में है। यही सामायिक का सन्देश है।

जिस सांसारिक सुख में व्यक्ति सुख मानने की कल्पना कर रहा है, वह अपने आप में मिथ्यात्व है। किसी ने ठीक ही कहा—भोग में सुख की कल्पना करना मिथ्यात्व है। क्योंकि भौतिक जगत् का सुख पराधीन होता है, विनाशी होता है, अतृप्तिदायक होता है, परिवर्तनशील होता है और सुख में दुःख की कड़ी जुड़ी हुई रहती है अर्थात् संसार का सुख, दुःख प्रदाता है। संसार का सुख पापवर्द्धक है, दुर्गतिकारक है। अनुभवियों ने कहा—

चढ़ उचुंग जासे पतन, शिखर नहीं वह कूप है।
जिस सुख में दुःख बसे, वो सुख भी दुःख रूप है॥

बड़े ही उत्साह और उमङ्ग से नई गाड़ी लेकर आये, परन्तु प्रथम दिन की प्रसन्नता तीन-चार साल बाद नहीं रह पाती है। मनपसन्द मिठाई का प्रथम आस्वाद जितना आनन्द देता है, क्या निरन्तर खाते रहने पर भी आनन्द रह पाता है, नहीं। साररूप में यही कह सकते हैं कि सांसारिक सुख में ताकत ही नहीं कि वह सातत्य रख पाये, निरन्तरता टिका पाये। इस सांसारिक सुख को भोगने के लिए वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति को बदलना ही होता है।

(ii) अनित्य बोध-आत्मसंयम के लिए दूसरा चिन्तन सूत्र अनित्यता का बोध जरूरी है। अनित्यता का अर्थ है, जो कुछ भी प्राप्त है, दृश्यमान है, वह छूटेगा, मिटेगा, बिछुड़ेगा, चाहे वह तन हो, धन हो, परिजन हो या भोग्य पदार्थ हों। इस तरह आना-जाना, मिलना-बिछुड़ना, सुख-दुःख चलते रहते हैं, ये सब प्रकृति के नियम हैं। उत्पत्ति और विनाश तो सृष्टि का क्रम है। जगत् की अनित्यता को पहचान कर अपनी आत्मा की नित्यता को पहचानने का प्रयास करें। जो नश्वर है, उसके मोह-व्यामोह से मुक्त बनें और जो अविनाशी तत्त्व है, उसका अनुराग करें, सन्मान करें। अनित्यता के बोध से चार लाभ प्राप्त होते हैं-1. आसक्ति छूटती है, 2. अहंकार मिटता है, 3. आकुलता दूर होती है और 4. समता का विकास होता है। अब देखिये जहाँ-जहाँ आसक्ति है, वहाँ-वहाँ स्थायित्व का, नित्यता का भाव जुड़ जाता है। उस लगाव से हमारी यह धारणा पुष्ट हो जाती है कि यह पदार्थ मेरे साथ रहेगा। जरा समझें-भले ही आप फाइव स्टार होटल में ठहरे होंगे, पर उसके छोड़ने में आपको दुःख नहीं होता और उसकी टूट-फूट में भी दुःख नहीं होता, क्योंकि उसमें आसक्ति के अभाव के कारण स्थायित्व का भाव नहीं होता है। मगर जिस मकान में हम रहते हैं, वहाँ आसक्ति होती है और आसक्ति के कारण स्थायित्व का भाव होता है। परिणामस्वरूप उसके छूटने का, टूटने-फूटने का, गिरने का बड़ा दुःख होता है। क्योंकि उसमें मेरापन है, स्थायित्व का भाव है और सङ्गीभाव है। यह एक

अनुभवगम्य बात है कि जहाँ-जहाँ जिस-जिस में आसक्ति जुड़ी है, वहाँ-वहाँ पर व्याकुलता भी साथ-साथ रहती है। जैसे ही पदार्थ का बिछोह हुआ, नुकसान हुआ और आकुलता-व्याकुलता बढ़ जाती है। इसलिये गुरु हस्ती फरमाते हैं-

ममता से सन्ताप उठाया, आज हुआ विश्वास।

भेदज्ञान की पैनी धार से, काट दिया भवपाश।।

आकुलता से बचना चाहो तो, सामायिक साधन कर लो।

अतः इस सामायिक को साधने के लिए आत्मसंयम जरूरी है। इस आत्मसंयम के लिए अनित्यता का बोध जरूरी है। जिन-जिन सांसारिक चेतन-अचेतन संयोगों का सम्बन्ध है, उनसे ममत्व-मुक्ति के लिए, आसक्ति (लगाव) को कम करने के लिए चिन्तन करें-सब नश्वर हैं, क्षणिक हैं, चार दिन की बात है, यह तो एक मेला है, यह तो एक स्वप्न है, एक दिन सब छूट जायेगा, खत्म हो जायेगा।

सदा न सुखी रहे हमेशा, सदा ये दिल गुलजार नहीं।

सदा न कोयल बोली बोले, सदा ये बसन्त बहार नहीं।।

सदा न यौवन रहे सासता, सदा ये थिर परिवार नहीं।

इम जाणी जिनधर्म आराधो, ये अवसर बारम्बार नहीं।।

आप यह नहीं समझें कि महाराज साहब संसार से पलायनवादी बना रहे हैं। नहीं, ऐसी बात नहीं है। यह तो सुखी, परम सुखी, शान्त-प्रशान्त, प्रसन्न बनने का राजमार्ग है। याद रखें-पलायन कर वनवासी भी बन गये तो क्या? यदि अन्तर में संसार बसा है तो वहाँ भी व्याकुलता घेरेगी, दुःख बढ़ेगा। इसलिये अनित्यता का बोध रहेगा तो कहीं पर भी रहो, सर्वत्र प्रसन्नता बनी रहेगी। अच्छा भी स्थायी नहीं, बुरा भी स्थायी नहीं। यदि यह ज्ञान हो जाये तो फिर आकुलता-व्याकुलता उभरेगी ही नहीं। इस आकुलता-व्याकुलता के चलते शारीरिक और मानसिक बीमारी भी बढ़ जाती है। इसलिये अनित्यता का बोध जरूरी है।

अनित्यानि शरीराणि, विभवो नैव शाश्वतः।

नित्यं सन्निहितो मृत्युः, कर्त्तव्यो धर्मसंग्रहः।।

शरीर अनित्य है, वैभव शाश्वत नहीं है और मृत्यु भी सन्निकट है अतः अनित्य भावना रूप धर्म का चिन्तन करें।

(iii) उदारता-आत्मसंयम के लिए तीसरा सूत्र है-उदारता। इस बिन्दु पर भी चिन्तन आवश्यक है। क्योंकि परिग्रह अनर्थ की जड़ है। इसी से समाधि भङ्ग होती है। इसी परिग्रह से संकल्प-विकल्प जगते हैं। सारी विषमताएँ इस परिग्रह की ही देन हैं। परिग्रह से हल्का होने का मार्ग है-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य भाव एवं उदारता। जब तक धन से ममता नहीं उतरती, तब तक दान नहीं हो सकता। उदारता का गुण पनप नहीं सकता। साधक यही सोचे कि जो मिला है, वह मेरा नहीं है, मुझे केवल उसका सदुपयोग करना है। सुख का अभिमान नहीं करे, अपितु सुख को सेवा में समर्पित करे। सुख को बटोरना नहीं, बल्कि सुख को बाँटना चाहिये। 'असंविभागी न हु तस्स मोक्खो।' अर्थात् नहीं बाँटने वाले को मोक्ष प्राप्त नहीं होता है। दुःख को तो व्यक्ति जैसे-तैसे सह लेता है, मगर सुख का सम्यक् नियमन करना बहुत ही दुष्कर है। प्राप्त विषय-सुख का भोग व्यक्ति को निष्ठुर, निर्दय और अभिमानी बना देता है। कौन दुःखियारा है? कौन अभाव-अभियोग में जी रहा है? इसका उसे खयाल ही नहीं आता। लेकिन जो आत्मसंयमी होते हैं, वे स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ और परमार्थ में समर्पित रहते हैं। वे दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा और दूसरों की वेदना को अपनी वेदना समझते हैं और उसके समाधान के लिए तन, मन, धन से समर्पित रहते हैं। अपना सुख दूसरों की सेवा में समर्पित करना ही प्राप्त सुख का सच्चा उपयोग है। खुद ने कमाया और खुद ने ही खाया तो समझो पाप कमाया। सुख को पचाना आसान काम नहीं। मारवाड़ में कहावत है- 'जोर जवानी पडसो पल्ले, रामजी चलावे तो सीधो चले।' इसी बात को नीतिकारों ने पुष्ट करते हुए कहा-

यौवनं धन-सम्पत्तिः, प्रभुत्वमविवेकिता।

एकैकमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम्॥

अर्थात् यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुता और

अविवेक-इन चारों में से एक-एक भी अनर्थ करने के लिए पर्याप्त है, सक्षम है। फिर जहाँ चारों एक साथ मौजूद हों, तो वहाँ तो अनर्थ अवश्यम्भावी है।

कहते हैं सुख और दुःख दोनों में समभाव रखना। सुख में समभाव रखेंगे तो लम्बा चलेगा और दुःख में समभाव रखेंगे तो जल्दी समाप्त हो जाएगा। सुख में समभाव रखने का अर्थ है-स्वार्थ भाव से ऊपर उठना-उदारता, सेवा एवं त्याग का भाव। उत्तराध्ययनसूत्र के 28वें अध्ययन में बताया है-स्वधर्मी वात्सल्य से सम्यक्त्व पुष्ट होता है। साता दोगे तो साता मिलेगी, सुख दोगे तो सुख मिलेगा-यह प्रकृति का नियम है। सनातन सत्य है जो दोगे, वही मिलेगा। केवल भोगी बनकर जीना, निष्ठुर बनकर रहना, दूसरों की वेदना को नहीं पढ़ना, यह गरीबों का उपहास है, केवल बहुआ लेना है। बड़ा आश्चर्य होता है कि किसी को कोई सहायता दी जाती है, तो व्यक्ति दस बार सोचता है कि कहीं धन का दुरुपयोग तो नहीं होगा? कई बार व्यक्ति इस गणित में उलझ जाता है। परन्तु ज्ञानीजन तुम्हारी इस सोच पर हँसते हैं कि भैया! जरा अपनी गिरेबान में झाँककर देखो। तुम जो जरूरत से ज्यादा संग्रह कर रहे हो, ब्रॉण्डेड वस्तुओं को संजो रहे हो, प्राप्त सामग्री का प्रदर्शन (दिखावा) कर रहे हो, अहं पाल रहे हो। क्या यह दुरुपयोग नहीं है? सचमुच दिखावा करना, अहं पालना, यह प्राप्त सामग्री का दुरुपयोग है। वस्तु का दुरुपयोग आत्म-असंयम है। आज भी ऐसे कई समभावी साधक हैं जो स्वयं तो अल्प-पदार्थों का उपभोग करते हैं मगर सेवा-वात्सल्य के नाम पर सब कुछ अर्पण-समर्पण करने में अग्रणी रहते हैं। उनका प्रेम, औदार्यभाव और त्यागभाव एक उदाहरण है।

एक बिल्कुल छोटा-सा गाँव। गाँव में कुल मिलाकर 60 घर मुश्किल से होंगे। उस गाँव में एक अच्छा-खासा बड़ा बंगला है। विचरण के दौरान सन्तों ने उसी बंगले में रात्रि-विश्राम किया। दोपहर में उस बंगले के मालिक सपत्नीक सामायिक करने आये। पूछा-वर्षों से यहीं रहते हो? उत्तर मिला-हाँ, मैं यहीं

रहता हूँ। हैदराबाद, मुम्बई और कलकत्ता तीनों शहरों में मुझसे छोटे तीनों भाई रहते हैं और महाराज साहब मेरे खुद के चार बेटे हैं। वे और उनका परिवार सब बाहर रहते हैं। सब मिलाकर कुल 70 सदस्यों का परिवार है। सब आनन्द-मंगल है। आपका यहाँ रहने का कारण? साधु-सन्तों की सेवा। इस गाँव में प्रतिवर्ष कम से कम 1,000 साधु-साध्वीजी पधारते होंगे। इस बंगले में ही ठहरते हैं और उनकी गोचरी का लाभ भी मिल जाता है। महाराज साहब! गोचरी का लाभ तो अन्य अजैन शुद्ध शाकाहारी घरों को भी मिल जाता है, किन्तु उनके साथ रहने वाले मुमुक्षु भाई-बहिन, साधर्मिक और उनके दर्शनार्थ आने वाले साधर्मिक बन्धुओं का लाभ जब मुझे मिलता है, तो मैं आनन्द से झूम उठता हूँ। मेरे भाई और मेरे बेटे तो मुझे इस गाँव को छोड़ने का बहुत आग्रह करते हैं, पर मेरा मन नहीं मानता है। महाराज साहब! शहर में पैसा है, पर यहाँ पुण्य है। साधु-सन्तों की सेवा-भक्ति करना फिर भी सरल है, पर साधर्मिक सेवा का लाभ लेना बहुत कठिन है। सन्तों ने पूछा-सालभर में परिवार जनों से कब मिलते हो? महाराज साहब! हर साल तीन दिनों के लिए परिवार के सारे सदस्य किसी धर्मस्थान में एकत्रित होते हैं। आपको जानकर आनन्द होगा कि तीनों दिनों में हम में से कोई भी मोबाइल का उपयोग नहीं करता है। साल में एक बार तो सबसे मिलना और उसमें भी यदि मोबाइल की घण्टी बजे तो मिलने का क्या मतलब? यह है-औदार्यभाव, सेवा का गुण और साधर्मिक वात्सल्य। याद रखना-

धन दौलत पाकर भी सेवा अगर किसी की कर न सका,
दया भाव ला दुःखित दिलों के जख्मों को जो भर न सका।
वह नर अपने जीवन में सुख-शान्ति कहाँ से पायेगा,
टुक़राता है औरों को वह स्वयं ठोकरें खाएगा।।

समत्व भाव की पुष्टि के लिए आत्मसंयम अर्थात् प्राप्त सामग्री, भोग-साधन में अपनापन का भाव न रखते हुए ममत्वभाव से ऊपर उठकर सेवा-समर्पण का भाव रखने से अहं-आसक्ति नहीं बढ़ेगी और

समताभाव सधेगा।

(3) आत्मविश्वास

हमारा जीवन विषमताओं से भरा है। कहीं पर भी एकरूपता, स्थिरता दृष्टिगत नहीं होती। प्रसन्नता-खिन्नता, सुलझन-उलझन, आवेग-संवेग के प्रवाह में उतार-चढ़ाव से मन भ्रमित रहता है। इसका मूल कारण है-आत्मबोध, आत्मसंयम और आत्मविश्वास का न होना। फिर भला कैसे समत्व भाव घटित होगा? कैसे समरसता आयेगी? कैसे मन सन्तुलित बनेगा? समत्व भाव की प्राप्ति के लिए हमने अभी तक आत्मबोध और आत्मसंयम पर चर्चा की। अब जरा प्रतिकूलता में कैसे आत्मविश्वास बनाकर रखना? इस पर थोड़ा-सा चिन्तन कर लेते हैं। देखिये! पहले भी निवेदन किया था कि दुःख आना या न आना हमारे हाथ की बात नहीं है, मगर दुःखी होना, न होना हमारे हाथ की बात है। एक बात तो स्पष्ट है कि दुःख की घड़ी में समता रखने से दुःख की परम्परा जल्दी समाप्त हो जाती है। दुःख में दुःखी होने से दुःख दुगुना हो जाता है। दुःख क्या है? यह एक पापकर्म की उदय अवस्था है। उस उदय अवस्था में समभाव नहीं रखने से राग-द्वेष कर बैठते हैं, फलतः नये कर्म का बन्ध कर लेते हैं। नया कर्म बँधता है तो कालान्तर में फलता ही फलता है और तब फिर राग-द्वेष होता है। राग-द्वेष होता है तो फिर नया कर्मबन्ध होता है। यह चक्र चलता ही रहता है। बीज से वृक्ष और वृक्ष से बीज। जब तक विषम भाव रूप अज्ञान रहेगा, तब तक यह क्रम चलता ही रहेगा। लेकिन इस बीज को यदि हम समता की आँच में एक बार जला दें तो वह बीज पुनः अंकुरित नहीं होगा। नये कर्मबन्ध से बचने का एक ही उपाय है कि जब कर्म का उदय हो तो ज्ञाता-द्रष्टाभाव जागृत रखकर राग-द्वेष से बचें। जितना राग-द्वेष से बचेंगे, उतना ही शीघ्र सिद्धालय को उपलब्ध होंगे। प्रतिकूलता में आत्मविश्वास के लिए (i) आत्मवादी बनना और (ii) धैर्य रखना बहुत जरूरी है।

(i) आत्मवादी बनें-प्रतिकूलता जब जीवन में

आती है तो अनेक अशुभ विचारों का जन्म होता है। उस प्रतिकूलता के उदय में किसी को दोष नहीं दें, न किसी से द्वेष पालें। क्योंकि निमित्त हमेशा निर्दोष होता है। आज जो प्रतिकूलता का उदय हुआ, उसका कारण है किसी न किसी जन्म में मैंने राग-द्वेष किया है। यदि उस समय राग-द्वेष नहीं करता तो कर्मबन्ध नहीं होता और बन्ध के अभाव में यह प्रतिकूलता भी खड़ी नहीं होती। मैंने भूल की है राग-द्वेष करने की, तो सजा तो मिलनी ही है। ऐसा चिन्तन जागृत रखें। हम व्यवहार में भी देखते हैं कि भोजन करते समय यदि असावधानी से जिह्वा दाँतों के बीच में कुचल जाती है तो हम दाँतों को दोषी नहीं ठहराते और न दाँतों पर द्वेष करते हैं। हम यही सोचते हैं कि इसमें मेरी ही भूल थी कि मैंने सावधानी नहीं रखी। व्यापार बराबर नहीं चलने पर, शरीर में रोग उभरने पर, व्यापार में घाटा लग जाने पर, बच्चे के अनुत्तीर्ण हो जाने पर, सम्बन्ध टूट जाने पर, इत्यादि दुःख की घड़ी में अज्ञानता के कारण कई बार व्यक्ति घर में पितरजी का प्रकोप मानता है, कभी किसी को टामण-टूमण, मन्त्र-तन्त्र करने का आरोप लगा बैठता है। कई लोग इसके लिए ऊपर वाले भगवान को ही दोषी ठहरा देते हैं। कई सारे लोग कर्मवादी बनकर कर्मों को ही दोषी ठहरा देते हैं और कहते हैं कि ये कर्म मेरे ही पीछे क्यों पड़े हैं? सारे कर्मों के खेल हैं आदि आदि। तो कई लोग ऐसा भी बोलते हैं-भाई साहब! सब समय का फेर है, समय अच्छे-अच्छे लोगों को धूल चटा देता है। इस तरह से समय को ही मुख्य कारण मानने लग जाते हैं। मगर यहाँ जैनदर्शन एकदम स्पष्ट करता है कि ये सब व्यर्थ की बातें हैं-न कर्म का दोष है और न समय का। न ही इसमें ईश्वर की कोई भूमिका है। न किसी मन्त्र-तन्त्र या व्यक्ति का दोष है। जैनदर्शन न कर्मवादी है, न कालवादी और न ईश्वरवादी। जैनदर्शन आत्मवादी है-

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।

अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठिओ सुपट्ठिओ॥

अर्थात् आत्मा ही सुख और दुःखों का कर्त्ता और विकर्त्ता (भोक्ता) है। शुभ कर्मों में स्थित आत्मा मित्र है

और अशुभ कर्मों में स्थित आत्मा अमित्र (शत्रु) है।

तुम ही तुम्हारे शत्रु हो और तुम ही तुम्हारे मित्र हो। तुमने स्वयं ने ही ये विषमतायें खड़ी की हैं। क्यों, किसी निमित्त को दोषी ठहराते हो? रही बात कर्मों की और समय की। तो जैनदर्शन कर्म को तो मानता ही है, परन्तु कर्मवादी नहीं है अर्थात् एकान्त कर्म का दोष नहीं है। अरे भाई! यदि बोटल में पड़ी शराब नहीं पीते तो क्या शराब का नशा होता? नहीं। तुमने ही शराब पी है, अतः इसमें शराब को दोषी क्यों ठहराते हो? ठीक इसी तरह-कर्म विचारे कौन, भूल मेरी अधिकाई। लौह सहे घनघात, संगति अग्नि की पाई॥

अर्थात् एकान्त कर्म को क्यों दोषी ठहराते हो? बिचारा गर्म लोहा हथोड़े की मार खाता है। क्योंकि उसमें लोहे का कोई दोष नहीं, अग्नि के संसर्ग से लोहा मार खाता है। इसी तरह भूल तो जीव ने की, मगर बदनामी कर्म को मिल रही है। हम न समय को बदनाम करें, न कर्म को। बस यहाँ एक चिन्तन करें कि इस प्रतिकूलता में भूल मेरी ही रही है।

(ii) धैर्य रखें-जब-जब प्रतिकूल अवस्था या दुःख की घड़ी आए, तब अपने आत्मविश्वास को कभी न डिगने दें। यही सोचकर प्रसन्न रहें कि जब सुख नहीं टिका तो दुःख भी चला जाएगा, इस क्षण की यही सच्चाई है। कभी विचलित नहीं हों। ये सुख-दुःख दोनों अस्थिर हैं। बस, यही चिन्तन करें कि समता मेरा धर्म है। यही धर्म का मर्म है। मैं सुख-दुःख से निरपेक्ष ज्ञाताद्रष्टा स्वभावी आत्मा हूँ।

बाधाओं से घबरायें नहीं, प्रतिकूलता से डगमगायें नहीं, दुःख में धैर्य खोएँ नहीं। यही सोचें कि बाधायें तो जिन्दा आदमी को ही आती हैं, मुर्दों को तो लोग पहले ही रास्ता दे देते हैं। तुम वीर हो, महावीर हो, अजेय हो, पौरुष-सम्पन्न हो, दुःख तुम्हारे सामने क्या चीज़ है? असफलता के क्षण में यही सोचें-कहाँ कमी रह गई? कहाँ भूल कर बैठा? बस, उन भूलों को सुधारते रहो, आगे बढ़ते रहो। न थकना है और न रुकना है। अपना आत्मविश्वास कभी झुकने मत दो, डिगने मत

दो। जरा सोचो-सर्व अनुकूलताओं के साथ जिस मुकाम पर आज तुम पहुँचे हो, उसके लिये क्या-क्या तुमने सहन नहीं किया? क्या था तुम्हारे पास निगोद के भव में? न ज्ञान, न समत्व, न संयम, न सही समझ और न धैर्य। केवल पराधीनता, मगर उन पराधीनता के क्षणों में भी तुम सहते रहे, सहते रहे। भले ही वह सहनशीलता मजबूरी थी। फिर भी उस सहनशक्ति ने तुम्हें उबार दिया, निगोद से बाहर निकाल दिया। आगे भी बेइंद्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय आदि असन्नी भवों में जो मिथ्यात्व युक्त था, मगर वहाँ पर भी पीड़ा को सहा, तो इस सहनशीलता ने ही तुम्हारे भविष्य को उज्ज्वल किया और तुम्हें दुर्लभ मानव भव तक पहुँचाया। इसीलिये यह सामायिक यही सन्देश देती है- हे साधक! अब तो तेरे पास जिनवाणी का मार्गदर्शन है। देव, गुरु और धर्म का आश्रय है। जिनशासन है। अब तो आने वाले प्रतिकूल संयोगों में, पीड़ा के क्षणों में, अपमान के पलों में, सही समझ के साथ आत्मविश्वास जीवन्त रखेगा तो शतप्रतिशत मुक्ति का द्वार खुलने ही वाला है। याद रखना पीड़ा पाये बगैर पुरस्कार नहीं मिलता। पत्थर भी मूर्ति बना-पीड़ा के माध्यम से और मिट्टी भी घड़ा बन गई पीड़ा पाकर। पीड़ा के बिना न प्रेम, न पुण्य, न परमात्मा। हमें पीड़ा से नहीं पाप से डरना है, वेदना से नहीं विराधना से और दुःख से नहीं दोषों से डरना है। यही तो आत्मविश्वास है। इसी से समत्व पुष्ट होता है और सामायिक सधती है। जब साधक का आत्मविश्वास कमजोर होता है तो निमित्त उसे डिगा ही देता है, लेकिन साधक जब आत्मविश्वास से भरा होता है, वीरत्व भाव होता है, लक्ष्य पर दृष्टि होती है।

भगवान महावीर का जीवन इस बात का साक्षी है कि कष्टों में भी उनका आत्मविश्वास अचल था, श्रद्धा मजबूत थी। उनका यही चिन्तन रहा कि मेरे कर्मों की निर्जरा हो रही है, मेरा कर्ज उतर रहा है। कोड़ियों में करोड़ों की कमाई हो रही है। करोड़ों भवों के कर्मों की निर्जरा क्षणों में हो रही है। करोड़ों का माल फटाफट बिक रहा है। जैसे-बारह माह में जो कमाई नहीं हुई,

अगर उतनी कमाई सप्ताह भर में हो जाए तो उस समय व्यक्ति को न खाने की फुर्सत, न पीने की और न चैन से सोने की फुर्सत होती है। भले ही कष्ट हो, भूख हो, प्यास हो, सर्दी-गर्मी लगे, पर ऐसी कमाई होनी चाहिए। वह व्यक्ति उस समय कष्ट को कष्ट नहीं मानता, दुःख को दुःख नहीं मानता। बस एक ही बात है कि कमाई होनी चाहिए। बस, ऐसे ही प्रभु महावीर भी चिन्तन करते कि करोड़ों भवों के कर्मों का कर्जा शीघ्र उतर रहा है, फिर क्या घबराना? इसी प्रकार हर साधक जब भी दुःख, कष्ट, पीड़ा या वेदना आये तो यही समझे कि ये निर्जरा के क्षण हैं। यही समत्वभाव मेरी अनन्त निर्जरा कुछ ही क्षणों में करा देगा। फिर क्यों मैं आत्मविश्वास से विचलित बनूँ?

सामायिक साधना साधकों की प्राण है। जिनशासन की पहचान है। तीर्थङ्कर की देशना का गौरवशाली बखान है। हर जीव का त्राण है। मैंने तो सिर्फ समत्व के स्वरूप की ही चर्चा की है, मगर सामायिक का स्वरूप और अधिक व्यापक है। सामायिक का अधिकारी कौन होता है? सामायिक की विधि के पीछे क्या प्रयोजन है? सामायिक का 48 मिनट ही विधान क्यों है? सामायिक में भेद-प्रभेद क्या-क्या है? निर्दोष सामायिक का क्या स्वरूप है? इत्यादि अनेक विषयों पर चर्चा अभी अवशेष है, यद्यपि विद्वानों ने अनेक विषयों को छूते हुए बहुत सुन्दर व्याख्या की है, पर उपस्थित श्रोताओं से यही सुझाव है कि सामायिक की व्यापकता को समझने के लिए सन्त और स्वाध्याय का जरूर आश्रय लें।

अन्त में संक्षिप्त में सार यही है कि समत्व को साधने के लिए आत्मज्ञान जरूरी है। सुख-दुःख रूप द्वन्द्वात्मक परिस्थिति में क्रमशः आत्मसंयम और आत्मविश्वास बना रहेगा तो निश्चित रूप से सामायिक अन्तर में खिलेगी और एक दिन ऐसी साधना करने वाला साधक सिद्धत्व रूप आत्मभाव में प्रतिष्ठित होगा, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ वार्ता को विराम।

प्रशस्त लेश्या एवं विशुद्धि से पुण्य का सम्बन्ध

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में 'सुपुण्यशाली की होती धर्म में मति' विषय से सम्बद्ध अनेक प्रवचन फरमाए गए थे। उनमें से इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

अप्रशस्त लेश्या से प्रशस्त लेश्या में स्थायित्व प्राप्त कर, शुक्ल लेश्या को एक मुहूर्त्त से अधिक की करके कर्मबन्ध की कारणभूत लेश्या को समाप्त करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और लेश्याओं के परिवर्तन के क्रम में अप्रशस्त का समय सीमित करते हुए मुमुक्षुओं का मार्ग प्रदर्शित करने वाले आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्-

जिनवाणी का विशिष्ट शब्द है लेश्या। पुण्य, पाप, योग, उपयोग, शुभ कर्म, अशुभ कर्म, मिथ्यात्व, सम्यग्दर्शन आदि अनेकानेक शब्द अन्यान्य दर्शनों में भी इसी रूप में अथवा इनके पर्यायवाची के रूप में देखे जा सकते हैं। परन्तु लेश्या शब्द शायद ही अन्य दर्शनों में उपलब्ध हो।

यूँ तो लेश्या शब्द जैन आगमों में अनेकानेक स्थलों पर आया है, सामान्य जानकारी पच्चीस बोल के सतरहवें बोल में कराई जाती है। छह डाकुओं के द्वारा लूटपाट में प्राणिवध अथवा जामुन खाने के लिए लालायित छह राहगीरों के दृष्टान्त से भीतरी उपयोग और बाहरी योग समझने की सुन्दर युक्ति इस लेश्या के विवेचन से स्पष्ट होती है। प्रज्ञापनासूत्र के 17वें लेश्या पद में छह उद्देशकों के माध्यम से सुन्दर विस्तार हुआ है। उत्तराध्ययनसूत्र के 34वें अध्याय में भी इसको योग और उपयोग की विविधता से प्रभु महावीर ने अन्तिम देशना में फरमाया है।

कर्मसाहित्य में इसका व्यापक प्रयोग हुआ है। दिगम्बर साहित्य के प्राचीन ग्रन्थों और उनकी व्याख्या में यह शब्द आयु बन्ध के प्रसङ्ग में अनेकानेक अंशों के साथ भी व्याख्यायित हुआ है।

परभव की आयु जिस लेश्या में बँधती है, मृत्यु के समय वही लेश्या आना अनिवार्य है। आयु बन्ध के समय से मृत्यु के समय में योग बदल सकता है, उपयोग बदल सकता है, कषाय बदल सकती है, दृष्टि बदल सकती है, गुणस्थान बदल सकता है, ध्यान बदल सकता है, किन्तु लेश्या वही आयेगी। विग्रहगति में वही लेश्या रहेगी, परभव में उसी लेश्या में जन्म होगा।

पञ्चसंग्रह के छठे भाग आदि में स्पष्ट है कि देवायु, मनुष्यायु और तिर्यञ्चायु इन तीन प्रकृतियों का स्थिति बन्ध कषाय की कमी से बढ़ता है, शेष 117 प्रकृतियों का स्थिति बन्ध कषाय की वृद्धि से बढ़ता है। यहाँ कषाय उदय जनित आत्मपरिणाम को अध्यवसाय कहा गया है। एक एक स्थिति बन्ध के स्थान में अनेकानेक अनुभाग बन्ध स्थान होते हैं, क्योंकि अनुभाग बन्ध केवल कषाय उदय जनित आत्मपरिणाम रूप अध्यवसाय से ही नहीं होता, अपितु जिन अध्यवसायों से अनुभाग बन्ध होता है, उसमें लेश्या की भूमिका और जुड़ जाती है। कषाय उदय और लेश्या जनित आत्मपरिणाम ही अनुभाग बन्ध के अध्यवसाय कहलाते हैं।

भगवतीसूत्र शतक 12 उद्देशक 5 में द्रव्य लेश्या को अष्ट स्पर्शी रूपी तथा भाव लेश्या को अरूपी बताया है।

निःसन्देह सम्यग्दर्शन धर्म रूपी प्रासाद की नींव है, धर्म रूपी वृक्ष की जड़ है। धर्म रूपी नगर की परकोट भी समकित को कहा है, तो आभूषण की पेटी, भोजन का थाल और किराणा की दुकान, इन छह भावनाओं से भावित होने की प्रेरणा व्याख्या साहित्य से मिल रही है।

जब लग होती समकित आण,
तब से होता भव का प्रमाण।

बिन श्रद्धा शून्य समान, पधारे पद्मप्रभु भगवान।
करने जीवों का उत्थान, पधारे पद्मप्रभु भगवान।।

एक शून्य-शून्य है, दो शून्य-शून्य है, तीन शून्य भी शून्य है, कितने ही शून्य लगाओ सब शून्य है, किन्तु एक के ऊपर एक शून्य 10, दो शून्य 100, तीन शून्य 1,000 इस प्रकार बढ़ता ही जाएगा। जिस शून्य का आविष्कार आधुनिक विज्ञान भारत की देन बता रहा है। हमारे इतिहास में सम्पूर्ण ज्ञान सूर्य ही जिनेश्वर भगवान को कहा गया है। उत्तराध्ययनसूत्र के 23वें अध्ययन की 78वीं गाथा में आया-

उगओ खीणसंसारो सव्वन्नु जिणभक्खरो।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोयम्मि पाणिणं।।

अर्थात् जिसका संसार क्षीण हो चुका है, जो सर्वज्ञ है, ऐसा जिन-भास्कर उदित हो चुका है। वही सारे लोक में प्राणियों के लिए प्रकाश करेगा।

उसी जिनेन्द्र की वाणी के रसिक हम हैं, उसी में हम सम्यग्दर्शन को देख रहे हैं। सम्यग्दर्शन प्राप्ति का अधिकारी संज्ञी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्तक जीव ही हो सकता है।

यहाँ तक पहुँचने के लिए पुण्य को थोड़ा बहुत समझने का पुरुषार्थ हमने गत दिनों, पिछले प्रवचनों में किया ही है। आज गुरुकृपा से लेश्या की चर्चा की जा रही है। शुक्लध्यान के बिना कोई भी जीव मोक्ष में जा नहीं सकता। ध्यान शतक नामक प्राचीन ग्रन्थ में स्पष्ट है कि 8वें से 10वें गुणस्थान तक शुक्लध्यान का प्रथम पाया (प्रथम चरण) रहता है। 11वें, 12वें गुणस्थान में द्वितीय चरण, योग निरोध के लिए तेरहवें गुणस्थान के अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में तीसरा चरण तो 14वें गुणस्थान में चतुर्थ चरण का कथन हुआ। वीर स्तुति की 16वीं गाथा आप लोगों द्वारा बोली ही जाती है-

अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तरं ज्ञाणवरं झियाइं।
सुसुक्कसुक्कं अपगंडसुक्कं, संखिंदुएंगंतवदातसुक्कं।।

भगवान महावीर ने अनुत्तर (संसारतारक सर्वोत्तम) धर्म का उपदेश देकर सर्वोत्तम श्रेष्ठ ध्यान-शुक्लध्यान की साधना की। वह ध्यान अत्यन्त शुक्ल वस्तुओं के समान शुक्ल था, दोषरहित शुद्ध था, शंख, चन्द्रमा आदि के समान एकान्त शुद्ध श्वेत था।

उत्तराध्ययन के 29वें अध्ययन के उपसंहार में इसका कथन है। केवलज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् शेष आयु को भोगता हुआ, जब अन्तर्मुहूर्त परिमित आयु शेष रहती है, तब अनगार योगनिरोध में प्रवृत्त होता है। उस समय सूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपाति नामक शुक्लध्यान को ध्याता हुआ सर्वप्रथम मनोयोग का निरोध करता है, फिर वचनयोग का निरोध करता है उसके पश्चात् श्वासोच्छ्वास का निरोध करता है। श्वासोच्छ्वास का निरोध कर पाँच ह्रस्व अक्षरों के उच्चारण काल जितने समय में 'समुच्छिन्नक्रियाऽनिवृत्ति' नामक चतुर्थ शुक्लध्यान में लीन हुआ अनगार वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र इन चार कर्मों का एक साथ क्षय करता है। उत्तराध्ययनसूत्र के 35वें अध्ययन की 19वीं गाथा में भी कहा गया-

सुक्कज्झाणं झियाएज्जा, अणियाणे अकिंचणे।
वोसट्टकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ।।

अर्थात् मुनि शुक्लध्यान में लीन रहे। निदानरहित और अकिञ्चन रहे। जहाँ तक काल का पर्याय है, जीवन पर्यन्त शरीर का व्युत्सर्ग अर्थात् कायासक्ति छोड़कर विचरण करे।

मोक्ष जाने के लिए 8 से 13 इन 6 गुणस्थानों पर शुक्लध्यान का एकाधिकार है। 14वाँ गुणस्थान शुक्ल ध्यान के प्रारम्भिक तीन चरणों का परिणाम है और वे तीनों चरण, सयोगी अवस्था में शुक्ल लेश्या में ही आ सकते हैं।

मनुष्य गति में भाव लेश्या के साथ द्रव्य लेश्या भी वही रहती है। अरूपी स्तर पर, उपयोग के स्तर पर, आत्म स्तर पर शुद्धि है, विशुद्धि है, उसके पूर्व बाहरी विशुद्धि अनिवार्य है। सातवें गुणस्थान से शुक्ल लेश्या में

जीव आठवें गुणस्थान में प्रवेश करेगा तभी शुक्ल ध्यान सम्भव है। द्रव्य से भाव और भाव से द्रव्य परस्पर अनुस्यूत है। शुक्ल लेश्या के भावों का विवेचन करते हुए प्रभु ने उत्तराध्ययनसूत्र के 34वें अध्ययन की 31वीं गाथा में फरमाया-

अदुरुद्वाणि वज्जित्ता धम्मसुक्काणि झायए।
पसंतचित्ते दंतप्पा समिए गुत्ते य गुत्तीसु।।

अर्थात् आर्त और रौद्र ध्यानों का त्याग करके जो धर्म और शुक्लध्यान में लीन है, वह प्रशान्तचित्त और दान्त है, पाँच समितियों से समित और तीन गुप्तियों से गुप्त है-

सरागे वीयरागे वा उवसंते जिइंदिए।
एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे।।

अर्थात् ऐसा व्यक्ति सराग हो या वीतराग, किन्तु जो उपशान्त और जितेन्द्रिय है, इन योगों से युक्त है, वह शुक्ल लेश्या में परिणत होता है।

यद्यपि आगम और मूल सिद्धान्त में उपयोग के दो ही भेद किये गये-साकार और अनाकार, फिर साकार उपयोग को ज्ञान-अज्ञान में विभक्त किया गया तथापि आजकल की चर्चाओं से पश्चाद्वर्ती साहित्य से अशुभ-उपयोग, शुभ-उपयोग और शुद्धोपयोग की जो चर्चा उपस्थित की जा रही है, उस पर भी विचार करके देखा जा सकता है। अतः जिन ग्रन्थों में यह बात आती है उन्हें उठाकर देखें तो अनेक विसङ्गतियाँ नज़र आती हैं, तब उन्हें कैसे स्वीकार किया जा सकता है? प्रवचनसार में आत्मा का उपयोग दो प्रकार का बताया-शुभ अथवा अशुभ एवं उसी ग्रन्थ में उपयोग के 2 भेद बताए-1. शुद्ध 2. अशुद्ध और अशुद्ध के भी दो भेद-शुभ, अशुभ बताये। भावपाहुड़ ग्रन्थ में भाव के 3 प्रकार बताए, उसमें शुभ, अशुभ और शुद्ध को लिया है। पञ्चविंशतिका अधिकार में शुद्धोपयोग की परिभाषा में कहा-स्वास्थ्य, समाधि, साम्य, योग, चित्तनिरोध और शुद्धोपयोग ये सभी शब्द एक ही अर्थ के वाचक हैं। प्रवचन सार में पृथक्त्ववितर्क विचार नामक प्रथम शुक्लध्यान को

शुद्धोपयोग कहा। जीवन-मरण में समता भाव रखने स्वरूप उपेक्षा संयम को शुद्धोपयोग कहा। बारस अणुवेक्खा में शुद्धोपयोग से जीव के धर्मध्यान तथा शुक्लध्यान होता है, ऐसा बताया। प्रवचनसार में कहा-सम्यक्त्वपूर्वक शुभोपयोग होता है तब मुख्यवृत्ति से तो पुण्यबन्ध ही होता है, परन्तु परम्परा से मोक्ष भी होता है।

शुद्धोपयोग को कहीं धर्मध्यान, कहीं शुक्लध्यान का प्रथम चरण, कहीं उपेक्षा संयम, कहीं स्वास्थ्य आदि के एकार्थक में द्योतित किया गया। कहीं शुभोपयोग से ही मोक्ष की बात कह दी।

हम यहाँ उसे समझने के लिए इस प्रकार विवेचित कर सकते हैं-

1. इन्द्रियदृष्टि के प्रभाव की आसक्ति-अशुभ उपयोग।
2. बुद्धिदृष्टि के प्रभाव से इन्द्रिय दृष्टि का प्रभाव कम होना, कम होते जाना। बुद्धिदृष्टि से शुभ उपयोग।
3. विवेकदृष्टि जागृत होना-शुद्धोपयोग। विवेकदृष्टि अर्थात् अपूर्वकरण में राग-द्वेष की गाँठ का खुलना।
4. अंतरंगदृष्टि-चतुर्थ गुणस्थान में सम्यग्दृष्टि बनना।
5. प्रीतिदृष्टि-सम्यग्दर्शन की प्राप्ति से सर्व जीवों में आत्मदर्शन होने लगता है। उत्तराध्ययनसूत्र के छठे अध्ययन की द्वितीय गाथा में भगवान यही फरमाते हैं-अप्पणा सच्चमेसेज्जा मित्तिं भूएसु कप्पए।

अर्थात् अपने सत्य का अन्वेषण करें और विश्व के सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव का संकल्प करें। उत्तराध्ययनसूत्र 19.90 का भी वही उद्घोष है-'समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य।' अर्थात् त्रस और स्थावर सभी प्राणियों पर समदृष्टि हो गया। दशवैकालिकसूत्र 4.9 में 'सव्वभूयप्प-भूयस्स सम्मं भूयाइं पासओ।' अर्थात् सब जीवों को अपने समान जानता एवं देखता है। दशवैकालिकसूत्र 10.5 में 'अप्पसमे मण्णिज्ज छप्पिकाए।' अर्थात् षट्काय के जीवों को अपनी

आत्मा के समान प्रिय समझता है। आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः अर्थात् जो सब जीवों को अपने समान देखता है वह पण्डित है।

इन्द्रियदृष्टि के प्रभाव की आसक्ति मिटी अर्थात् अशुभ उपयोग मिटा। बुद्धिदृष्टि स्थायी बनी अर्थात् शुभ उपयोग का स्थायित्व शुद्धोपयोग में ले गया।

इसीलिए उत्तराध्ययनसूत्र के 34वें अध्ययन की अन्तिम गाथा में प्रभावी प्रेरणा दी-

तम्हा एयासिं लेस्साणं, अणुभावे वियाणिया।
अप्पसत्थाओ वज्जिन्ता, पसत्थाओऽहिट्टिए मुणी॥

अर्थात् लेश्याओं के अनुभाग को जानकर अप्रशस्त लेश्याओं का परित्याग करके प्रशस्त लेश्याओं में अधिष्ठित होना चाहिए।

तैजस, पद्म और शुक्ल लेश्या के परिणाम जो प्रथम गुणस्थान में हैं उसके अलावा शुभ उपयोग किसका नाम है? प्रारम्भ की तीन लेश्याएँ अधर्म लेश्याएँ हैं, पाप लेश्याएँ हैं, अप्रशस्त लेश्याएँ हैं। उनके भावों का विवेचन उत्तराध्ययनसूत्र के 34वें अध्ययन की गाथा 21 से 26 में हुआ। प्रमुख रूप से जो मनुष्य पाँच आस्रवों में प्रवृत्त हैं, तीन गुप्तियों से अगुप्त हैं, तीव्र आरम्भ में परिणत हैं, क्षुद्र एवं साहसी हैं, नृशंस हैं, ईर्ष्यालु हैं, प्रद्वेषी हैं, दुःसाहसी हैं, वाणी से वक्र हैं ये सभी अप्रशस्त लेश्या के परिणाम हैं। ये तो अशुभ उपयोग ही हैं। हाँ, इन अशुभ में जो भी कमी करता हुआ जीव चलता है, वह शुभ योग है, वे प्रशस्त अध्यवसाय कहलाते हैं। अशुभ उपयोग की कमी प्रशस्त है, यहाँ जो पुण्य-प्रकृतियों का अनुभाग बढ़ता जाता है उसे तत्त्वार्थसूत्र (6/3) में 'शुभः पुण्यस्य' कह दिया है। योग की शुभता अन्दर के भावों की, अन्दर के परिणामों की अशुभता घटने से हुई, यहाँ परिणाम वर्धमान है। बुराई घट रही है, आरम्भ कम हो रहा है, व्यसन छूट रहे हैं, दुर्मति मिट रही है सभी बातें एक साथ घटित होती हैं। कृष्ण लेश्या के उत्कृष्ट अंश से कापोत लेश्या के जघन्य अंश में रूपान्तरण बाहर के अनेकविध पुण्य को प्रवर्धित

कर रहा है। पञ्चेन्द्रिय पर्याय इसी से मिलती है, सन्नीपना इन्हीं ने दिलाया है, पर्याप्त इसी ने बनाया है।

यही शुभयोग जहाँ बाहर की उपलब्धि का कारण बनता है, सामग्री का संग्रह दिलाता है, पर उसका परिग्रह, ममता, आसक्ति अशुभ उपयोग की वृद्धि का कारण है, परिणामों में हीयमान है, अशुभ योग कराता है, पापकारी है। इसमें शुभयोग कैसे जिम्मेदार है? पुण्य का क्या दोष है? इसे अज्ञान चेतना, अनाभोग मिथ्यात्व, असन्नी के भावों में नहीं अपनाया। इसलिए अनादि काल से पड़े ही थे और अनन्तकाल तक अनन्त जीव पड़े ही रहेंगे।

आप यहाँ शुभ उपयोग, मोक्षमार्ग की चर्चा कर रहे हैं, शुद्धोपयोग की बातें कर रहे हैं, सम्यक्त्व के बिना सब बेकार बता रहे हैं, इन सबके अधिकारी बने किससे? अशुभ उपयोग की कमी होने पर शुभयोग, प्रशस्त अध्यवसाय से ही तो यहाँ तक पहुँचे। अप्रशस्त तीन लेश्याएँ अनादि काल से चल ही रही थीं। सन्नी जीव ही प्रशस्त लेश्या का अधिकारी है। हाँ, भवनपति से दूसरे देवलोक के 64 जाति के देव आयु पूर्ण करते यदि तेजोलेश्या में हैं तो बादर पृथ्वी, पानी, वनस्पति के भव में तेजोलेश्या में उत्पन्न हो सकते हैं। कुछ क्षण बाद तो फिर उनके तीन अप्रशस्त लेश्याएँ ही रहेंगी।

भगवतीसूत्र, शतक 12, उद्देशक 5 के अनुसार पौद्गलिक द्रव्य लेश्याएँ अठफरसी हैं। काययोग अठफरसी है, योग का परिणाम लेश्या है। कषाय अनुरज्जित योग लेश्या है और कषाय चतुःस्पर्शी है, मन, वचन का योग चतुःस्पर्शी है एवं उपयोग अरूपी, भाव लेश्या अरूपी, मिथ्यादृष्टि अरूपी, संज्ञा अरूपी है। तीन अप्रशस्त भाव लेश्याएँ, अशुभ उपयोग हैं और तीन प्रशस्त भाव लेश्या 'पसन्नचित्ते दंतप्पा' शुभ उपयोग हैं।

एक भील था। हाँ हाँ भील! प्राचीनकाल की घुमक्कड़ जंगली जाति। आदिवासी जनजाति। आज से लगभग 60-70 वर्ष पूर्व चित्तौड़ के आसपास जंगलों में

रहने वाले भील नरभक्षी थे। वे मनुष्य के शिकार की होड़ में थे।

पंजाब केसरी प्रेमचन्दजी महाराज विचरण-विहार करते हुए कच्चे रास्ते, पगडण्डी के रास्ते पर चल रहे थे। चित्तौड़ पहुँचना था, मार्ग बताने वाले कोई मिले नहीं। उन बीहड़ जंगलों में भटक गए। एक भील ने उनके वेश को देखा, डील-डौल को देखा, लम्बी-चौड़ी, भव्य आकृति को देखा, हिंसा के विचार छूट गये, द्वेष के संस्कार कम हो गए। वह निकट आया, हाथ जोड़े, ओहो! नाम सुना था, दर्शन की इच्छा भी हुई, आज तो घर बैठे गंगा आ गई, जैन दिवाकरजी महाराज साहब आप ही है न? मुनिराज ने फरमाया-हम एक ही भगवान को मानने वाले हैं। हम एक ही भगवान के भक्त हैं। अच्छा, अच्छा कोई बात नहीं। अच्छा हुआ, आप मुझे मिल गए। नहीं तो कोई आपको मार ही डालता। उस भील ने बीहड़ जंगलों से रास्ता बताते हुए सही रास्ते पर ले जाकर महाराज श्री को चित्तौड़ पहुँचा दिया। विलम्ब तो काफी हो चुका था, किन्तु सुरक्षित पहुँचने का सन्तोष था। लोगों को, भक्तों को ज्ञात हुआ। तब उस भील का सम्मान किया, भोजन आदि कराया। भील लौट गया, निवृत्त हो गया। जाना ही था, किन्तु महाराज श्री गन्तव्य पर सुरक्षित किसके सहकार से पहुँचे? भील के, फिर क्या भील हेय है? दयालु बना भील हेय है?

एकलव्य भी भील ही था। क्या एकलव्य हेय दृष्टि से देखा जाता है। द्रव्य लेश्या पौद्गलिक है। तीनों प्रशस्त द्रव्य लेश्याएँ भी पौद्गलिक हैं, पर वह प्रशस्त हुई किससे? भीतर के वर्धमान परिणामों की धारा से द्रव्य लेश्या प्रशस्त हुई।

पुण्य भी जीव को भील के समान गन्तव्य तक पहुँचाकर स्वयं निवृत्त हो जाता है। शुद्ध जीव-चलता है? (श्रोता) नहीं। बैठता है? (श्रोता) नहीं। सोता है? (श्रोता) नहीं। खाता है? (श्रोता) नहीं। बोलता है? (श्रोता) नहीं।

आप जैसे अपने को शुद्ध जीव समझते हो, मानते

हो तो आप क्यों चलते हो? क्यों ठहरते हो? क्यों बैठते हो? क्यों सोते हो? क्यों खाते हो?

चलना हेय है? खड़े रहना हेय है? खाना, पीना, सोना, बोलना सब क्रियाएँ हेय हैं? आप तो शुद्ध उपयोग की चर्चा करते हैं, अबद्ध अस्पृष्ट जीव अपने को मानते हैं, फिर क्यों उपदेश दे रहे हैं? शुद्ध जीव, सिद्ध भगवान उपदेश देते हैं क्या?

तो भैया! जब शरीर से जुड़े होने से ये सब करना ही पड़ता है तो भगवान ने व्यवहार बताया। दशवैकालिकसूत्र 4.8 में चलने-फिरने का सही तरीका बताया-

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।

जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ।।

अर्थात् यतना से चले, यतना से खड़ा रहे, यतना से बैठे, यतना से सोए, यतना से खाए और बोले, तो वह पापकर्म का बन्ध नहीं करता। तीन गुप्ति बताई, तीन समाधारणता बताई, अशुभ योग को छोड़ने के लिए कहा। पापास्रव के निरोध की बात कही। सर्वज्ञ हैं, सब जानते हैं, पहले सही करेंगे, सही चलेंगे, सही खाएँगे, सही बोलेंगे तभी तो विद्यमान राग की निवृत्ति होगी। इसलिये साधना के लिए 1. लक्ष्य पर दृष्टि, 2. परिपूर्ण पुरुषार्थ, 3. अनन्त धैर्य आवश्यक है।

मोक्षमार्ग में बढ़ने के लिए शरीर का आश्रय छोड़ना होगा। उत्तराध्ययनसूत्र 4.7 में आया-लाभंतरे जीवियं बूहइत्ता अर्थात् जब तक नए-नए गुणों की उपलब्धि हो, तब तक जीवन का संवर्धन (पोषण) करे। एवं उत्तराध्ययनसूत्र 6.14 में 'पुव्वकम्मक्खयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे' अर्थात् पूर्वकृतकर्मों के क्षय के लिए ही देह को धारण करे।

शरीर प्रवृत्ति बिना नहीं रह सकता तब भगवान ने कहा-अशुभ प्रवृत्ति छोड़ो। उत्तराध्ययनसूत्र 24.26 में फरमाया-'गुत्ती नियत्तणे वुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो' अर्थात् तीन गुप्तियाँ समस्त अशुभ विषयों (अर्थों) से निवृत्ति के लिए कही गई हैं।

अशुभ योग छोड़ो, अशुभ उपयोग छोड़ो, अशुभ लेश्या छोड़ो, अप्रशस्त अध्यवसाय छोड़ो। इन अशुभ की कमी विशुद्धि से ही सम्भव है। विशुद्धि यह शब्द आगम में अनेक स्थलों पर उपलब्ध है-1. विशुद्धि लब्धि 2. विसोही करणं 3. जीवा सोहिमणुप्पत्ता (उत्तराध्ययनसूत्र 3.7) 4. कम्म विसोही मग्गण-समवायाङ्ग 14

संक्लेश की कमी रूपी विशुद्धि प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त में प्रत्येक जीव को होती है, यह अति सामान्य पुण्य है। विशुद्धि लब्धि जो यथाप्रवृत्तकरण (अधःप्रवृत्त करण) के पूर्व अनन्त बार हो जाती है, यह सामान्य पुण्य है। इन पुण्यों से बाहर की सुख-सुविधा का फल प्राप्त हो जाता है।

विशुद्धि का अनन्तगुणा बढ़ना, प्रतिसमय असंख्यात गुणी निर्जरा होना गुणश्रेणी है। निर्जरा होने रूप विशुद्धि शुद्ध उपयोग के रूप में व्याख्यायित कर दी गई। यह मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान को मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान में रूपान्तरित करने वाली हो जाती है।

इस शुद्ध उपयोग के समय योग शुभ है, लेश्याएँ प्रशस्त हैं, अध्यवसाय प्रशस्त हैं, परिणाम वर्धमान हैं, शुभ हैं, जिसे शास्त्रकार फरमाते ही हैं-सुभेहिं परिणामेहिं, पसन्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्जमाणीहिं। कितनी कठिनाई से विभाव में बहने वाला सही प्रवृत्ति कर पाता है। पूर्व पुण्य के फलस्वरूप प्राप्त सामग्री का दुरुपयोग तुरन्त खुट जाता है। पूर्व के संयम आराधन से जिसने विपुल पुण्य सञ्चित किया, वर्तमान में सजगता से जी रहा है, खर्चा कम है, अगले मनुष्य के भव में उत्कृष्ट पुण्य तक पहुँच मोक्ष जाने ही वाला है, वह सर्वार्थसिद्ध का अहमिन्द्र बन जाता है।

भगवतीसूत्र शतक 18, उद्देशक 7 में पुण्यकर्म क्षय का थोकड़ा चलता है उसमें बताया कि-वाणव्यन्तर देव अनन्त कर्मांश को 100 वर्ष में क्षपित करते हैं। उसी अनन्त कर्मांश को सर्वार्थसिद्ध के देव 5 लाख वर्ष में क्षपित करते हैं।

तत्त्वार्थसूत्र 4.21 स्थितिप्रभावसुख-द्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः॥

अर्थात् स्थिति, प्रभाव, सुख, द्युति, लेश्या, विशुद्धि, इन्द्रिय विषय और अवधि विषय में ऊपर-ऊपर के देव अधिकतायुक्त हैं। किन्तु वे गति, शरीर, परिग्रह और अभिमान में हीन-हीन हैं।

ऊँची जाति के देवता में न कुतुहल, न भोग, न चक्रमण, न संक्रमण, प्रायः पुण्य का दुरुपयोग नहीं है अतः 5 लाख वर्ष में जो पुण्य खुटा वह पुण्य वाणव्यन्तर के देवता ने फिजूल खर्ची, हास्य, क्रीड़ा, नृत्य, भोग में मशगूलता आदि पुण्य फल का दुरुपयोग पाप करके 100 वर्ष में खुटा दिया। पुण्य खुटता है पाप से-युवाचार्य श्री का कथन समझ में आ गया। पुण्य खूटता है पाप से, पुण्य जुड़ता है आप से, पुण्य बढ़ता है-विशुद्धि भाव के बढ़ने से। धवला और ध्यान शतक की गाथा कह रही है-

होति सुहासव-संवर विणिज्जराऽमर सुहाइं विउलाइं।
झाणवस्स फलाइं सुहाणुबंधीणि धम्मस्स॥

अर्थात् उत्तम धर्म ध्यान से शुभास्रव, संवर अर्थात् पाप कर्मों का निरोध, निर्जरा तथा अमर सुख मिलते हैं एवं शुभानुबन्धी यानी पुण्यानुबन्धी विपुल फल मिलते हैं।

दिगम्बर और श्वेताम्बर समान रूप से पुण्य, संवर निर्जरा की महिमा गा रहे हैं। वीतराग वचन सत्य है, तथ्य है, यथार्थ है। वीतराग वाणी के विपरीत यत्किञ्चिद् भी विवेचन हुआ हो तो-

भक्ति, विनय, बहुमान सङ्ग,
प्रभु वीर वाणी रमता चलूँ।
श्रुत का पठन, चिन्तन गहन,
उपसर्ग परीषह सहता चलूँ।
वृत्तियाँ हों कम, मिट जाए गम,
मुक्ति का साधन और कहाँ।



गर्म दूध का दही नहीं, गर्म स्वभाव का सन्त नहीं

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. द्वारा, स्वाध्याय-भवन, पुष्कर रोड अजमेर में 25 अक्टूबर, 2021 को रत्नाकर पच्चीसी पर फरमाए गए इस प्रवचन का संकलन श्रद्धालु श्रावक श्री सी. पी. कटारिया, अजमेर द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

जिज्ञासु उपासकों!

कोई आदमी पैसे का उपयोग कैसे करना है, इस बात को नहीं जानता, पैसे के महत्त्व को नहीं पहचानता है तो क्या होगा? वह गरीब या दरिद्र रहेगा। कोई भोजन के महत्त्व को नहीं समझता तो क्या होगा? वह कमजोर दुर्बल हो जाएगा। कोई मित्र के महत्त्व को नहीं जानता है तो क्या होगा? अकेला, अनजाना रहेगा, जान-पहचान नहीं होगी। धन, भोजन एवं प्रियजन के महत्त्व को नहीं जानने वाले की स्थिति तो इतनी ही है। परन्तु कोई प्रभु वचनों के महत्त्व को नहीं समझता, नहीं मानता है तो क्या होगा? वह दुर्गति का अधिकारी, दोषों का शिकार और दुर्बुद्धिधारी बन जाएगा।

प्रभु एवं गुरु के वचनों को मान-सम्मान देना है, आदर-भाव से धारण करना है, क्योंकि प्रभु वचनों को आदर-सम्मान नहीं देने वाला यहाँ भी परेशान-हैरान होता है और आगे भी दुर्ध्यान-अपध्यान का शिकार होता है।

हे जीव! जगत् में आकर तूने क्या किया है? अपनी पाप-पोथी को, कलंक-कथा को रत्नाकर पच्चीसी में आचार्यश्री एक-एक कड़ी द्वारा खोल रहे हैं। उसी कड़ी में आज चर्चा करनी है 22वीं कड़ी की- शास्त्रोक्त-विधि वैराग्य भी, करना मुझे आता नहीं। खल-वाक्य भी गत-क्रोध हो, सहना मुझे आता नहीं। अध्यात्म-विद्या है न मुझमें, है न कोई सत्कला। फिर देव, कैसे यह भवोदधि पार होवेगा भला। अपनी दास्तां बयां कर रहे हैं कि भगवान मेरा

वैराग्य कैसा है? मैं सन्त कैसा हूँ? मेरा वैराग्य, राग में उलझने वाला बन गया, जबकि वीतराग-सा वैराग्य होना था। सन्त तो बना, पर शान्त नहीं बना। स्वभाव हमेशा गर्म ही रहा।

मैं इन बहिनों से, माताओं से पूछूँ कि क्या आप दही जमाते हो? (सभा में से 'हाँ')। कैसे दूध का? (सभा में से सभी तरह के गाय-भैंस-डेयरी के दूध का)। अरे किसका नहीं, कैसा? ठण्डा या गर्म? (उत्तर) ठण्डे दूध का। जब गर्म दूध का दही नहीं जमता तो गर्म स्वभाव का सन्त कैसे हो सकता है? यानी 'गर्म दूध का दही नहीं, गर्म स्वभाव का सन्त नहीं। सन्त तो शान्त-उपशान्त-प्रशान्त होता है। छोटी-छोटी बातों पर जो उफन जाता है वह सन्त नहीं होता। जो उबलता है, उफनता है वह सन्त नहीं हो सकता है। उसने अभी तक वैराग्य को धारण नहीं किया। सौम्यता ही साधुता की पहचान है।

शान्त स्वभाव है तो सन्त जीवन भी श्रेष्ठ है, वरना मात्र वस्त्र बदले हैं। सन्त वस्त्र से पहचाना जरूर जाता है, परन्तु आदर तो स्वभाव-व्यवहार से ही पाता है। कपड़े तो कर्तव्य पालन की याद दिलाते हैं। मात्र कपड़ों से नहीं, रत्नाकर पच्चीसी का यह पद्य कर्तव्य से, वैराग्य से सन्त बनने की प्रेरणा दे रहा है।

वैराग्य के लिए आग्रहमुक्त जीवन और विग्रह-मुक्ति का संकल्प जरूरी है। विग्रह यानी झगड़ा-युद्ध आदि ही नहीं, विग्रह का अर्थ शरीर भी है। वैराग्य में जिद नहीं दृढ़ता होनी चाहिए। जिद तो पूरी होते ही सुस्ती लाएगी और दृढ़ता हमेशा चुस्ती लाएगी।

राग-भाव से संयम लिया तो संयम नहीं पलेगा, क्योंकि किसी के प्रति राग है और संघ व्यवस्था से किसी अन्य के साथ जाना पड़ा तो संयम में शिथिलता आएगी। संयम तो वैराग्य से ही लेना चाहिए। राग का संयम कहेगा, मुझे तो उसी के पास दीक्षा लेनी है, उसी के पास रहना है, उसी के साथ जीना है। भगवान कहते हैं वैराग्य का संयम यह पुकारता है-प्रभो! मुझे जहाँ रखो संयम में रखो, मेरे संयम के पज्जवे जहाँ बढ़ते हों वहाँ रखो। व्यक्ति के प्रति राग संयम और संघ में नुकसानकारी होता है।

मैं मेरा चिन्तन करूँ, आप अपना करें, मेरा संयम कितना स्थिर है? स्वभाव कितना सुन्दर है? सुन्दर स्वभाव के कारण संघ समर्पित, गुरुनिष्ठ हेमन्त जी नाहर किसी को भी संवर के लिए कहते हैं तो कभी नहीं आने वाला भी हाँ भर देता है। क्यों? सुन्दर स्वभाव। एक व्यक्ति के स्वभाव का यह प्रभाव है, वहीं हम तो साधक हैं हमारा स्वभाव कैसा होना चाहिए? उसका प्रभाव कितना होना चाहिए?

वैराग्य को, संयम को धारण करने से पहले तीनों योगों पर नियन्त्रण होना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है-1. तन नीरोगी, 2. मन योगी और 3. वचन उपयोगी। शरीर की नीरोगता संयम में प्रतिसेवना कम करवाती है। आरोग्य, आराधना में सहायक होता है। मन तो मर्कट की तरह है, इसे स्थिर करना ही साधना के चरम को स्पर्श करना है। आत्म-संयम ही मन को योगी बनाता है। भोग में हरदम जिसे रोग नज़र आता है वह ही योगी बना रह सकता है। शब्द तो संयम और सम्बन्ध को श्रेष्ठ बना सकते हैं, इसलिए उपयोगपूर्वक उपयोगी वचनों का प्रयोग संयम जीवन को सुरक्षित कर देता है।

जिन श्रेष्ठ परिणामों में संयम लिया वे परिणाम दिनोंदिन बढ़ने चाहिए। क्योंकि वैराग्य का, संयम का, दीक्षा का प्रथम दिन जिन उच्च भावों के साथ बीता था वैसे ही परिणाम आज भी स्थिर हैं तो समझना, संयम का कुछ लाभ मिला है।

कहते हैं कि प्रारम्भ नहीं प्रवास-यात्रा महत्त्वपूर्ण

है। संयम में पहला दिन तो सबका उत्तम ही होता है, किन्तु निरन्तरता (Continuity) कैसी है? अन्तिम दिन, अन्तिम क्षण वैसे ही परिणाम रहने चाहिए। प्रारम्भ में प्रेरणा भी मिल सकती है, पर प्रवास-यात्रा में रोज-रोज प्रेरणा नहीं मिलती और अगर रोज प्रेरणा करे तो भी वह असर नहीं करती, क्योंकि उससे परिचित हो गए हैं। इसलिए प्रवास-यात्रा बहुत महत्त्वपूर्ण है। संयम लेना ही महत्त्वपूर्ण नहीं है, निभाना-पालना महत्त्वपूर्ण है।

हम यहाँ बैठे संयमी चिन्तन करें कि मेरा संयम का आज का दिन कैसा है? विचार करना परिणाम कैसे स्थिर बनें। अनुकूल परिस्थिति में तो हर कोई निभ जाता है, प्रतिकूल परिस्थिति जिसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती, वह है सन्त, वह है वैराग्य, वह है संयम। वरना विहार करके आए और कोई गृहस्थ चरण स्पर्श कर ले तो सारा लावा फूट पड़ता है, क्रोध आ जाता है। इतना तक बोल देते हैं-“दिखता नहीं, अभी सन्त थके हुए आए हैं, पसीने से लथपथ हैं। काम कर रहे हैं। और इसे मत्थण वन्दामि की पड़ी है-चल हट।” ये संयमी के वचन नहीं हो सकते।

समता में ही संयम है। शान्त बनूँ। जब तक पूर्ण शान्त न बन जाऊँ तब तक अपने स्वभाव को शान्त बनाए रखूँ। विपरीत परिस्थिति में समता बरकरार बनी रहे, परिणाम शुद्ध रहें तो मैं साधु हूँ।

देखो! परिणाम बिगाड़ने से, क्रोध करने से लोगों में छवि खराब होती है कि महाराज क्रोधी हैं, दूसरा खुद के मन में दुर्विचार-दुर्ध्यान चलते रहने से कर्मबन्ध होता है, तीसरा प्रभु आज्ञा का उल्लंघन होता है। संयम लेकर शान्ति नहीं रखी तो यहाँ भी जीवन गँवाया और आगे का भी जीवन बिगड़ा।

हे प्रभो! शास्त्रानुसार वैराग्य नहीं, गुर्वाज्ञा अनुसार संयम भी नहीं तो कैसे यह भव समुद्र पार होगा? कैसे इस आत्मा का कल्याण होगा?

प्रभो! तुम से बस यही प्रार्थना है कि मेरी संयम के प्रति श्रद्धा जगे, वैराग्य के प्रति रुचि बढ़े। अपार पुण्य राशि से यह मानव भव मिला। अनन्तानन्त पुण्य राशि

सञ्चित करने पर तत्त्वत्रयी और रत्नत्रयी पाई, अब उसे कहीं प्रमाद में रहकर मैं खो न दूँ, इतनी-सी कृपा करना।

अगर अब चूक गया तो फिर भव परम्परा बढ़ जाएगी। भगवान तेरी शरण में आया हूँ इसे चरणों में स्थान देना। मेरे हृदय से दोषों और दुर्बुद्धि को दूर करना। मैं इतना सा कह रहा हूँ कि मेरे हृदय स्थान को आप मत छोड़ना। मेरा हृदय आप से रिक्त न हो। अनेक भव हार

गया अब और नहीं हारना चाहता।

रोओ, इतना रोओ कि रूमाल नहीं रूह भीग जाए, आँखें ही नहीं, रोम-रोम भीग जाए।

असंयमी संयम पाने के लिए, संयमी संयम को जीने के लिए रोए तो भव-मुक्ति की भावना सार्थक हो सकती है। इन्हीं शुभ परिणामों के साथ वैराग्यभाव, मुमुक्षु भाव बढ़ता रहे...।

रूस-यूक्रेन युद्ध : तीन कविताएँ

डॉ. रमेश 'मयंक'

धरती की जरूरत

हवा के पास कितनी ठण्डक थी
जहाँ लगता था आसपास उपस्थित है
प्रेम और शान्ति,
एक विचार ने पलट दिया
घटनाक्रम-अब हवा में आग है,
कटुता है, कल्मष है, धुआँ है
सड़कों पर बिखरे चीथड़े-दाग हैं।
आसमान में दिखता है आता हुआ उजाला
जो सिर्फ अन्धकार लाता है,
मौत, चीख, सन्नाटा, खण्डहर
कहर बरसाता है, आओ-
शीतल जल वाली लहरों आओ
धरती को अग्नि नहीं जल स्नान की जरूरत है
खेतों को नहीं चाहिए बारूद
बीज बोओ हरे पत्तों वाली
खुशहाली का अंकुरण हो
ऐसी राह अपनाओ।

परस्पर विश्वास करो

मैं देखता हूँ कि यह युद्ध रूस और यूक्रेन के
अस्त्र-शस्त्रों का नहीं

इसमें दो प्रतिष्ठाएँ लड़ रही हैं
ताकतवर बनी रहने के लिए,
कहीं नुकसान तो नहीं पहुँचा देंगे
मन की बात मन में रखने
दबी ज़बान भी नहीं कहने की,
उठो-बुद्ध, महावीर, गाँधी को याद करो-
“धू-धू करती हिंसा की लपटों का
नाश करो, नाश करो
आशंका नहीं-परस्पर विश्वास करो।”

ज़िद

सोचता रहा-कितनी अजीब है ज़िद
हम नहीं रुकेंगे : हम नहीं झुकेंगे
और बहस के अन्त में रह गए
बन्द मुट्टियों वाले हाथ,
हवा में लहराते हुए
जहाँ कहने को अब कुछ नहीं था
कितना कुछ-कितना कुछ
कह रही हवाएँ हकीकत अफवाहें
सूनी सड़कों पर सन्नाटों के बीच
धमाकों,
मातमी धुनों के ताण्डव राग को
रोकने-कोई तो आए.....
फूलों के उड़ते रंगों की रफ्तार थम जाए॥

-बी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

चिन्ता और चिन्तन में बहुत फर्क है

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 29 अगस्त, 2021 को राता उपासरा, पीपाइसिटी में फरमाए गये प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

विनाशी से विमुख होकर अविनाशी की ओर चरण बढ़ाने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी तीर्थेश प्रभु महावीर को वन्दन। जीवन में जिनके है सादगी, साधना में जिनके रहती है ताजगी ऐसे अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त एवं दूषण रहित-भूषण सहित जीवन जीने वाले रत्नाधिक मुनि पुंगवों को वन्दन।

धर्मजिज्ञासु बन्धुओं!

जब कोई अपनी नज़र से अपने को देखता है तो भीतर में चिन्तन प्रारम्भ होता है और जब अपनी नज़र से दूसरों को देखता है तो चिन्ता प्रारम्भ होती है। चिन्ता और चिन्तन की राशि एक ही है। राशि एक है, पर राह अलग-अलग। संसार में ऐसे कई व्यक्ति हैं जिनके नाम की राशि तो एक है, परन्तु जीवन जीने की शैली अलग-अलग है।

राम और रावण दोनों की राशि एक है, कृष्ण और कंस की राशि भी एक है तो गाँधीजी और गोडसे की राशि भी एक है। ओसामा-बिन-लादेन और ओबामा की कहो या गौतम गणधर और गोशालक की राशि में भी कोई अन्तर नहीं है। एक प्रगति का मार्ग है तो दूसरा अवनति का। एक उगता सूरज है तो दूसरा अस्त होता सूरज है।

चिन्ता और चिन्तन की राशि एक है, पर उनके काम अलग-अलग। चिन्ता और चिन्तन में बहुत फर्क है। चिन्ता केवल समस्या ही देती है, समाधान नहीं। क्यों, तो आपको दूसरों को देखने की एक आदत-सी पड़ गई है। देखना ही नहीं, कहीं से समाचार सुनकर भी आदमी चिन्तित हो जाता है।

आदमी चिन्ता जल्दी करता है, चिन्तन करने में उसे देरी हो जाती है। हमारा विषय जल्दी और देर का

चल रहा है। हम चिन्ता करें, पर चिन्तन बाधित न हो। हम अपनी नज़र से जब दूसरों को देखते हैं तो चिन्ता घटित होने लगती है।

आपने नमिराज ऋषि का वृत्तान्त कई बार सुना है। उन्हें चूड़ियों की खनखनाहट सुनकर वैराग्य आ गया। उन्हें वेदना थी और वेदना भी दाहज्वर जैसी। शरीर में दाहज्वर का रोग हो तो असह्य पीड़ा होती है। दाहज्वर में पूरा शरीर जल रहा है, ऐसा अनुभव होता है। शरीर का तापमान बढ़ता ही जाता है।

नमिराज ऋषि को दाहज्वर की वेदना हो गई। वेदना से स्वस्थ कैसे हों? वैद्यराजजी ने बावना चन्दन का लेप करने का सुझाव दिया। चन्दन कई प्रकार के होते हैं। चन्दन असली भी होता है और नकली भी। बावना चन्दन कैसा होता है? गुरुदेव फरमाते हैं कि बावन मण तेल को उबाला जाय और उस खोलते तेल में एक बूँद बावना चन्दन की डाल दी जाय तो खोलता तेल शान्त हो जाता है। दाहज्वर में उस बावने चन्दन का लेप तुरन्त शीतलता देता है। बावना चन्दन तैयार कैसे होता है? यह सेवा का कार्य है, दूसरा सेवा दे या नहीं, स्वयं रानियों ने चन्दन घिसना प्रारम्भ किया।

नमिराज ऋषि को पहले से दाहज्वर की वेदना, ऊपर से रानियों के चन्दन घिसने से चूड़ियों की खनखनाहट पीड़ाकारक थी। उन्होंने चूड़ियों की आवाज सुनी तो कहा कि यह चूड़ियों की खनखनाहट बन्द करो। रानियों ने सुहाग की एक चूड़ी रखकर चन्दन घिसना शुरू किया तो नमिराज ने पूछा-क्या चन्दन घिसना बन्द कर दिया? उन्हें बताया गया-नहीं राजन्! रानियाँ चन्दन

घिस रही हैं, परन्तु उनके हाथ में सुहाग चिह्न के रूप में केवल एक चूड़ी है, बाकी चूड़ियाँ निकाल दी गई हैं। अब राजा का चिन्तन शुरु होता है कि जो सुख अकेले में है वह जग के झमेले में नहीं। एकत्व की भावना जागृत होती है और चिन्तन चलता है कि एकत्व भावना आने पर संसार की पीड़ाओं से छुटकारा मिल सकता है।

देखिए, नमिराज जो पहले थे, वे ही हैं, लेकिन उनके भीतर के भावों में परिवर्तन आया तो वेदना की चिन्ता चिन्तन में तब्दील हो गई। चूड़ियों की खनखनाहट सुनकर नमिराजर्षि को चिन्ता सताने लगी, वेदना असह्य होने लगी और जैसे ही चूड़ियों की आवाज बन्द हुई, चिन्ता की धारा चिन्तन में बदल गयी।

बन्धुओं! जीवन में चिन्ता कल की तकलीफ देती है, साथ ही वह आज की निश्चिन्तता भी ले जाती है। हमारे प्रवचन का विषय है-जल्दी और देर। चिन्ता जल्दी शुरु होती है जबकि चिन्तन देर से। तनाव जल्दी आ जाता है। ज्ञानीजन इसीलिये कहते हैं-चिन्ता मत करो। नो टेंशन। फिक्र से क्या होता है? आप बेफ्रिक हो जाएँ तो फिर दुनिया की कोई परवाह नहीं।

आपको पता है-टेंशन क्या होती है? टेन यानी दस। सन कहते हैं सूर्य को। दस सूर्यों के बराबर जो गर्मी होती है उतनी गर्मी का अहसास व्यक्ति तनाव में करता है। उस ताप को कम कैसे किया जा सकता है?

ताप तपाता है। साउथ से जो भी मारवाड़ आता है उसे इन दिनों अधिक गर्मी लगती है। मई-जून में तो गर्मी तीव्र होती है, परन्तु अगस्त की गर्मी भी कइयों को सताती है, सही नहीं जाती। जब एक सूर्य की गर्मी सहन नहीं हो तो दस सूर्यों जितनी गर्मी कैसे सहन हो? ज्ञानियों ने ठीक ही कहा-

चिन्ता से चतुराई घटे, घटे रूप और ज्ञान।

चिन्ता बड़ी अभागिनी, चिन्ता चिता समान।।

चिन्ता से चतुराई तो घटती ही है, रूप भी कम होता है। आपने किसी चिन्तातुर के मुँह पर मुस्कान देखी है क्या? चिन्ता इतनी करो जिससे काम हो जाय। आप

चिन्ता करो, परन्तु ऐसी चिन्ता भी किस काम की जिससे आपका जीवन तमाम हो जाये। अनुभवियों ने ठीक ही कहा-

फिक्र में होते हैं तो खुद जलते हैं।

बेफिक्र होते हैं तो दुनिया जलती है।।

देखिए, जीवन में चालाकी अच्छी नहीं होती, चालाक मायावी होता है। वह सोचता कुछ है, कहता कुछ है तो करता कुछ और ही है। उसके कहने-सुनने-समझने में फर्क होता है। मन-वचन-काया तीनों से उसका अन्तर दिखता है। आप चतुर बनें, चालाक नहीं। चतुर धोखेबाज नहीं होता जबकि चालाक धोखेबाजी करता है। आप जानते हैं धोखा क्या होता है? जो धोकर नहीं खाता, वह धोखा खाता है। आपने देखा होगा बहन जब भी सब्जी बनाती है, सुधारने के पहले अच्छी तरह से धोती है। सब्जी ही नहीं, चावल को भी धोना पड़ता है। धोकर वस्तुओं का प्रयोग करने वाला सजग होता है और वह धोखा नहीं खाता है। चालाक धोखा देता है।

इस दुनिया में सज्जन भी रहते हैं तो दुर्जन भी। सन्त-महात्मा भी इसी दुनिया में रहते हैं। मैंने कहीं एक वाक्य पढ़ा था। प्रभु हमारी गलतियों को माफ कर सकता है, चालाकियों को नहीं। चतुर चाल समझता है जबकि चालाक चाल चलता है। इसलिये कहा-चिन्ता से चतुराई घटे। चतुरता सद्गुण है। चालाकी दुर्गुण है।

चिन्ता और चिता में बहुत अन्तर है। चिन्ता और चिता का संवाद अगर समझना है तो चिन्ता जीवित को जलाती है और चिता मुर्दे को। चिन्ता बारूद है जो बार-बार जलाती है, हर रोज जलाती है जबकि चिता एक बार ही जलाती है। चिन्ता आदमी को जकड़ लेती है तो चिता एक बार में विदा कर देती है। चिन्ता और चिता में एक और अन्तर है कि चिन्ता जिन्दगी से जुड़ा प्रथम सत्य है तो चिता मृत्यु से जुड़ी है और अन्तिम सत्य है।

हमारे जीवन में चिन्ता आती है तो चिन्तन भी चलता है। आप दोनों में अन्तर देखना चाहते हैं तो कहना होगा-चिन्ता बाहर की होती है और चिन्तन

भीतर में होता है। एक फर्क यह भी है कि चिन्ता कष्ट देती है तो चिन्तन से कष्ट मुक्ति होती है। चिन्ता कष्ट में डालती है तो चिन्तन कष्ट-मुक्त करता है। चिन्ता शोक में डालती है तो चिन्तन अशोक में। चिन्ता आग है तो चिन्तन चिराग का प्रकाशपुञ्ज है। चिन्ता घुन है तो चिन्तन धुन है। आप जानते हैं लकड़ी में घुन लग जाती है तो ऊपर से अच्छी दिखने वाली लकड़ी अन्दर से खोखली होती है। ऐसे कई अन्तर हैं जो आप समझकर जान सकते हैं। चिन्ता में क्या होगा, यह सोचते हैं तो चिन्तन में क्या किया जा सकता है, यह विचारा जाता है।

चिन्ता में तनाव होता है। तनाव में आशंका, अविश्वास और असफलता रहती है। जो लोग आत्महत्या करते हैं, उनमें चिन्ता या तनाव मुख्य कारण है। आप चिन्ता से चिन्तन करना शुरू कर दें आपको फर्क समझ में आ जायेगा। चिन्ता बाहर की होती है जबकि चिन्तन भीतर में चलता है। ज्ञानीजन कहते हैं कि संसार में हर समय किसी-न-किसी को कोई-न-कोई

चिन्ता रहती है। मैं थोड़े में बताने का प्रयास करूँगा। वीरों को आन की चिन्ता होती है तो किसानों को लगान की। नेताओं को मतदान की चिन्ता बनी रहती है। अभी राजस्थान में पंचायत सदस्यों और जिला परिषद् सदस्यों के चुनाव चल रहे हैं। नेताओं को मतदान की चिन्ता रहती है तो नाविक को तूफान की चिन्ता बनी रहती है। मुसाफिर को सामान की चिन्ता होती है, इसीलिये कहा जाता है कि कम सामान-सफ़र आसान। माँ-बाप को सन्तान की चिन्ता रहती है तो कंजूस को दान की चिन्ता है। विद्यार्थी को परीक्षा की चिन्ता है तो व्यापारी को नुकसान की। ड्राइवर को चालान की चिन्ता रहती है तो कायर को जान की। सबको कुछ-न-कुछ चिन्ता है तो हम सन्तजन भी चिन्ता मुक्त नहीं हैं। हमें व्याख्यान की चिन्ता रहती है। हर व्यक्ति को चिन्ता है, इसलिये चिन्ता मुक्त बनने के लिए चिन्तन में हमें डुबकी लगानी होगी। जो भी चिन्ता मुक्त हैं वे सकारात्मक चिन्तन करते हुए निरन्तर गति-प्रगति करते रहें।

इसी मंगल मनीषा के साथ.....।

वक्त यूँ ही गुज़र रहा

श्री त्रिलोकचन्द जैन

वक्त यूँ ही गुज़र रहा

कुछ पता ही नहीं चल रहा

ज़िन्दगी जी रहे हैं या ढो रहे हैं

जाग रहें हैं या खुली आँखों से सो रहे हैं

कुछ पा भी रहे हैं या पाये हुए को भी खो रहे हैं

असमंजस सी स्थितियाँ हैं

अनसुलझी परिस्थितियाँ हैं

कोई निर्णायक मोड़ नहीं, जिंदगी में

कोई नियत दौड़ नहीं, लक्ष्य की बंदगी में

अर्ध जीवन बीत गया, इसी कश्मकश में

कुछ पल भी नहीं जी पाया, इतना रहा विवश मैं

लेकिन अब बदल डालूँ मैं मिथ्या उसूलों को

भूल जाऊँ हो चुकी मेरी भूलों को

अब तो मेरे जीवन में स्वर्ण सवेरा हो जाए

अब तो मेरे पैरों को मञ्जिल और राह मिल जाए

अब तक ढोया, अब जी लूँ जीवन

रेंग रहा था, अब उड़ जाऊँ गगन

हर पल का मक़सद अब अलग हो

उत्साह से परिपूर्ण मेरा हर डग हो

गति अब प्रगति रूप में मेरा जीवन सजाये

वास्तव में इस जीवन की सार्थकता को पाएँ

मुट्ठी भर रस्सी अभी मेरे हाथ में है

इसीलिए नीर से परिपूर्ण गगरी मेरे साथ में है

शेष को विशेष बनाने का जुनून जगा लूँ

समय के साथ चलकर सभी लक्ष्यों को पा लूँ

-37/67, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

(राज.)

गुरु सुदर्शन : साम्प्रदायिकता-मुक्त जीवन

बहुश्रुत श्री जयमुनिजी म.सा.

पंजाब की स्थानकवासी परम्परा में पूज्य मयारामजी म.सा. की परम्परा में व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म.सा. के सुशिष्य संघशास्ता श्री सुदर्शनलालजी म.सा. की जन्म-शताब्दी 4 अप्रैल, 2022 को प्रारम्भ हो रही है। वे सन्त परम्परा के महान् नायक थे। बहुश्रुत श्री जयमुनिजी म.सा. ने इस अवसर पर संघशास्ता श्रद्धेय श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के असाम्प्रदायिक एवं आचारनिष्ठ व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. से उनके मधुर आत्मीय सम्बन्ध रहे, जिनका निर्वाह उनके पट्टधर पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं दोनों परम्पराओं के सन्त कर रहे हैं।

-सम्पादक

प्रत्येक युग में, हर क्षेत्र में हर धर्म एवं समाज को कुछ ऐसे महापुरुषों का मार्गदर्शन मिला है, जिनके कारण वे युग, क्षेत्र, धर्म एवं समाज रूपान्तरित भी हुए हैं, कृतार्थ भी हुए हैं तथा आदर्श स्थिति में भी पहुँचे हैं। पिछली सदी में उत्तर भारत में स्थानकवासी समाज को ऐसे ही एक दिव्य युगपुरुष का अवलम्ब मिला था। जिनका नाम सुदर्शन था तथा काम भी सुदर्शन था। संघशास्ता, शासन प्रभावक, गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी महाराज आचार और प्रचार के समन्वित सेतु थे। नवीनता और प्राचीनता के तटस्थ प्रेक्षक थे। परम्परा और अग्रगामिता के संरक्षक थे। निश्चय-व्यवहार संयम, द्रव्य-भाव साधना, बाह्याभ्यन्तर तपस्या उनमें विलक्षण रूप से एकीकृत हो गई थी।

थे आदर्श पुरातनता के, और प्रेमी नवता के।

बन्धु थे वे प्राणिमात्र के, आश्रय मानवता के।।

उनके जीवन के किसी भी पक्ष को निहार लें, कहीं भी नकारात्मकता नहीं थी। उनकी सोच, भाषा और व्यवहार सकारात्मक था। उनकी मान्यता थी कि धर्म हमें सकारात्मक दृष्टिकोण से भरपूर करता है। सकारात्मक नज़रिया और आस्तिकता को वे पर्यायवाची मानते थे। वे अक्सर कहते थे कि हर आदमी में, हर परम्परा में दोष भी होते हैं और गुण भी होते हैं। दोषों का प्रतिशत कम और गुणों का प्रतिशत ज्यादा

होता है। आस्तिक व्यक्ति गुणात्मक अंश को पकड़ता है एवं नास्तिक व्यक्ति दोषात्मक अंश को। उन्होंने किसी धर्म सम्प्रदाय या परम्परा की आलोचना, विरोध या खण्डन नहीं किया। विशुद्ध रूप से वे एक सम्प्रदायातीत सन्त थे। उनकी घरेलू पृष्ठभूमि की ओर ही देखें—उनके पूर्वज विशुद्ध वैष्णव धर्मी थे। उनके दादा श्री जग्गूमलजी पक्के जैन थे। पिता श्री चंदगीरामजी स्वर्ण पदक विजेता वकील होते हुए भी जैनागमों तथा मागधी भाषा के ज्ञाता थे, माँ सुन्दरी पीहर में सनातनी एवं ससुराल में जैन थी। इनकी माँ इन्हें ठाकुर द्वारे ले जाती तो, दादा गुरु दर्शन करवाने स्थानक लाते थे। इनके बचपन को ध्यान में रखकर शायद ये पंक्तियाँ लिखी गई होंगी—

इनकी नज़रों में एक हैं, मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे।

बच्चे मन के सच्चे, सारे जग की आँख के तारे।।

जैनों की स्थानकवासी परम्परा से नवकार मन्त्र, तिकखुत्तो, करेमि भंते, पच्चीस बोल सीखे तथा दिगम्बर स्कूल में मास्टर शिवराम रचित भगवान के भक्ति के गीत भी याद किए। रोहतक में स्थिरवासी श्री रामनाथजी म. की चरणरज ली तो बगीची में पधारने वाले दिगम्बर ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद वर्णी की वन्दना कर भी धन्य बने। इस प्रारम्भिक उदारता के फलस्वरूप उन्होंने जिन-जिन क्षितिजों को निहारा, जिन-जिन प्रसङ्गों को जीया, जिन-जिन व्यक्तित्वों को जाना, जिन-जिन दर्शनों

साहित्यों को खज़ाला, उस-उस की नकारात्मकता उपेक्षित की और सकारात्मकता संजोली। ऐसी इन्द्रधनुषी चिन्तनधारा के कारण उनका हर पहलू सप्तरङ्गी नहीं, शतरङ्गी बन सका था।

उनका जन्म हरियाणा प्रान्त के रोहतक शहर में 4 अप्रैल 1923 को हुआ। उनके पितामह थे श्री जग्गूमलजी जैन (अग्रवाल, गर्ग गोत्रीय), जन्मना सनातन वैष्णव थे। किन्तु परिवार में जैन संस्कार भी प्रगाढ़ रूप से समाए। प्रतिदिन सामायिक के अलावा स्थानक में साधु-साध्वियों की सेवा में निरन्तर उपस्थित रहते थे। जब भरी जवानी में पत्नी का देहान्त हो गया तो आजीवन शीलव्रत ले लिया और रात्रिभोजन-त्याग के साथ कच्ची-पक्की हरी वनस्पति का प्रत्याख्यान भी ले लिया। आपने अपने तीनों सुपुत्रों में भौतिक शिक्षा से ज्यादा धर्मध्यान के संस्कार भरे। जब बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो गए तब 51 वर्ष की आयु में दीक्षा अङ्गीकार कर ली। पितामह से प्राप्त इस सुदृढ़ भूमिका के अलावा गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म. को पिता श्री चंदगीरामजी एवं माता श्रीमती सुन्दरीदेवीजी का वात्सल्य प्राप्त हुआ। पिताश्री को समग्र उत्तराध्ययनसूत्र कण्ठस्थ था। माता श्रीमती सुन्दरीजी, शान्ति, समता एवं सेवा में आकण्ठ डूबी रहने वाली महिला थी।

लेकिन सुन्दरी देवी और सुदर्शन का साथ लम्बा नहीं चल सका। बालक सुदर्शन को माँ के हाथ का भोजन कुल चार साल ही मिला। 1927 में सुन्दरी देवी दिवंगत हो गई।

बाबा जग्गूमलजी ने स्थानक ले जाने की आदत डाली थी, जिससे वे स्वयं ही स्थानक, साधु, सामायिक, स्वाध्याय से जुड़ गए। इन संस्कारों में गहराई दो कारणों से आई-1. पढ़ाई के उद्देश्य से दिल्ली में मास्टर चाचा शामलालजी के पास रहे, वहाँ बारादरी स्थानक में उच्चकोटि के महामुनियों के प्रवचन मिले। 2. बाबाजी ने स्वयं दीक्षा ले ली और इशारा कर दिया कि अब तेरा नम्बर है। विचार तो परिपक्व हो गए, पर

दीक्षा के लिए परिवार की अनुमति मिलना मुश्किल था। आज्ञा न मिलने का मुख्य कारण बालक के प्रति रागभाव नहीं था, अपितु सामाजिक अप्रतिष्ठा का खतरा था। चूँकि माँ का देहान्त हो चुका था, अतः समाज का गैर जिम्मेदार तबका परिवार पर लाञ्छन लगा सकता था कि बिना माँ के बेटे को दीक्षा दे दी। आज्ञा न मिलने पर कुछ-कुछ निराशा बनती, पर अपने पुरुषार्थ पर अटल विश्वास कायम रखा। एक दिन वीर सुदर्शन धर्मवीर बनकर व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म. और पितामह श्री जग्गूमलजी म. के पावन सान्निध्य के अधिकारी बन गए।

18 जनवरी, 1942 के दिन संगरूर में दीक्षा हुई तो जैन गगन में कई-कई सूर्यों की आभा छिटक गई। धरा धन्य हुई, जिनवाणी जयवन्त हो गई। युगों-युगों के बाद कोई विलक्षण युवा जिनशासन में दीक्षित हुआ था।

उत्तर भारत के फलक पर श्री हरिदासजी म. लाहौरी ने स्थानकवासी आचार-विचारों की बुनियाद रखी थी। उनकी सोलहवीं पीढ़ी के तौर पर दीक्षित श्री सुदर्शन मुनिजी कुछ अतिविशिष्ट योग्यताएँ लेकर आए थे। इस दीक्षित युवा मुनि ने दादा गुरुदेव श्री नाथूलालजी म. को दाद दिलवाई, गुरुदेव श्री मदनलालजी म. को महिमान्वित किया, पितामह श्री जग्गूमलजी म. को इतिहास में जगह दिलवाई।

अपने प्रतिभा बल से जैन आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन किया। संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी के गहन ग्रन्थ पढ़े। विविध विषयों का पारायण किया। अपना बौद्धिक क्षितिज तो व्यापक बनाया ही, तीन साल बाद अपने गुरुभ्राताओं को अध्यापन कराने का दायित्व भी वहन किया। 1947 में श्री मयाराम गण के गणावच्छेदक श्री बनवारीलालजी म. की इतनी सेवा शुश्रूषा की कि उन्होंने कहा-“सुदर्शन, तेरी सेवा से मेरी आत्मा अत्यन्त सन्तुष्ट है।” देश की आजादी का यह वर्ष विभाजन का भी वर्ष था। विभाजन की विभीषिका से

थराए मुस्लिम परिवारों की आपने रक्षा करवाई तथा मुनक समाज के निर्माण का कार्य सम्पादित किया।

फिर उनके जीवन में एक विशेष स्थान का जुड़ाव हुआ। वह था-दिल्ली चाँदनी चौक, बारादरी महावीर भवन, वहाँ 9 साल तक ठहरे। देहदृष्टि से भले ही ठहरे, किन्तु वे पूरे काल में गति-प्रगतिशील रहे। ठहरे इसलिये कि उनके बाबा श्री जग्गूमलजी म. विहार करने में असमर्थ हो चले थे। उनकी सेवा का दायित्व वहन किया।

अपने आध्यात्मिक, बौद्धिक, मानसिक विकास के लिए उन्होंने तत्र स्थित विशाल पुस्तकालय के बहुमूल्य ग्रन्थों का अध्ययन किया। स्थानीय विशाल संघ में धर्मानुष्ठान, ज्ञानध्यान को विस्तार और गहनता प्रदान की। बालकों एवं युवकों को कुव्यसनों से दूर रखा। देश के भिन्न-भिन्न भागों से आने वाले साधु-सन्तों के साथ आत्मीयता स्थापित की। सेवा का लाभ लेकर सम्बन्धों में मधुरता घोली। मयाराम गण, मदन गुरु परिवार की श्रीवृद्धि में नए-नए मील के पत्थर कायम करते हुए उच्च घरानों के युवकों को वैराग्य से भावित कर प्रव्रजित किया।

बाबाजी म. के देवलोक के बाद ऊर्जा पुञ्ज उस महान् आत्मा ने उत्तर भारत के अन्य प्रदेशों में सघन विचरण कर धर्मक्रान्ति की अलख जगाई। उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल में सात्त्विक संयमीय परम्पराओं का परचम फहराकर युवा पीढ़ी को सम्यक् दिशा प्रदान की।

1963 में उनके जीवन में नया मोड़ आया। जब उनके गुरुदेव व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म. ने अपने देवलोक गमन से पूर्व ही मुनि-संघ का भार उन पर डाल दिया। धीरे-धीरे समाज में विशुद्ध चारित्र-पालना के लिए उनकी पहचान बन गई।

व्यवहार की मधुरता इतनी गजब की थी कि जो एक बार निकट आया वह सार्वकालिक सेवक बन गया। अपरिचित जन समीप आने लगे। धर्मध्यान के मेले उनके

सान्निध्य में लगने लगे। हालाँकि उनकी धर्मध्यान, प्रसार शैली आडम्बरहीन थी। श्रावकों को सामायिक से जोड़ने की उनके पास बेजोड़ कला थी। पूर्ण गणवेश वाली सामायिक को ही वे प्रोत्साहित करते थे। चातुर्मास, पर्युषण, संबत्सरी पर पौषधों की बहारें भी उनके दरबार की खास पहचान थी। उनका विहार क्षेत्र बहुलतया उत्तरी भारत रहा। हाँ, एक बार दो साल के लिए राजस्थान का एक छोर जयपुर, अलवर, हिण्डौन, सवाईमाधोपुर, टोंक, भरतपुर उन्होंने अवश्य छूआ था। अपने प्रथम शिष्य श्री प्रकाशमुनिजी म. को दूर-दूर क्षेत्रों में विचरण हेतु दो बार भेजा, किन्तु उनकी स्वयं की गहन एवं निरन्तर उपस्थिति का मेघ उत्तरभारत में ही बरसा। इस कारण यहाँ का जनमानस उनकी विचार एवं आचारशैली का कायल रहा। स्थानकवासी घरों में उन्हें भगवान का सा दर्जा मिला। दिगम्बर, तेरापन्थ घरों में भी श्रद्धेय-वन्दनीय रहे। सनातन, आर्य समाजियों में भी सम्माननीय रहे। उत्तरभारत में स्थानकवासी समुदाय कई अर्थों में साम्प्रदायिकता से मुक्त रहा है। साम्प्रदायिकता मुक्त समाज का निर्माण करने में आपका बहुत बड़ा योगदान रहा है। सम्प्रदाय मुक्तता का स्वरूप समझने के लिए उत्तरभारत की सामाजिक स्थिति से अवगत होना आवश्यक है। यहाँ सैकड़ों हजारों वैष्णव परिवार जैन विचारधाराओं के समर्थक और पोषक हैं। इसी तरह बहुत बड़ी संख्या में जैन परिवारों में भी हिन्दुओं की परम्पराएँ एवं रस्मोरिवाज चलते हैं। गुरुदेव श्री सुदर्शन लालजी म. ने इस भ्रातृभाव, पारस्परिक सामञ्जस्य को अखण्ड रखने की दृष्टि से कभी हिन्दुओं के आराध्य पुरुषों, प्रतीकों, बिम्बों का विरोध नहीं किया। उनके अच्छे उपयोगी पहलुओं को उजागर करते हुए उन्हें सन्मान ही दिया।

गुरुदेव श्री सुदर्शनलाल जी म. ने सदा यह ध्यान रखा कि अपनी विरासत की सुरक्षा करते हुए दूसरी परम्पराओं का खण्डन न किया जाए। पंजाब में विचरण करते हुए उन्होंने मन्दिरवासी श्रावकों की मान्यताओं का

कभी निरादर या उपहास नहीं उड़ाया। उनकी सोच थी कि यदि हम अपने से भिन्न सम्प्रदाय के मुनियों की चर्चा, उनकी पूजा-पद्धति पर प्रहार करते हैं तो प्रकारान्तर से उन्हें भी अपने पर प्रहार करने के लिए प्रेरित और बाध्य करते हैं। इस प्रहार एवं प्रतिप्रहार की प्रक्रिया में सामाजिक ऊर्जाओं का विध्वंस ही होता है, निर्माण नहीं।

हरियाणा सम्भाग के अग्रवाल जैन स्थानकवासी, दिगम्बर एवं तेरापन्थ इन तीन धाराओं के परिपालक हैं। इन तीनों समुदायों के लोग इनके सान्निध्य में आए, क्योंकि ये सबका, सबकी व्यवस्थाओं का मान रखते थे। उनका यह प्रयास कभी भी नहीं रहा कि अन्य सम्प्रदाय के आगन्तुकों को अपने खेमे से जोड़ना और उनके मूल ठिकाने से तोड़ना—यह न उनकी प्रकृति थी और न ही विचारधारा। हर व्यक्ति अपने मूल से जुड़ा रहकर इतर वर्ग से लाभ ले तो विस्तार है। पर जोड़-तोड़ में लगे रहना जैनत्व की हानि है।

स्थानकवासी सम्प्रदाय में उनका सम्बन्ध पंजाब परम्परा के मुनि मयाराम गण से था। 1952 तक पंजाब सम्प्रदाय संगठित रूप से चलता रहा। बाद में व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म. ने तद्दुगीन परिस्थितियों के कारण मुख्य संगठन श्रमण संघ तथा पंजाब के श्रमणसंघीय मुनियों से पृथक् व्यवस्था बनायी। उसी पृथक् व्यवस्था का नेतृत्व पूज्य गुरुदेव ने सम्भाला था। नए संघ के विस्तार के उस सूत्रधार ने कभी भी साम्प्रदायिकता का रंग समाजों में, व्यक्तियों में नहीं भरा। अपने संघ के लिए श्रावकों का संगठन निर्मित करके समाज विभाजन नहीं किया। समग्र उत्तर भारत के प्रत्येक परिवार को अपना माना। किसी श्रावक की, किसी परिवार की निष्ठा या लगाव यदि अन्य मुनि से रहा तो भी उसे उपेक्षित नहीं किया, पराया नहीं माना। गुरुधारणा के नाम पर किसी के मस्तिष्क में ज़हर नहीं घोला कि किसी अन्य स्थान पर या सन्त के सान्निध्य में

नहीं जाना। किसी साधु-साध्वी के संयमी व्यवहार को शिथिलाचार का ठप्पा लगाकर उनसे दूर रहने का संकेत नहीं किया। अपनी सामाचारी का पालन सुदृढ़ता से करते रहे। यथा बिजली का प्रयोग वर्जित रखा। ध्वनियन्त्र में नहीं बोले, पंखों की सुविधा नहीं ली, फोटोग्राफी से बचे रहे।

उन्हें जिस परिवेश में परवरिश मिली, जिन महापुरुषों की संगति मिली, जैसा साहित्य पढ़ा गया, उसने भी उन्हें सम्प्रदाय भावना से मुक्त होने में मदद दी।

राजस्थान के संयमी और समन्वय रुचि वाले रत्नसंघ के महान् आचार्य श्री हस्तीमलजी म. के प्रति गुरुदेवजी म. सदा ही श्रद्धा व्यक्त करते रहे थे। जब आचार्यश्री हस्तीमलजी म. 1958 में दिल्ली की ओर विचरण हेतु पधारे, तब बारादरी महावीर भवन में उनका भावभीना स्वागत गुरुदेव जी म. ने किया था। आचार्यश्री जी गुरुदेव जी म. की कर्तृत्वशैली से अत्यन्त प्रभावित हुए थे। पूर्ण गणवेश में सामायिक की छटा तथा निरन्तर स्वाध्याय की प्रवहमान धारा के वे कायल हुए। फिर तो आचार्यश्री ने इन दोनों धर्मानुष्ठानों को अभियान का रूप दे दिया और राजस्थान या सम्पूर्ण भारत में जहाँ-जहाँ विचरे सामायिक-स्वाध्याय की अलख जगाते रहे। आचार्यश्री हस्तीमलजी म. पूज्य गुरुदेव से इतना घनिष्ठ स्नेह रखते थे कि उन्होंने गुरुदेव के ज्येष्ठ शिष्य श्री प्रकाशमुनिजी म. के दो चातुर्मास (अजमेर में 1989, जलगाँव में 1990) स्वयं सक्रिय रहकर करवाए। आचार्यश्री जी के संधारे के दौरान तथा पूर्ति पर पूज्य गुरुदेव जी म. की हृदय तन्त्री के तार उस महापुरुष से जुड़े रहे और पत्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति भी देते रहे। उनके पाट को अलंकृत करने वाले आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म. ने अपने पदारोहण के समय जिन-जिन महापुरुषों का स्मरण किया था उनमें मुख्य रूप से गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म. का नामोल्लेख करके आत्मीयता का परिचय दिया।

शायद कुछ लोग यह भी सोच सकते हैं कि अपने अनुयायियों को कट्टर बनाए बगैर अपनी सम्प्रदाय की सुरक्षा नहीं हो पाती। जबकि गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म. इस तर्क से कम सहमत थे। उनका विचार था यदि आपका आचार-विचार श्रेष्ठ है तो सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति का आपसे प्रभावित होना भी सम्भव है-वह आपके साज्वे में ढल सकता है। यह एक सार्वभौम सत्य है कि सैंकड़ों अजैन बन्धु जैन बन्धुओं के सम्पर्क में आकर जैनत्व के संस्कारों में रूपान्तरित हुए थे। जबकि उनके साज्वे में ढलने में जैन बन्धु कम थे। उनको मानने वाले स्थानकवासी श्रावक-श्राविकाएँ बेशक भाईचारे के नाते या अपनी कामनाओं के वशीभूत होकर जैन सनातन मन्दिरों में, तीर्थों पर जाते रहे, पर उन्होंने कभी भी अपने क्षेत्रों में मन्दिरों का निर्माण नहीं किया। जबकि मारवाड़-मेवाड़ के विशाल क्षेत्रों में स्थानकवासी जैन बन्धु मन्दिरों का धड़ाधड़ निर्माण करवा रहे हैं। इससे स्पष्ट हो रहा है कि गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म. की असाम्प्रदायिक दृष्टि सम्प्रदाय की सुरक्षा का ज्यादा कारगर उपाय है, न कि कट्टरतावादी विचारधारा।

गुरुदेव जी म. ने इतर प्रान्तों से आने वाले साधु-साध्वियों को सदा सम्मान दिया। भले ही आगन्तुक मुनिवर्ग सम्प्रदायवाद का पोषक हो या अपोषक। उन्होंने अपने शिष्य के पारिवारिकजनों को भी अन्य संघों में जाने से या दीक्षित होने से नहीं रोका। अन्यथा ऐसी घटनाएँ कटुता को जन्म देती हैं। उन्होंने कटुता घटाई थी, बढ़ाई नहीं। उन्हें यह चिन्ता नहीं थी कि मेरे निकटवर्ती अन्यत्र जा रहे हैं अथवा मेरा अनुयायी वर्ग कम हो जायेगा। वे सम्प्रदायवादी सन्त नहीं होकर सम्प्रदायातीत व्यक्तित्व के धनी थे।

जो सन्त या संघ स्वनिर्मित सामाचारी का तिरस्कार करते हैं, उनको कभी प्रश्रय नहीं दिया, गले नहीं लगाया। जर-जोरु-जमीन की गिरफ्त में रहने वाले तथाकथित गुरुओं को सन्त-महन्तों को उन्होंने खुलकर लताड़ा। मुनिवेश धारण करके जो सुविधाभोगी और

परिग्रह ग्रस्त हो जाते हैं ऐसे तथाकथित गुरुओं को मानने वालों के लिए वे अच्छे कठोर शब्दों का प्रयोग करते थे। वे कहते थे-तुम्हारा यह सिर यों ही किसी जगह नहीं झुकना चाहिए। वे संयम मर्यादाओं के संरक्षक थे।

संयम के प्रति उनकी निष्ठा को देखकर ही समग्र उत्तर भारत उनका मुरीद रहा। उन्होंने गाँव-गाँव, कस्बा-कस्बा, नगर-नगर घूमकर धर्मध्यान का बिगुल बजाया। उत्तर भारत के समृद्ध कुलीन परिवारों के बालकों को वैराग्यभाव से भरपूर कर दीक्षा दी। लाखों युवकों की ज़िन्दगी को जुआ, मांस, अण्डा, मद्यपान आदि से बचाकर उनके जीवन में सुख सम्पन्नता का सञ्चार किया। उनकी महान् ज़िन्दगी का अन्तिम पड़ाव दिल्ली शालीमार बाग में हुआ। 25 अप्रैल, 1999 को वे इस धरा से वियुक्त हो गए। तब से लेकर आज तक उत्तर भारत उनकी यादों में डूबा ही रहता है। उनकी संयम प्रधान जीवनशैली उदारतापूर्ण प्ररूपणाएँ आज भी प्रासङ्गिक हैं। आज उन्हें धराधाम से गए हुए 23 वर्ष हो चुके हैं, फिर भी उत्तर भारत एक ही व्यवस्था में जी रहा है। यहाँ किसी सम्प्रदाय ने एस.एस.जैन सभा के समानान्तर स्वतन्त्र स्थानकों का निर्माण नहीं किया।

उत्तर भारत में एक ही स्थानक में किसी वर्ष गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म. के सन्तों का चातुर्मास होता है तो अन्य वर्ष में श्रमण संघीय मुनियों का, फिर किसी और वर्ष में राजस्थानी साधुओं का। इस समन्वित समरसता के पीछे गुरुदेव श्री सुदर्शन लालजी म. का बहुत बड़ा हाथ है। आज आवश्यकता है कि उत्तर भारत उनकी इस विरासत को सम्भाल कर रखे तथा उत्तर भारत से बाहर का क्षेत्र इससे कुछ सबक ले।

आज का युवा वर्ग भी बहुलतया इस दृष्टिकोण का हिमायती है। उन्हें आपसी प्रेम भाव के प्रत्यक्ष उदाहरणों की जरूरत है। वे सम्प्रदायवाद के विभाजक रूप से उकताते जा रहे हैं। उनकी श्रद्धा की सुरक्षा के लिए भी, गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म. के दृष्टिकोण को अपनाना जरूरी है।

कर्मसूत्र

श्री हेमन्त लोढ़ा

जो जेण पगारेणं, भावो णियओ तमन्नहा जो तु।
मन्नति करेति वदति व, विप्परियासो भवे एसो।।1।।
नियत मानिये अन्यथा, स्थित जैसा हो भाव।
करे मान विपरीत सदा, अच्छा नहीं स्वभाव।।

If a thing is possessed of a certain definite form, then to consider it otherwise, to act as if it were otherwise, or to describe as otherwise is adverse knowledge.

जं जं समयं जीवो, आविसइ जेण जेण भावेण।
सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधइ कम्मं।।2।।
जब जब उठते जीव में, जैसे जैसे भाव।
तब तब बँधते कर्म के, अच्छे-बुरे प्रभाव।।

Whenever a soul experiences this or that mental state at that very time it gets bound by a corresponding good or bad karmas.

कायसा वयसा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु।
दुहओ मलं संचिणइ, सिसुणागु व्व मट्ठियं।।3।।
तन-वचन तन्मय करता, धन-औरत का राग।
मल करम सञ्चय कर ज्यूँ, रेत मले शिशुनाग।।

Whoever is careless about his physical activities and speech and greedy of wealth and woman, accumulates Karmic dirt of attachment and aversion just as an infant snake (earth warm) accumulates mud by both way. (i.e., internally and externally).

न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ, न मित्त-वग्गा न सुया न बंधवा।
एक्को सयं पच्चणु होइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं।।4।।
मित्र, पुत्र और बन्धु भी, बाँट सके ना भाग।
दुःख अनुभव खुद ही करे, कर्ता करम अनुराग।।

The sons, brothers, friends and the caste-men can not share his misery. He has to suffer himself all alone. (It is so because karma pursue the doer (karta).

कम्मं चिणंति सबसा, तस्सुदयम्मि उ परव्वसा होंति।
रुक्खं दुरुहइ सबसो, विगलइ स परव्वसो तत्तो।।5।।
स्वकीय वश करना करम, परवश सब पश्चात्।
चढ़े वृक्ष स्वेच्छा सदा, गिरे नहीं वश तात।।

Just as a person is free while climbing a tree but once he starts falling then he has no power to control it similarly a living being is free in accumulating the Karmas but once accumulated it is beyond his power to control their fruits.

कम्मवसा खलु जीवा, जीववसाइं कर्हिचि कम्माइं।
कत्थइ धणिओ बलवं, धारणिओ कत्थइ बलवं।।6।।
कहीं कर्म वश जीव है, करम जीव वश मान।
धन दाता बलवान है, देते ऋणी बलवान।।

Some time, the Jiva is dependent upon karmas; at others karmas are dependent upon the Jiva. At the time of issuing a loan, the power vests in the creditor; whereas, at the time of repayment, the power vests in the debtor.

कम्मत्तणेण एक्कं, दव्वं भावो त्ति होदि दुविहं तु।
पोग्गल-पिंडो दव्वं, तस्सत्ती भाव-कम्मं तु।।7।।
करम एक, पर भाग दो, द्रव्य-भाव विचार।
पुद्गलपिण्ड द्रव्य करम, कर्म ये भाव विकार।।

Karma as such is of one type but it is divided also as, dravyakarma (objective) and bhāvākarma (subjective). The dravyakarma is a mass of physical particles and the inherent capacity of it is bhāvākarma (and this capacity is originated from the attachment and aversion of the self)

-(गाथाओं का हिन्दी दोहों में रूपान्तरण एवं अंग्रेजी अनुवाद श्री हेमन्त लोढ़ा ने स्व प्रकाशित पुस्तक 'समणसुत्त' में किया है।)

जैनदर्शन में कर्मवाद : एक विश्लेषण

प्रो. सुमेरचन्द जैन

मूर्त और अमूर्त का, जड़ एवं चेतन का, आत्मा एवं कर्म का सम्बन्ध विचित्र है। दोनों का स्वभाव सर्वथा भिन्न है। फिर दोनों में सम्बन्ध कैसे हुआ? कब हुआ? सम्बन्ध होने के मूलभूत कारण क्या हैं? ये प्रश्न जीवन के प्रारम्भ से ही मानव मस्तिष्क को झकझोरते रहे हैं। प्रत्येक चिन्तक ने अपनी-अपनी कल्पना के अनुसार इन प्रश्नों का समाधान करने का प्रयास किया है।

कर्म मान्यता

भारत के लगभग सभी दार्शनिकों तथा चिन्तकों ने कर्मवाद को स्वीकार किया है। गौतम बुद्ध ने कहा- 'कम्मा पुनब्भवो होति' कर्म से पुनर्भव होता है। जन्म-मरण की परम्परा चलती है। महाभारत में उल्लेख है- 'जैसे हजारों गायों में भी बछड़ा अपनी माँ के पास पहुँच जाता है वैसे ही पूर्वकृत कर्म अपने कर्ता का अनुगमन करते हैं।' गोस्वामी तुलसीदास जी ने कर्म को ही सृष्टि का मौलिक तत्त्व मानते हुए कहा-

'कर्म प्रधान विश्व करि राखा,

जो जस करहि, सो तसु फल चाखा।'

जैनदर्शन में कर्मवाद

जैनदर्शन में कर्मवाद जिस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, कुछ दर्शनों ने उसके स्थान पर लगभग उसी अर्थ में दूसरे शब्दों का प्रयोग किया है। आत्मा अनादि काल से कर्मबद्ध और विकारी है। आत्मवादी दर्शनों के लिए यह आवश्यक है कि आत्म-बन्धन और आत्ममुक्ति के कारण भूत-कर्म को अङ्गीकार करें।

जैनदर्शन में कर्म शब्द का अनेक अर्थों में प्रयोग हुआ है। उनमें से दो अधिक व्यापक हैं। एक आचरण के अर्थ में और दूसरा आत्मा के द्वारा आकृष्ट कर्म परमाणु ग्रहण के अर्थ में। प्रथम अर्थ में कर्म शब्द का प्रयोग करते हुए भगवान महावीर ने कहा है- 'मनुष्य जन्म से

नहीं, कर्म से ब्राह्मण होता है, कर्म से क्षत्रिय होता है, कर्म से वैश्य होता है और कर्म से शूद्र होता है।'

'जैनदर्शन का कर्मवाद' नाम से जो सिद्धान्त प्रख्यात है, उसकी कर्मवाद विषयक मान्यता बिल्कुल मौलिक है और साथ-साथ बड़ी वैज्ञानिक भी है। भगवान महावीर के अभिमत में कर्म का अर्थ है- 'आत्मा की सत्-असत् प्रकृति से आकृष्ट होकर कर्म रूप में परिणत होने वाला पुद्गल समूह। आत्मा के दो प्रकार हैं-मुक्त और बद्ध। जो आत्माएँ कर्मों से सर्वथा मुक्त हैं, वे स्वभाव में स्थित हैं तथा सर्वदा के लिए समस्त बन्धनों से छुटकारा पा चुकी हैं। जन्म-मृत्यु के चक्र से बाहर निकल चुकी हैं, अजर-अमर बन चुकी हैं। उनके लिए कुछ भी करणीय शेष नहीं रहा है, वे सिद्ध हैं, हर आत्मा का साध्य उस सहज अवस्था तक पहुँचना है।

कर्मबद्ध आत्माओं की स्थिति बड़ी विषम और दयनीय है। उन्हें चतुर्गति रूप संसार में परिभ्रमण करना पड़ता है। अनेक रूप योनि के साथ अनुबन्ध करना होता है, अनुकूल-प्रतिकूल नाना रूप-स्पर्शों का प्रतिसंवेदन करना पड़ता है। तरह-तरह के सुखों और दुःखों की अनुभूति करनी पड़ती है। उन्हें अपने कृत कर्मों से नरक और तिर्यञ्च योनियों में भारी कष्ट उठाने पड़ते हैं।

जीव की विभिन्न परिणतियाँ कर्मों के आधार पर होती हैं। मौलिक रूप से जीव शुद्ध है, किन्तु कर्म आवरण के कारण उसकी विविध दशाएँ हो जाती हैं। आत्मा की जितनी अवस्थाएँ होती हैं, वे सब कर्म-जन्य हैं। कर्मोदय और कर्म क्षयोपशम से ही जीव को विभिन्न प्रकार की सामग्री मिलती है। शुभ कर्म के उदय से जीव को सितारे के समान चमकता जीवन एवं मधुर व्यक्तित्व मिलता है और अशुभ कर्म के उदय से नमक के समान खारा जीवन और निस्तेज व्यक्तित्व उपलब्ध होता है।

कर्मों के आधार पर प्राणी विशाल वैभव और प्रचुर ऐश्वर्य का स्वामी बनता है और कर्मों के आधार पर ही हीन-दीन बनता है। विद्वत्ता, वाग्मिता, स्वभाव मधुरता आदि सदगुण कर्म क्षयोपशम से मिलते हैं। वैसे ही मूढ़ता, मन्दता आदि भी कर्मों के उदय से मिलती है। व्यक्ति सम्राट् भी कर्म से बनता है और दास भी कर्म से ही बनता है।

कर्म का प्रामाण्य

कर्म के अस्तित्व का पुष्ट प्रमाण संसार की विचित्रता और विषमता है। कहीं अत्यन्त सम्पन्नता है, कहीं सीमातीत विपन्नता है। कहीं ऐश्वर्य अठखेलियाँ कर रहा है तो कहीं दरिद्रता मासूम बच्चों के प्राण नोच रही हैं। कहीं गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ गर्व से सीना ताने खड़ी हैं तो कहीं जीर्ण-शीर्ण झोपड़ियाँ सिसक रही हैं। ये सब विचित्रताएँ कर्मसत्ता को प्रमाणित करती हैं। कर्मों के अनुसार ही संयोग और वियोग का नाटक अपना खेल दिखाता है। कर्मवाद का प्रमाण इस समय और अधिक प्रखरता एवं स्पष्टता से मिलता है जब समान साधन और समान परिस्थिति होने पर भी फल में विषमता आती है। एक ही घर में और एक ही समय में जन्मे हुए बन्धुओं में एक सिंहासनारूढ़ होकर राजा बनता है और दूसरा एकदम असहाय होकर दर-दर का भिखारी बनता है। एक गुरु के पास समान वातावरण में अध्ययन करने वाला एक शिष्य तलस्पर्शी ज्ञानी बन जाता है और दूसरा मतिमन्द ही रह जाता है। समान सुविधा और समान सहानुभूति में भी बुद्धि, विवेक, चिन्तन, स्वास्थ्य, सुख-दुःख में भिन्नता रह जाती है। यह सब पूर्वकृत कर्म का परिणाम है।

कर्म की प्रकृति

कर्म आत्मा के स्वरूप को आवृत्त, अवरूढ़ और विकृत करते हैं। उसके मौलिक गुणों पर आघात करते हैं। आत्मा कर्म संयोग से अन्य भाव वाली बन जाती है। शुद्ध, बुद्ध और एक स्वरूप वाली आत्मा भी कर्मों के योग से अनेक रूप वाली हो जाती है। आत्मा अनन्त

शक्तियों का स्रोत है, विशिष्ट गुणों का पुञ्ज है, किन्तु कर्मों के द्वारा उसके मूलभूत गुण (आत्मा के आठ मौलिक गुण) आवृत्त हो जाते हैं।

कर्म पौद्गलिक हैं। पुद्गल स्वभाव की अपेक्षा से वे एक हैं, किन्तु आत्मा के आठ गुणों का स्थगन करने की अपेक्षा से उनकी मूल प्रकृतियाँ आठ मानी गयी हैं- 1. ज्ञानावरणीय, 2. दर्शनावरणीय, 3. वेदनीय, 4. मोहनीय, 5. आयुष्य, 6. नाम, 7. गोत्र और 8. अन्तराय।

कर्म का सम्बन्ध

कर्म का फलित कर्तृत्व में है। उसका सीधा सम्बन्ध कर्ता के साथ ही है। जो जैसा कार्य करता है, उसे उसका वैसा ही परिणाम भुगतना पड़ता है। अपने कृत कर्मों का फल स्वयं को ही भोगना पड़ता है। प्राणी अपने बन्धुजनों के लिए जो साधारण कार्य करता है, उस कर्म के फलभोग के समय वे बन्धुजन बन्धुता नहीं निभाते। उसमें कोई हाथ नहीं बँटाते, बँटा भी नहीं सकते। यहाँ कोई सम्बन्ध नहीं चलते। अपनी प्रकृति का उत्तरदायी अपने-आप को ही होना पड़ता है।

सूत्रकृताङ्गसूत्र में लिखा है- “व्यक्ति के दुःख को ज्ञाति, मित्र और बन्धु कोई भी विभक्त नहीं करते। उसे अकेले ही उसका प्रतिसंवेदन करना पड़ता है, क्योंकि कर्म कर्ता से अनुबन्धित होता है।” महाभारत में भी कहा है- “एक के किए हुए कर्म का फल कोई दूसरा नहीं भोग सकता। जिसने जो कार्य किए हैं, उसको ही उसका परिणाम भुगतना पड़ता है।”

कर्म करने में आत्मा स्वतन्त्र है, क्योंकि हर कर्म उसी के द्वारा उपार्जित है। कर्म कर्तृत्व काल में कर्ता स्वतन्त्र है, परन्तु निकाचित कर्म के फलभोग के समय वह परतन्त्र बन जाता है। अनन्त शान्तिमयी आत्मा भी अपने ही द्वारा कृत कर्मों के अधीन हो जाती है। उसकी कर्तृत्व शक्ति दब जाती है, मन्द हो जाती है, किन्तु उसका आगे का प्रयत्न नहीं रुकता। आत्मा का कर्तृत्व प्रतिक्षण विद्यमान रहता है। इसी आधार पर वह कर्मों को छिन्न-भिन्न करके स्वतन्त्र हो जाती है।

कर्म और आत्मा का साहचर्य

कर्म और संसारी आत्मा का साथ अनादिकालीन है। यद्यपि कर्म मूर्त और जड़ता स्वभाव वाला है, आत्मा अमूर्त और चेतन स्वभावी है, किन्तु फिर भी अनादिकाल से इनका सम्बन्ध चला आ रहा है। जैसे स्वर्ण और मिट्टी का, तिल और तेल का तथा अरणि और आग का सम्बन्ध अनादिकालीन है। जैसे यान्त्रिक प्रक्रिया से स्वर्ण और मिट्टी को अलग-अलग किया जा सकता है और संघर्षण के द्वारा अरणि से आग प्रकट की जा सकती है तथा यन्त्र प्रयोग से तिल और तेल के कणों को अलग किया जा सकता है वैसे ही साधना से आत्मा और कर्म के सम्बन्ध को भिन्न किया जा सकता है।

कर्म बन्ध-प्रकार एवं कारण

कर्म की दस अवस्थाओं में से प्रथम अवस्था बन्ध है। यह महत्त्वपूर्ण अवस्था है। कर्मबन्ध के चार प्रकार होते हैं-

1. **प्रकृति बन्ध**-रागादि भावों से आकर्षित कर्माणुओं के स्वभाव का निर्धारण प्रकृति बन्ध है। कर्मों के स्वभाव भिन्न-भिन्न होते हैं। उनका अपने-अपने स्वभाव सहित जीव से सम्बन्धित होना प्रकृति बन्ध है।

2. **स्थिति बन्ध**-यह काल मर्यादा की व्यवस्था है। कोई भी कर्म अपनी काल मर्यादा के अनुसार ही आत्मा के साथ रहता है। स्थिति समाप्त होते ही आत्मा से पृथक् हो जाता है।

3. **अनुभाग बन्ध**-आत्मा से अनुबन्धित कर्मों में फलदान की शक्ति को अनुभाग बन्ध कहते हैं। इसके अनुसार कर्म पुद्गलों में इसकी तीव्रता एवं मन्दता का निर्माण होता है।

4. **प्रदेश बन्ध**-कर्माणुओं का जिस परिमाण में जीव से क्षीर-नीर की तरह एक क्षेत्रावगाही सम्बन्ध होता है, यह प्रदेश बन्ध कहलाता है।

कर्मबन्ध के कारण

कर्मबन्धन कर्मबद्ध आत्मा के ही होता है। मुक्त आत्मा के कर्मबन्धन का कोई कारण विद्यमान नहीं

रहता। जीवात्मा जब अपने स्वभाव से स्वलित होकर विभावग्रस्त होता है, तब कर्म बन्धन होता है। कर्मबन्धन के पाँच कारण माने गए हैं-

1. **मिथ्यात्व**-विपरीत श्रद्धा।
2. **अन्नत**-त्याग वृत्ति का अभाव।
3. **प्रमाद**-आत्महित का विस्मरण, धर्म के प्रति अनुत्साह एवं भोगों में आसक्ति।
4. **कषाय**-आत्मा का राग-द्वेषमय आन्तरिक उत्पाप।
5. **योग**-मनो-वाक्काय की सूक्ष्म या स्थूल क्रिया।

कर्म-मुक्ति के साधन

भारतीय दर्शनों में आत्ममुक्ति को सर्वोपरि लक्ष्य माना गया है। जैनदर्शन में आत्ममुक्ति के लिए चार साधनों का विधान किया है। उत्तराध्ययनसूत्र के 28वें अध्ययन की दूसरी गाथा में कहा है-

नाणं च दसणं चेव चरित्तं च तवो तहा।

एस मग्गुत्ति पण्णत्तो जिणेहिं वरदंसीहिं।।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप-यह मुक्ति का मार्ग है। इन चारों की समन्वित साधना से ही कर्ममुक्ति फलित होती है।

निष्कर्ष रूप में जैन कर्म-सिद्धान्त की लाक्षणिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. कर्म एक सार्वभौमिक नियम है। प्राणिमात्र उससे प्रभावित है।
2. प्रत्येक प्राणी के साथ कर्म सम्बन्ध प्रवाहतः अनादि काल से है।
3. कर्मों का कर्ता-भोक्ता आत्मा स्वयं है।
4. आत्मा को कर्म फलदान स्वतः मिलता है, किसी अन्य माध्यम से नहीं।
5. कर्मबन्धन के बाद उनमें परिवर्तन भी सम्भव है।
6. आत्मा अपने पुरुषार्थ की छैनी से अनादिकालीन कर्मों को तोड़ सकता है।
7. साधना का सार यही है-नये कर्मों का आदान रोकना और बद्ध कर्मों को तोड़ना।

-10, औद्योगिक क्षेत्र, राजी बाजार, बीकानेर (राज.)

JAIN RELIGION AND PHILOSOPHY FOR BETTERMENT OF SOCIAL LIFE

*Dr. Dharm Chand Jain**

Jain religion and philosophy is considered as the path of purification for attaining ultimate salvation from the sorrowful world. It is a spiritual religion which inspires a person to be an ascetic or a monk. It motivates a person to be free from worldly desires and also it restrains human beings from sensual pleasure. Sometimes it restricts the people from social activities of fun, enjoyment, and then it becomes difficult to say that the Jain religion and philosophy is helpful for betterment of social life.

The question is crucial but we know that a human being is a social animal and his survival is not possible without the society or help of the other human beings. Hence the impact of religion must be seen in his social life. Social life is a life where interaction with another person takes place and the activities connected with society are experienced. Living together, talking together, working together, eating together, behaving together etc are the aspects of social life. Nowadays social media is also creating a new society where social behaviour is virtual.

Social life represents our mutual relations and behavior in the family, society, community and at the working place. Our ideology and conduct are the main determinants of our behaviour. Impact of family atmosphere, company of friends, relatives etc also affects our social life. A person learns from mother, father, grandfather, grandmother and other family members. He also learns from his companions and from

social media, TV, mobile etc and he behaves accordingly. These days many of us are living worse social lives. We don't have harmony in the relations and behaviour. We want to see others behaviour better, but don't try to improve behaviour of ourself. We are not clear about a state of better social life.

A few characteristics for better social life :

Here a few characteristics of better social life are mentioned.

1. Friendliness and harmonious feeling
2. Co-operational behaviour
3. Corruption free lifestyle
4. Life with necessary convenience
5. Life with prestige and honour
6. Good physical health and mental peace
7. Contributing personality
8. Wider perspective
9. Transparent Personality
10. Disciplined life

Like above some more points may be determinant for a betterment of social life. We have to find out the fulfillment of these characteristics in the principles of Jain religion and philosophy

Jain Tenets supporting better human life :

It is astonishing that Jaina tenets are very much helpful in developing a personality with better social vision and beneficial activities for the self and the society. We have to understand the message of the Jaina tenets and apply them in life to be better to motivate others for betterment. Monks have limitations in social relations, but they don't harm the society and a person who comes in their contact. Whatever

they behave and preach is to eradicate the evils of the society. The householders are in more contact of the society. They can make social life better by observing the tenets of Jainism. This paper is pondering upon such points through which a person can make his social life better. Some of the tenets are mentioned below :

1. Nonviolence (*ahimsā* or *prāṇātipāta-viramāṇa*)
2. Truthful and non- hurting speech (*mṛṣāvāda-viramāṇa*)
3. Non-stealing and honesty (*adattādāna-viramāṇa*)
4. Chastity (*maithuna-viramāṇa*)
5. Limitation in having possession and accumulation (*parigraha-parimāṇa*)
6. Control on desires (*saṃyama*)
7. Compassion and benevolence (*karuṇā* and *udārātā*)
8. Friendliness towards all beings (*maitrī*)
9. Humility (*vinaya*).
10. Control on anger (*krodha-nigraha*)

11. Conquering egotism or pride (*māna-nigraha*)
12. Restraining fraudulent and deceitful behaviour (*māyā-nigraha*)
13. Restraining greed (*lobha-nigraha*)
14. Restraining the ill activities of mind, speech and body (*saṃyam*)
15. Expenses not more than income (quality of a laity householder)
16. Forgiveness (*kṣamā*)
17. Neutral reflection towards enmities (*mādhyastha-bhāvanā*)
18. Time management (*kāle kālaṃ samāyare*)

Role of Jain tenets in fulfilling the measures for better social life :

With application of above tenets or sermons of Jain religion and philosophy the parameters of better social life may be achieved. In nutshell a table is given here indicating the measures for better social life and the application of supporting Jain principles for it.

S. No. Measures for better social life

Jain Principles or Tenets to be applied

1. Friendliness and harmonious feeling	(i) nonviolence in the thought, speech and action (ii) reflection for friendliness (<i>maitrībhāvanā</i>) (iii) forgiveness (<i>kṣamā</i>) (iv) neutral reflection (<i>mādhyasthabhāvanā</i>) (v) Restraining anger, egotism or pride, deceit and greed
2. Co-operational behaviour	(i) rendering service to each other (<i>parasparopagraho jīvanāṃ</i>) (ii) control on possessions and accumulations (<i>aparigraha</i>) (iii) Tendency of giving (<i>dāna</i>)
3. Corruption free lifestyle	(i) non-stealing (<i>adattādāna-viramāṇa</i>) (ii) truth speaking (<i>mṛṣāvāda-viramāṇa</i>) (iii) chastity (<i>brahmacarya</i>)
4. Life with necessary convenience	(i) Renunciation of addictions (<i>vyasana-tyāga</i>)

	<ul style="list-style-type: none"> (ii) Earning through ethical norms (<i>nyāyasa-mpanna-vibhava</i>) (iii) Restraint on inessential desires (<i>icchā-parimāṇa</i>) (iv) Satisfaction in life (<i>santoṣa</i>)
5. Life with prestige and honour	<ul style="list-style-type: none"> (i) helping in calamities (<i>sevā</i> or <i>vaiyyāvṛtya</i>) (ii) good character (life with vows avoiding evils) (iii) nonviolent communication (<i>ahiṃsā</i> in speech) (iv) truthfulness and honesty (<i>mṛṣāvāda-viramaṇa</i> and <i>asteyavrata</i>) (v) observance of religion (<i>dharmācaraṇa</i>) (vi) non-deceptive nature (<i>māyā-nigraha</i>) (vii) politeness or humility (<i>vinaya</i>)
6. Good physical health and mental peace	<ul style="list-style-type: none"> (i) Jain food with nutrients (ii) fasting and observance of other austerity (iii) studies of religious and other character making literature (<i>svādhyāya</i>) (iv) meditation (<i>dhyāna</i>) (v) observance of five vows (<i>pañca aṇuvrata</i>) (vi) forgiveness (<i>kṣamā</i>) (vii) right vision (<i>samyagdarśana</i>) (viii) gratitude (<i>kṛtajñatā</i>) (ix) transmitting happiness
7. Contributing personality in the society	<ul style="list-style-type: none"> (i) contributing through knowledge (ii) contributing through time, coordination, medicines technology etc. (iii) Regular donations and contribution for the well-being of the society.
8. Wider perspective	
9. Transparent Personality	
10. Disciplined life	

A brief discussion based on the above outline is presented here.

1. Friendliness and harmonious feeling

Jain religion and philosophy supports the friendliness and harmony in the behaviour through following principles.

(i) **Nonviolence**-If the principle of

nonviolence in the thought, speech and action is practiced then a person will not think bad, will not speak bad and will not do bad to others. He will respect the consciousness of others as equal to himself. Such a nonviolent person will behave with friendliness to others. He will

love everybody and maintain harmony in the society. He will not hurt anybody. *Ācāraṅgacūrṇi* says-*jahā me iṭṭhāñi the-suhāsuhe tahā savvajīvāṇaṃ*¹ As pleasure is desired to me and pain is not desired to me, so the same is to all living beings. This aphorism guides a person for his non-violent or non harmful behaviour to other human beings. Pleasure is loved by every human being and pain by none, hence we should behave keeping in view this truth.

(ii) **Maitrī- bhāvanā-** All living beings on the earth and in the universe are my friends. I have no enmity with anyone. This kind of reflection is very much helpful in friendliness. *Amitagati* says-*sattveṣu-maitrīm guṇiṣu pramodaṃ*³. Friendliness to all living beings and delightedness to all worthy persons make social life better. In practical life friends are few, so which kind of behaviour should be with them. In this respect *Uttarādhyayana-sūtra* guides us that a good friend does not blame his friend and does not become angry with any friend. If a friend is not a loved one then also he speaks blissful in his absence.⁴ This nature of a friend never affects the harmony between them.

(iii) **Forgiveness-** In the Jain tradition forgiveness keeps an important place to maintain social harmony. It avoids disputes and settles them timely. It is a master key for establishing friendliness in behaviour. If we do not take ill of others then it is the best way to forgive. Forgiveness promotes happiness as *Uttarādhyayanasūtra* says-*khamāva-ṇayāe ṇaṃ palhāyaṇabhāvaṃ jaṇayai. palhāyaṇabhāvamuvagaeya savvapāṇa-bhūyajivāsattesu mittibhāvamuppāei*² forgiveness creates happiness and

happiness generates friendliness to every living being.

(iv) **Neutral reflection (*mādhyastha-bhāvanā*)** - To conquer repugnance and hostility neutrality is a successful instrument. Reaction to every adversity and opposition grows disputes and enmity between the people whereas due to neutral reflection the disputes and enmity go down.

(v) **Restraint on anger, pride, deceit and greed-** *Dasaveyāliyasutta* says-*koho pūṃpaṇāsei māṇo viṇayaṇāsaṇo. māyā mittāṇi ṇāsei lobho savvaviṇāsaṇo*⁵.

Anger destroys love or affection, egotism or pride hurts humility and politeness, deceitful behaviour abolishes friendships and greed annihilates these all- love, humbleness and friendship. In practical life a person with anger is not liked in the society, hence he cannot maintain good relations with others. A person who restrains his emotions can make his behaviour better. Many executives, like Sunder Picchai, are successful due to nonviolent communication. Anger-less communication is considered as nonviolent.

Egotism is also a barrier in smooth social transactions. Egotism or pride of beauty, power, money, knowledge etc creates a distance in harmony. For creating friendliness fraudulent and deceitful behaviour is an obstacle, hence for establishing and enriching trust this kind of behaviour is to be renounced. Greed is also a hindrance in conquering the hearts of humanity. Jain canons suggest victory on these four ill passions for the purification of the soul, but this is also a means of connecting the people for a harmonious atmosphere.

2. Co-operational behaviour

(i) **Rendering service to each other (*paras-***

paropagraho jīvānām)-The Tattvārtha-sūtra propounds-parasparopagraho jīvānām.⁶ The living beings are having nature to render service to one another. This service may be favourable or unfavourable, beneficial or harmful, but for the existence of the world of living beings favourable, cooperative or beneficial behaviour is needed. This can enjoin the hearts of humanity for a better helping society where everyone is positive and caring for each other.

(ii) Restraint on accumulations and possessions- Concept of *aparigraha* in Jaina canonical literature is a means to be happy in every situation. By limiting accumulation and possession, a person can cooperate with other needy humans for welfare. It connects the people and avoids the trouble. He can earn merits for the self benefit. Control on consumption by someone can make availability for others; hence problem of scarcity of any essential thing finds a solution. If someone has more than needed then he can give it to others, if he doesn't do so, then more accumulation and possession can be a cause of painful experience, as in the commentary on the *Suyagado* has been said- *prājñasyāpi parigraho grahaiva-kleśāya nāśāya ca.*⁷

(iii) Tendency of giving- Jain literature supports the society through promoting the giving tendency of a human, to a needful and destitute person. Need may be of food, medicine, knowledge, fearlessness, money etc. Giving to them for fulfilling their needs and removing sorrowful situations, promotes a good society. It makes life easier for many needy persons.

3. Corruption-free life-

Every body Wants to see the corruption

free society. Corruption is mainly of three types- (i) money related (ii) character related and (iii) duty related. Adulteration in the trading things, illegal hoarding, black marketing, bribery etc are money related corruptions. Jain vow of non-stealing (*adattādāna-viramaṇa*) in this regard is very important. It makes a person ethical in business, trading and transactions. This is a symbol of better society. One another corruption is unethical relations of a man with a woman. Vow of chastity (*brahmacarya*) controls this evil. Satisfaction with own spouse is prescribed for a laity householder. Not to perform duty honestly is another kind of corruption. This corruption damages an individual, society and the nation. Corruption-free life is a boon for the betterment of society.

4. Life with necessary convenience

There are so many practices in Jainism which make life convenient. It never denies earning enough money, but suggests to earn it in an ethical way. *Nyāya-sampanna-vibhava* is an attribute of a householder as found in the *Yogaśāstra* of Hemacandra which emphasises for income through ethical means. One other attribute of him is to expense not more than the income⁸. This creates a convenience in living. The third point is renunciation or avoidance of bad habits and addictions. Addictions of liquor, intoxication, gambling, smoking, fornication, unnecessary shopping etc are prohibited in the Jain code of conduct. These addictions disturb the convenience and make a person uneasy, dependent and compulsive. Most of the poor men are poor due to some addictions and they also quarrel in the family and society because of futile expenses and mental dissatisfaction generated due to these addictions. Leaving apart above three things a person can feel convenience in life. Earning money through valid means also generates

convenience. Effluence of money through unethical means is not a cause of convenience. That may be a cause of tension, bad habits and rather inconvenience in maintaining social relations.

5. Life with prestige and honour

Every civilized and cultured human being wants to live with honour in the society.

- (i) Honour is achieved through contribution to the society with valuable work, wisdom and cooperative nature. Accumulation of a lot of money and land may be a source of prestige in the related community, but honour forever is achieved only through lawful transactions, donations and contributions to the society.
- (ii) Good character and trustworthy behaviour are also the causes of prestige and honour.
- (iii) Generosity and service to the needy can also be the means.
- (iv) Non-deceptive behaviour, truth speaking are also the means of social recognition. These create reliability among the people which is a means of prestigious honour as mentioned in the *Dharma-saṅgraha-saccaṃ jasassa mūlaṃ saccaṃ vissāsakāraṇaṃ paramaṃ*.⁹ *Dasaveyāliyasutta* explains that a person speaking briefly, faultlessly and thoughtfully acquires praise among the noble persons.¹⁰
- (v) Politeness or humility in behaviour attracts the people with a view of honour. *Uttarādhyayanāsūtra* propounds - *naccā namai mehāvī, loe kitti se jāyae*.¹¹ A wise man after knowledge bows down and he becomes renowned in the world.

6. Good physical and mental health

Lifestyle of Jain followers promotes good physical and mental health. It avoids various diseases. Not eating in the night, avoiding polluted food, vegetarianism, fasting, eating less than hunger, āyambila

practice (one time meals without milk, curd, ghee, sweet, oil and salt) are many things which are helpful in maintaining good health.

Good health is necessary for spiritual practice and also for social services. Mental health and peace are more essential for that. A good mental health can be acquired through studies of religious books and doing meditation. Observance of nonviolence, truth speaking, honesty, chastity, restraining possession, conquering anger, egotism, deceit and greed- all these are helpful in enriching mental health and peace. The *Sthānāṅgasūtra* mentions that anger, envy, ingratitude, wrong vision are some causes which create mental problems and unrest; hence these are to be abandoned.¹² The *Bhagavatīsūtra* says that a person who transmits happiness to others, receives happiness in return¹³. A person with mental tension and ill temper spoils his social life whereas a person living with mental peace can enjoy his social life in a better way.

7. Contributing personality to the society

Society likes a person who contributes in any manner to it. *dāna* is a concept of giving in Jain philosophy. In the *Sthānāṅgasūtra* ten types of *dāna* have been mentioned.¹⁴ Generally four types of *dāna* are famous - (i) food giving (*āhāradāna*), (ii) medicine giving (*auśadhadāna*), (iii) knowledge giving (*jñāna-dāna*) (iv) making fear free (*abhaya-dāna*). This contribution may be of any kind. In the modern era it may be like blood donation, eye donation, any type of organ donation or money donation.

At the time of calamities or needs contribution to friends, relatives, community, society, state and nation is a duty of a good citizen. It may be through money, food, medicine, fees for education etc. This contribution may be life saving for humanity, animals and birds. A friend feels intimacy on

such helpful action.

Transmitting or disseminating the knowledge to the inquisitive people without any commercial interest is a service to the society and it makes life easier and happier for the self and the people. Regular contribution through donations and helping nature makes a man lovable. A certain percentage of income may be given regularly for the welfare of the society.

8. Wider perspective

Anekānta and *nayavāda* are the principles of Jainism which develop a wider perspective to understand the truth and an object. According to *anekānta* every substance is multifaceted and through *nayavāda* that can be known. *Naya* is a viewpoint to know the various aspects of a thing, a substance or a situation. It avoids futile confrontation among the people. *Syādvāda* is a non defective method of expression. All these three are useful for a harmonious atmosphere in social behaviour. These inspire a person to accept many aspects of an object, try to understand them and to speak accordingly. Confrontation with other religious followers remains away due to wider perspective evolved through *anekāntavāda* and *nayavāda*. Haribhadra says-

*pakṣapāto na me vīre na dveṣaḥ kapilādiṣu. yuktimad vacanaṃ yasya tasya kāryaḥ parigrahaḥ.*¹⁵

I have neither favour of Mahāvīra nor aversion with Kapila and other thinkers. Whose sermons or preachings are logical, are to be accepted. This path gives solutions to many confrontations and problems.

This tendency also develops tolerance power and proper regard to others. Tolerance is a great tool for better relations with family members and the society,

9. Transparent Personality

In the *Sthānāṅgasūtra* four types of Jain laity are mentioned.¹⁶ One of them is *addāga-samāne* which means a laity householder can be like a mirror. A Jain follower should be clean and transparent in conduct and behaviour. Such personality is always welcomed in the society. He should be transparent in maintaining the accounts of any organisation without any self vested interests. He should do justice with performing duty of any post and relations.

10. Disciplined life

The *Daśavaikālikasūtra* propounds that every work should be done in time- *kāle kalam samāyare*.¹⁷ A Jain *Śrāvaka* follows disciplined life in speaking, eating, living, sleeping etc. Disciplined life is non-harmful to the society. Eradication of bad customs is also a duty of a *śrāvaka*. It makes the society and social life better.

Some misconceptions related to social life betterment :

There are some misconceptions among us about the means of betterment of social life. A few of them are discussed here.

1. Effluence of money is only the means for betterment of social life.

Answer : The persons engaged in earning more money and have no time and thought for wellness of the self and the society, cannot be able to make their own social life better. The *Ācārāṅgasūtra* depicts psychology of such persons- *aho ya rāo ya paritappamāne kālākālasamuṭṭhāi Saṃjogaṭṭhī aṭṭhālobhī ālumpe sahasākāre viṇivīṭṭhacitte ettha satthe puṇo puṇo*.¹⁸ One who is greedy and interested in accumulation of material things is anguished day and night. He is ready all the time for this work and becomes mentally engaged in fulfilling his greed and harming others. He works without any rational thought. This tendency makes a

man selfish and away from the greater benefit of the society. Young people working in multinational companies generally have no time for their social aspect.

Many times a greedy person earns money doing sinful activities and creates enmity with others. The *Uttarādhyayanasūtra* makes aware-

je pāvakkammehiṃ dhaṇaṃ maṇūsā samāyayanti amaiṃ gahāya.

pahāya te pāsa payatṭhie nare verāṇubaddhā narayaṃ uventi.¹⁹

The persons who earn money doing sinful activities also earn enmity with others and go to hell after death; hence effluent money is not a necessary means for betterment of social life.

2. Usage of liquor and meat eating makes a business and friendship easier. Thus it is a means of better social life.

Answer : Many industrialists, entrepreneurs, financiers, businessmen, executives are of the opinion that through the usage of liquor, wine etc and non-vegetarian food can enjoin themselves with the elite class persons or counterparts for enhancing their income, but this is also a means for decaying one's character, health and wealth. A business increases through the better policy, product, efficiency and service. Business based on ethical norms can grow for a long time , but using unethical means it doesn't sustain for the betterment of social life. Value-based life is self satisfactory and non- harming to others.

3. Having meals in the hotels makes social life better.

Answer : This is also a misconception. This is a tendency and a fashion to have meals in the hotels. Sometimes when a person is on tour and has no facility at home may go to hotels and restaurants. In many countries people take their dinner outside home, but it

has no basis for a better social relationship. Better relations and social welfare are constructed on attitude of cooperation and compassion.

4. High living status is necessary for betterment of social life.

Answer : More possessions of buildings, jewellery, vehicles and expensive tendency for food, clothes, hotels, tours, education, entertainment etc. are considered as high status symbols in the society, but these are not the actual parameters of better social norms. Such people may be disliked by many persons. Betterment of social life requires betterment of the self and that comes out through nonviolence, truth speaking, honesty, Chastity, non- possession and conquering anger, pride, deceit and greed.

References :

1. Ācārāṅgacūṛṃi, 1.1.6
2. Uttarādhyayanasūtra, 29.17
3. Prārthanā - pañcaviṃśati, 1
4. Uttarādhyayanasūtra, 11.12
5. Daśavaikālikasūtra, 8.38
6. Tattvārthasūtra, 5.21
7. Sūtrakṛtāṅgatīkā, 1.11
8. Yogaśāstra, 151 : vyayamāyocitaṃkurvan.
9. Dharmasaṅgraha, adhikāra 2.28
10. Daśavaikālikasūtra, 7.55 : miyamaduṭṭhamaṇuvībhāśae. sayāṇamajjhelahaipasamsaṃ.
11. Uttarādhyayanasūtra, 1.45
12. Sthānāṅgasūtra, 4.4
13. Vyākhyāprajñaptisūtra, 7.1
14. Sthānāṅgasūtra, sthāna 10
15. Lokatattvanirṇaya, verse 38
16. Sthānāṅgasūtra, 4.3 : cattāri samaṇovāsagā-addāgasamāṇe, padāgasamāṇe, khāṇusamāṇe, kharakaṇṭasamāṇe.
17. Daśavaikālikasūtra, 5.1.4
18. Ācārāṅgasūtra, 1.2.1
19. Uttarādhyayanasūtra, 4.2

* Professor (Retd.) of Sanskrit, JainarainVyas University, Jodhpur (Rajasthan) & Chief editor-
Jinwani, S1, 28 Ayuvaan Singh Nagar, Maharani Farm
Durgapura, Jaipur 302018 (Rajasthan)
dcjain.jnvu@gmail.com, 9413253084

क्या आधुनिक विज्ञान अन्ततः जैनदर्शन की ओर बढ़ रहा है?

डॉ. सुरेन्द्रसिंह पोखरना

आज विज्ञान के ज्ञान और उससे विकसित तकनीकी ज्ञान ने विश्व को कम्प्यूटर, हवाईजहाज़, सैटेलाइट, मोबाइल, टेलीविजन, कारें, बसें, बड़े-बड़े उद्योग, कारखाने, कई उपयोगी दवाइयाँ, रासायनिक खाद, ए.सी. एवं अन्य हज़ारों चीज़ें दी हैं, जिनका हम दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। पर इन्हीं सुविधाओं के साथ विज्ञान ने विश्व को परमाणु हथियार, मिसाइलें, टैंक, कई क्रिस्म की तोपें, रासायनिक हथियार भी दिये हैं, जिनसे विश्व को कई बार नष्ट किया जा सकता है। इसी सन्दर्भ में एक और जानकारी यहाँ देना बहुत जरूरी है और वह यह है कि सन् 1970 से 2010 के चालीस वर्षों के अन्तराल में पृथ्वी के आधे जीव-जन्तु और पशु नष्ट हो गये। हर वर्ष पृथ्वी से लगभग 25,000 जीवों की प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं, जैसे कि आजकल काला हिरण, तितलियाँ, बिच्छू, साँप, चिड़ियाँ वगैरह देखने को कम मिलते हैं। हर वर्ष मांसाहारी भोजन के लिए लगभग 15,000 करोड़ जीवों की हत्या की जाती है जिससे पर्यावरण को भारी नुकसान हो रहा है। दूसरी ओर विज्ञान और टेक्नोलॉजी एक छोटी-सी चींटी या घास की एक पत्ती पैदा नहीं कर पाये, क्योंकि ऐसा लगता है कि जीव से ही जीव पैदा होता है और अगर इस सन्दर्भ में जैन-दर्शन की बात करें तो जीव और अजीव का अलग-अलग अस्तित्व है और अजीव पदार्थ से जीव पैदा नहीं किया जा सकता है, यह तथ्य पुष्ट होता है।

वर्तमान विज्ञान की सीमाएँ हैं जिन्हें हमें समझना बहुत जरूरी है। क्वाण्टम भौतिकी में कोई भी प्रयोग करते हैं तो परिणाम मानव मन या चेतना की स्थिति पर निर्भर करता है। यानी हम अगर किसी इलेक्ट्रॉन के लहर रूप को देखना चाहेंगे तो लहर रूप देखेंगे, पर अगर

इलेक्ट्रॉन के कण वाले रूप को देखना चाहते हैं तो कण वाले रूप को देखेंगे। यानी इलेक्ट्रॉन का गुण हमारी चेतना की अवस्था पर निर्भर करता है। उसका कोई मौलिक रूप नहीं है।

विकासवाद का कोई भी सिद्धान्त विज्ञान की विधि से सिद्ध नहीं किया जा सकता है, क्योंकि जो भी परिवर्तन होगा उसे दुहराया नहीं जा सकता है। ब्रह्माण्ड की ज़्यादातर घटनाएँ ऐसी होती हैं जिन पर मानव का कोई विशेष नियन्त्रण नहीं होता है, इसलिये उन्हें भी कम ही दोहराया जा सकता है। परामनोविज्ञान की ऐसी सैकेडों घटनायें हैं, जिनका हज़ारों लोगों को अनुभव है, जिन्हें झुठलाया नहीं जा सकता है। पर वर्तमान विज्ञान की परिभाषा में इन्हें अभी पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इन क्षेत्रों में पर्याप्त आँकड़े आसानी से उपलब्ध नहीं होते हैं और किसी भी घटना को दोहराने में कठिनाई आती है। पर इन्हें नकारा भी नहीं जा सकता है।

इन्हीं विरोधाभासों को ध्यान में रखते हुए आजकल विज्ञान में भी चेतना और आत्मा की बात की जाने लगी है। ऐसी परिकल्पनाओं के बारे में विचार किया जा रहा है, जिनसे कि न केवल आधुनिक भौतिक विज्ञान को अच्छी तरह समझा जा सके, बल्कि उसके साथ-साथ रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, परामनोविज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान को भी एक ही मॉडल से समझा जा सके। आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में कई वर्षों से एक ऐसे सार्वभौमिक सिद्धान्त को विकसित करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है जिसे Theory of Everything कहा जाता है। पर ज़्यादातर ऐसी परिकल्पनाओं में विशेषकर सिर्फ उन्हीं परिकल्पनाओं पर ज़्यादा ध्यान केन्द्रित किया गया है,

जिनका उद्देश्य केवल भौतिक शास्त्र के सिद्धान्तों को ही मिलाने पर बल होता है। क्योंकि साधारणतया मनुष्य मूल रूप से सिर्फ चार आयामों (आकाश के तीन यानी X, Y, Z और समय का एक यानी T) में लगभग पूरा जीवन व्यतीत कर देता है। साधारण जीवन की ज़्यादातर घटनाओं और क्रियाओं (99.9%) को इन चार आयामों से समझा जा सकता है। परन्तु अपने पूरे जीवन में कभी न कभी हर मनुष्य को कुछ ऐसी घटनाओं से पाला पड़ता है या कुछ ऐसे अनुभव होते हैं, जो आम मान्यताओं और सोच से परे होते हैं। जैसे कि कुछ व्यक्तियों को कुछ घटनाओं का कभी-कभी पूर्वाभास हो जाता है। कभी-कभी स्वप्नों में ऐसे दृश्य दिखाई देते हैं जो बाद में जाकर असली जीवन में भी दिखाई देते हैं। इसी तरह से कुछ चमत्कारिक घटनाओं का भी अनुभव कभी-कभी कुछ लोगों को होता है। आज भी गुजरात में प्रसिद्ध माँ अम्बाजी के एक भक्त परम श्रद्धेय प्रहलाद भाई जानी जिन्हें लोग 'चुनरी वाले माताजी' कहते हैं के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने लगभग 80 वर्षों से न खाना खाया है और न ही पानी पीया है। कुछ वर्षों पहले पद्मश्री डॉ. सुधीर शाह के नेतृत्व में एक 20 डॉक्टरों के दल ने उनको एक कमरे में बन्द कर लगातार 10 दिन तक उन पर परीक्षण किये और पाया कि 'माताजी' ने 10 दिन तक न खाना खाया और न ही पानी पीया, फिर भी उनके शरीर में सभी मेडिकल पैरामीटर ज़्यादातर सामान्य पाये गये। ऐसे उदाहरण बहुत ही कम मात्रा में पाए जाते हैं, पर क्या विज्ञान को इन्हें समझने का प्रयास नहीं करना चाहिये? और अगर वर्तमान विज्ञान के नियमों से अगर ऐसी घटनाओं को समझने में कठिनाई आ रही है तो क्या विज्ञान के नियमों का पुनर्मूल्यांकन नहीं करना चाहिए? ऐसा भी हो सकता है कि वर्तमान विज्ञान अभी अपूर्ण है और ऐसे उदाहरण विज्ञान को भी नयी दिशा प्रदान कर सकते हैं?

ऐसा ही एक मॉडल प्रोफ़ेसर एडवर्ड आर क्लोज और प्रोफ़ेसर वर्नोन एम नेप्पे ने विकसित किया है (सी

एन मॉडल), जिसका शीर्षक है "Reality Begins with Consciousness : A paradigm shift that works". जैसा कि शीर्षक से ही प्रतीत होता है, इस मॉडल में आत्मा को सृष्टि का मूल तत्त्व माना गया है। यह विचार जैन-दर्शन के सिद्धान्त से बहुत ही मेल खाता है। इस मॉडल की आजकल बहुत चर्चा है, क्योंकि यह मॉडल Theory of Everything के 24 मॉडल्स में सबसे श्रेष्ठ माना जा रहा है और इसीलिए यहाँ पर एक मॉडल की चर्चा की जा रही है। यह बहुत ही आश्चर्य और गौरव की बात है कि इस मॉडल की ज़्यादातर बातें जैन-दर्शन से काफी मिलती हैं।

इस मॉडल की महत्वपूर्ण बात यह है कि ब्रह्माण्ड के असली सत्य को समझने के लिए 9 आयामों (Dimensions) की आवश्यकता है। पर हम यहाँ बताना चाहेंगे कि यह 9 आयाम String Theory के 10, 11, 26 आयामों से भिन्न हैं। इनमें आकाश (Space) के तीन आयाम हैं, यानी (X, Y, Z)। समय के भी तीन आयाम (Dimensions) माने गये हैं। समय का एक आयाम तो साधारण समय की व्याख्या करने के लिए काम लिया गया है। पर समय का एक और आयाम माना गया है, जिसकी सहायता से कभी भी घटना के पूर्वाभास की वैज्ञानिक रूप से व्याख्या की जा सके। समय के तीसरे आयाम की आवश्यकता मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा (Free Will) या पुरुषार्थ की वैज्ञानिक व्याख्या करने के लिए की गयी है। इस तरह से इस मॉडल में भौतिकविज्ञान, मनोविज्ञान और परामनो-विज्ञान को मिलाने का प्रयास किया गया है। ये दो वैज्ञानिक महसूस करते हैं कि जब भी ऋषि-मुनि या महापुरुष ध्यान की उच्च अवस्था में होते हैं तो उन्हें ऐसे नये आयामों का पता लग जाता है तथा उनसे सम्बन्धित नियमों का भी ज्ञान हो जाता है।

यद्यपि ये वैज्ञानिक आत्मा की सीधे रूप में बात नहीं करते हैं, पर वे चेतना की बात करके चेतना के तीन आयामों की बात करते हैं। चेतना का पहला आयाम उसके विस्तार (Extent) को प्रदर्शित करता है। दूसरा

आयाम चेतना में उपस्थित तत्त्व (Content) को प्रदर्शित करता है तथा चेतना का तीसरा आयाम उसके प्रभाव या उस पर दूसरी चीज़ों के प्रभाव (Impact) को प्रदर्शित करता है। यही नहीं, इस मॉडल में चेतना के कई स्तरों की भी बात कही गयी है जो कि जैन-दर्शन में वर्णित चेतना के अलग-अलग स्तरों (यानी गुणस्थानों) की परिकल्पना से काफ़ी मेल खाती है। यही नहीं, जब अलग-अलग स्तरों की बात करते हैं तो उन्होंने सब-क्वाण्टम स्तर (यानी इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन, न्यूट्रोन व क्वार्क से भी काफ़ी नीचे) के स्तर से लेकर परमाणु स्तर, अणु स्तर से लेकर Astrological स्तर से होते हुए पूरे ब्रह्माण्ड (Cosmological) के स्तर तक चेतना की परिकल्पना की है। चेतना में उपस्थित एक महत्वपूर्ण इकाई को अर्थपूर्ण सूचना (Meaningful Information) का नाम दिया गया है। यह विचार जैन-दर्शन में वर्णित आत्मा के गुणों (अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन) से काफ़ी मेल खाता है। चेतना क्योंकि हर चीज़ में उपस्थित है, इसलिए जीवन के लिए DNA और RNA होना ज़रूरी नहीं है। चेतना और जीवन का लक्षण दूसरे रूप में भी हो सकता है। इसलिए देवी-देवता का अस्तित्व भी सम्भव है। इनके अलावा भी जीव हो सकते हैं। दूसरे प्रकार के जीव भी हो सकते हैं जैसे कि जैन-दर्शन में वर्णित निगोद।

सी एन मॉडल में आकाश, समय और चेतना के अत्यन्त बारीक खण्डों की कल्पना की गयी है जिन्हें क्रमशः Quisit (आकाश), Chronit (समय) और Conscit (चेतना) कहा गया है। ये अत्यन्त सूक्ष्म हैं और इनको आगे खण्डित नहीं किया जा सकता है। यह विचार जैन-दर्शन में वर्णित आकाश के प्रदेशों एवं आत्म प्रदेशों तथा समय के छोटे से छोटे भाग से की जा सकती है। इन दो परिकल्पनाओं में इतनी ज़बरदस्त समानता आश्चर्यजनक है।

एक और आश्चर्यजनक समानता जो दोनों विचारधाराओं में है, वह यह है कि जैन-दर्शन में पदार्थ के प्रदेशों और आत्म-प्रदेशों में स्पन्दन (Vibrations)

की बात कही गयी है, जिसके कारण इन प्रदेशों में संकुचन और विस्तार की कल्पना की गयी है। सी एन मॉडल में भी ऐसे स्पन्दनों जैसी बात कही गयी है जिन्हें भँवर (Vortices, Vortex का बहुचन) कहा गया है। सैद्धान्तिक रूप से दोनों में काफ़ी समानता है।

इन दो वैज्ञानिकों के इस मॉडल में अनन्त आकाश और चेतना के अनन्त ज्ञान की भी बात की गयी है। इन दोनों का मूल कारण है प्रसिद्ध महान् वैज्ञानिक गोडल के दो अपूर्णता के प्रमेय (Two Incompleteness Theorems), जिनके अनुसार मानव द्वारा विकसित किसी भी भाषा, या वैज्ञानिक विधि या किसी भी गणित के सूत्रों से ब्रह्माण्ड के पूर्ण सत्य को नहीं समझा जा सकता है। ब्रह्माण्ड के असली और पूरे सत्य को जानने के लिए आकाश और समय को अनन्त मानना ज़रूरी है। जैसे कि जैन-दर्शन में आकाश को दो भागों में बाँटा गया है जिन्हें लोकाकाश और अलोकाकाश कहा गया है। लोकाकाश की सीमायें सीमित हैं, परन्तु उसके चारों ओर जो अलोकाकाश की बात कही गयी है, उसकी कोई सीमाएँ नहीं हैं, यानी वह अनन्त है। अलोकाकाश का अनन्त होना, गोडल के प्रमेय के अनुसार आवश्यक है। इसी तरह से आत्मा में जब जैनधर्म में अनन्त ज्ञान की बात कही गयी है तो वह भी गोडल प्रमेय के कारण आवश्यक है। इसके बिना सम्पूर्ण सत्य की बात नहीं की जा सकती है।

आकाश, समय और चेतना के इस संग के बीच पदार्थ, ऊर्जा और ज्ञान (Meaningful Information) रहता है। ये सब आपस में जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। इस मॉडल से जैन-दर्शन में वर्णित आत्मा और कर्म के सम्बन्ध ज़्यादा अच्छी तरह से समझने में सहायता मिलेगी। चेतना के इस तरह शुरू से विद्यमान होने से चेतना किसी न किसी रूप में ब्रह्माण्ड में मौजूद है। सी एन मॉडल में चेतना (Sub quantum level) से लेकर न केवल पूरे ब्रह्माण्ड तक उपस्थित होने की परिकल्पना की गयी है, पर उससे आगे भी अनन्त आकाश में उपस्थित होने की बात कही गयी है।

पर हम आसानी से समझ सकते हैं कि जैन-दर्शन में क्यों पृथ्वीकाय, वायुकाय, अप्काय, अग्निकाय और वनस्पतिकाय में हर एक के साथ काय शब्द जोड़ा गया है, क्योंकि जैन-दर्शन में पृथ्वी, जल, हवा, अग्नि और वनस्पति में जीव (चेतना) के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। सी एन मॉडल में माना गया है कि चेतना (Quantum Consciousness) छोटे-छोटे से स्तर पर भी होती है। इसलिए पृथ्वीकाय, वायुकाय, अप्काय, अग्निकाय और वनस्पतिकाय में कम से कम चेतना (Quantum Consciousness) निश्चित रूप से होती है।

सी एन मॉडल में अवधिज्ञान और मनःपर्याय ज्ञान पर भी प्रकाश डाला गया है और नौ ऐसे परामनोविज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञानों का जिक्र किया गया है जिनके सन्देह से परे होने के वैज्ञानिक सबूत हैं। जैन-दर्शन में तो अवधिज्ञान और मनःपर्यायज्ञान पर काफ़ी साहित्य उपलब्ध है तथा कई उदाहरणों का जिक्र मिलता है। उसके कई प्रकार भी बताये गये हैं। परन्तु विश्व के कुछ वैज्ञानिक आज भी इन परामनोविज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञानों को नहीं मानते हैं, क्योंकि यह विशेष परिस्थितियों में ही पाए जाते हैं, साधारण परिस्थितियों में नहीं पाए जाते हैं। वर्तमान विज्ञान अभी भी उन विशेष परिस्थितियों को पूरी तरह से ढूँढ़ नहीं पाया है।

सी एन मॉडल में संहति (Mass), शक्ति (Energy) और सूचना (Information) को आकाश, समय और चेतना के (Content) रूप में मान्यता दी हुई है। इसलिए इन सबका जन्म-जन्मान्तरों से सम्बन्ध है। जैन-दर्शन में चेतना और कर्म (एक प्रकार का पदार्थ) का बन्धन जन्म-जन्मान्तरों से माना गया है। और पूरे जैन-दर्शन का निचोड़ ही यही है कि असली ज्ञान आत्मा में ही निहित है, और कर्म (एक प्रकार का पदार्थ, जैन-दर्शन में कर्म का अर्थ किसी भी प्रकार की क्रिया से नहीं है) एक आवरण का रूप लेकर हमें इस असली ज्ञान से दूर रखता है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति साधना

और ध्यान में आगे बढ़कर चेतना की उच्च अवस्था में जाता है, कर्म का आवरण पतला होता जाता है और व्यक्ति के ज्ञान का स्तर बढ़ता जाता है। सी एन मॉडल में अभी ऐसी बातों पर विचार नहीं हुआ है, परन्तु इस मॉडल में विकास (Evolution) की बात विस्तार से की गयी है, इसलिये जैन-दर्शन इस मॉडल को आगे बढ़ाने में मार्गदर्शन का कार्य कर सकता है।

एक और घोर आश्चर्य की बात यह है कि जैसे जैन-दर्शन में अनेकान्तवाद और स्याद्वाद की बात कही गयी है वैसी की वैसी ही बात सी एन मॉडल में भी कही गयी है। यानी सी एन मॉडल में Relative zero, relative infinity, relative vortices सीमित और अनन्त ब्रह्माण्ड Objective और Subjective reality वगैरह की बात की गयी है और स्वीकार किया गया है कि हम क्योंकि हमेशा तीन आकाश के एवं एक समय के आयाम से देखते और सोचते हैं, इसलिए हमारा ज्ञान हमेशा आपेक्षिक ही रहेगा। केवल यही नहीं, वर्तमान सी एन मॉडल के नौ आयामों के सहारे जिस सत्य का प्रतिपादन करेंगे, वह भी आपेक्षिक ही होगा, क्योंकि सी एन मॉडल में नौ से अत्यधिक ज़्यादा आयामों की भी सम्भावना स्वीकार की गयी है और ये सभी किसी न किसी रूप में चेतना से जुड़े हुए हैं।

इस लेख के माध्यम से हम यह बताना चाहते हैं कि भगवान महावीर के सन्देश और जैन आगमों में वर्णित प्रकृति के ज्ञान के बारे में जो बातें बतायी गई हैं उन पर वैज्ञानिकों को गम्भीर होकर शोध करना चाहिये। इस ज्ञान के भण्डार से कई नयी चीज़ें और नए विचार मिल सकते हैं जो वर्तमान विज्ञान को नया रास्ता दिखा सकते हैं। और साथ में जैन आचार, विचार और आत्मा के कल्याण की बातों से वर्तमान समय की समस्याओं को सुलझाने में बहुत सहायता कर सकते हैं।

-भूतपूर्व वैज्ञानिक, भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरॉ)

-बी 71, पृथ्वी टॉवर, जोधपुर चार रास्ता, अहमदाबाद-380015 (गुजरात)

धर्म संगत हो व्यापार

श्री जयदीप ढङ्गा

सभी व्यापारी मुनाफ़ा कमाने के लिए व्यापार करते हैं। यह स्वाभाविक भी है। लेकिन जरूरी नहीं कि मुनाफ़ा कमाने का उनका तरीका हमेशा नीतिसङ्गत हो। अन्धाधुन्ध कमाने की फिराक में वे अक्सर सच्चे और ईमानदार रास्ते से भटक जाते हैं। वे भूल जाते हैं कि व्यापार का भी एक धर्म होता है। व्यावसायिक नीति होती है। कारोबार में अनैतिक तरीके अपनाकर तुरन्त लाभ तो कमाया जा सकता है, किन्तु यह लाभ स्थायी नहीं रहता। इससे भविष्य में आर्थिक स्थिति कमजोर होती है और व्यवसाय असफल। ऐसे में वे न केवल ग्राहकों को खोते हैं, बल्कि अपनी छवि भी खराब कर लेते हैं। उनकी विश्वसनीयता खत्म हो जाती है। जब उनकी नीयत में खोट आती है, तो उनकी नियति बदलते देर नहीं लगती। व्यापार धर्म के साथ किया जाता है, तो वह फलता है। इससे सबको खुशी मिलती है, बरकत होती है। घर तथा परिवार में खुशहाली आती है। आजकल ऐसा प्रायः देखा जाता है कि व्यक्ति येनकेन प्रकारेण मुनाफ़ा कमाना चाहता है। चाहे इससे सामने वाला घोर तकलीफ़ में ही क्यों न आ जाए। वस्तुओं के उत्पादन में न प्रामाणिकता है और न ही विश्वसनीयता। बस कैसे भी धन आ जाए। छल से या बल से।

याद रखिए ऐसा धन बहुत कष्टकारी होता है। व्यावसायिक फैसलों से पूरा समाज प्रभावित होता है। इसलिये एक व्यवसायी को अपने फैसले सामाजिक जिम्मेदारियों को नज़र में रखते हुए लेने चाहिए। सामाजिक जिम्मेदारी की भावना और नीतिगत फैसलों से ही उनके व्यवसाय को स्थायी सफलता मिल सकती है। अपने जिस व्यवसाय की सफलता के लिए वे गलत निर्णय लेते हैं, उससे वे कहीं के नहीं रहते। न परिवार के, न समाज के और न ही व्यवसाय के। सब जगह पतन ही

पतन। भ्रष्ट होने का स्थायी ठप्पा लग जाता है। फिर वे चाहे कितना भी नैतिक बनने की कोशिश करें, असफल ही रहते हैं।

व्यवसाय के क्षेत्र में रुपया उधार लेना-देना आमबात है। खासकर जमीन की खरीद-फ़रोख्त में लाखों-करोड़ों की लेनदारी-देनदारी चलती है। आजकल उधार के रुपयों से लोग जमीन पर जमीन खरीद रहे हैं। कुछ लोगों ने अपने फायदे के लिए जमीनें उधार दिलवाना आसान भी बना दिया है। परन्तु अब जमीन बिक नहीं रही है, तो उधारी कैसे चुकाए? लेकिन ऐसा ही नहीं है। कई उधार लेने वालों ने अपनी नीयत भी खराब कर ली है। जमीन-जायदाद के अलावा उनके पास अपने रुपये होते हुए भी लौटाना नहीं चाहते। बहाना यह कि जमीन बिकेगी या फिर मेरा अपना रुपया आएगा तब दूँगा। जिसने उधार दिया, उसकी तो ज़िन्दगी भर की बचत दौंव पर लग गई। पैसा फँस गया। यह उन लोगों के लिए बहुत दुःखदायी है। उनका ब्याज तो दूर, मूल भी गया। कभी-कभी तो वे काफी तनाव में आ जाते हैं। अब आप ही सोचिए, व्यवसाय में खरे रहने की कितनी आवश्यकता है। अपने वादों को समय पर पूरा करने की कितनी जरूरत है। वरना कारोबारियों के धर्म पर प्रश्न चिह्न लगता है। उनके सामाजिक और नैतिक दायित्वों पर सवाल उठता है।

समाज की मानसिकता यह है कि जिसने पैसा कमा लिया, उसे समझदार समझा जाता है। जो व्यापार में असफल रहा, उसे बेवकूफ़ माना जाता है। यह दृष्टिकोण सही नहीं है। अगर होड़ पैसे कमाने की है, तो यही सही। परन्तु उन्हें धर्मसङ्गत रास्ता तो चुनना ही होगा। जो लोग सही तरीके से पैसा कमाने की राह पर अडिग हैं और व्यापार में सफलता भी पाई है, वे ही सही

मायने में हमारे आदर्श हो सकते हैं। उन्होंने खुद को कमजोर समझने की बजाय, समाज के लिए उपयोगी नीतियों से व्यापार में सफलता की मिसाल खड़ी की है। ऐसी मिसाल, जिसका आनन्द वे स्वयं तो लेंगे ही, समाज भी ले सकेगा। याद रखें, कमल भी कीचड़ में खिलते हैं। कुछ ऐसी शख्सियत भी हैं, जिन्होंने व्यवसाय जगत् की धर्म-विरोधी नीतियों के दलदल से

खुद को परे रखते हुए अपना नाम कमाया है। वे अपनी साफ-सुथरी व्यावसायिक नीतियों से न केवल व्यवसाय में अग्रणी रहे हैं, बल्कि अपनी उदारता और मानवता के लिए भी जाने जाते हैं। ऐसे स्वच्छ छवि वाले व्यक्तियों से हमें इंसानियत और धर्मसङ्गत व्यापार की प्रेरणा लेनी चाहिए।

-ढङ्गर मार्केट, जौहरी बाजार, जयपुर-302003

आराध्य आचार्यदेव हीरा को वन्दन-नमन

आज चैत्र कृष्णा अष्टमी है। आज ही के दिन आदि तीर्थंकर आदिनाथ भगवान का जन्म-कल्याणक हुआ, तो आज ही के दिन विक्रम सम्वत् 1995 की चैत्र कृष्णा अष्टमी को पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का जन्म भी हुआ।

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के व्यक्तित्व-कृतित्व और नेतृत्व से आप-हम-सब भली-भाँति परिचित हैं। जैन-जैनेतर जनसमुदाय हर्षित-उल्लसित मन से आपश्री के दर्शन-वन्दन करके प्रमोदभाव से फूला नहीं समाता।

स्थानकवासी परम्परा के सबसे ज्येष्ठ आचार्य की पैठ और प्रतीति में आचार्य श्री हीरा के ध्यान-मौन, त्याग-तप, साधना-आराधना तथा शास्त्र-स्वाध्याय में उनकी रमणता देखकर लोग आपश्री को गुरु हस्ती की प्रतिकृति समझते हैं।

आचार्यश्री हीरा के शासनकाल में परम्परा के मूलपुरुष से लेकर अब तक सर्वाधिक दीक्षाओं का योग भी आपके कुशल नेतृत्व की कहानी कहता है। आपश्री लीक से हटकर चलने में सिद्धहस्त हैं। आचार्य श्री हस्ती के पट्टधर आचार्यश्री हीरा ने पुण्यधरा पीपाड़ चातुर्मास में संवत्सरी महापर्व के दिन महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. को भावी आचार्य घोषित करके एक नया अध्याय प्रारम्भ किया है। आपश्री के साहसिक निर्णय की प्रशंसा सब ओर से सुनने को मिल रही है।

आचार्य श्री हीरा दूरदर्शी हैं, सूझबूझ के धनी हैं और समुचित निर्णय-क्षमता में आपको महारत हासिल है। साधु-समाज में समाचारी का सम्यक् परिपालन हो, विचरण-विहार और चातुर्मास संघ की मर्यादानुसार हो तथा आज्ञा-अनुशासन में कोताही न हो, इसका आपश्री पूरा ध्यान रखते हैं। संघ-दीप्ति और शासन-प्रभावना में आपश्री शुरु से सजग रहे हैं, इसीलिए संघ में शान्ति तथा आनन्द की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

हम आराध्य आचार्यदेव के 84वें जन्म-दिवस पर सश्रद्धा-सभक्ति-सविनय पुनः पुनः वन्दन-नमन करते हुए आपश्री के स्वास्थ्य-समाधि की हार्दिक बधाई व शुभकामना व्यक्त करते हैं।

-नौरतनमल मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी

9, पारस, शिवशक्ति नगर, रोड़ नं. 1, महामन्दिर, जोधपुर (राजस्थान)

दिगम्बर परम्परा में प्रतिपादित सामायिक : स्वरूप एवं प्रयोग*

डॉ. अनिल कुमार जैन

दिगम्बर परम्परा में सामायिक को साधुओं के लिए आवश्यक कार्य माना गया है, लेकिन श्रावकों के लिए इसे शिक्षाव्रतों में लिया गया है। साधुओं के छह आवश्यकों में सामायिक और प्रतिक्रमण दोनों हैं, लेकिन सामायिक को प्रतिक्रमण से पहले लिया गया है। वस्तुतः सामायिक में स्थिर रहने के लिए प्रतिक्रमण किया जाता है। यदि साधक मूर्च्छावश साधना से विचलित हो रहा है या उसकी साधना पर कोई (आन्तरिक) आक्रमण हो रहा है तो उसे रोकने के लिए तथा पुनः साधना में लौटने के लिए प्रतिक्रमण किया जाता है। कषायों का शमन हो जाता है तब समता आती है। मन-वचन-काय की चेष्टा को विषमता से रहित करना समता है, सामायिक है। सामायिक का अधिकारी वही माना गया है जो व्रती है। गृहस्थ अभ्यास करता है, लेकिन उसे व्रती होना चाहिए। जो व्रत रूपी बन्धन (अनुशासन) में होगा वही सामायिक कर सकेगा।

दिगम्बर परम्परा में भी आचार्यों ने सामायिक को चार प्रकार से निरूपित किया है¹—(1) सामायिक व्रत, (2) सामायिक प्रतिमा, (3) सामायिकचारित्र और (4) सामायिक आवश्यक। ये चारों अलग-अलग हैं। इन चारों की चर्चा क्रमशः करेंगे, जिससे सामायिक के बारे में समझने में सुविधा होगी।

सामायिक व्रत—श्रावक के आचरण के ग्यारह दर्जे होते हैं उन्हें ग्यारह प्रतिमा कहते हैं। श्रावक ऊँचे-ऊँचे चढ़ता हुआ पहली से दूसरी, दूसरी से तीसरी इस तरह आगे बढ़ता हुआ ग्यारहवीं प्रतिमा तक चढ़ता है। उससे आगे चढ़कर वह साधु या मुनि हो जाता है। पहली

दर्शन प्रतिमा में अष्ट मूल गुणों (पञ्च उदम्बर फल, तथा तीन मकार का त्याग) का पालन करता है तथा सात व्यसनों का अतिचार सहित त्याग करता है। सच्चे देव, शास्त्र और गुरु का श्रद्धान करता है। यहाँ सामायिक की कोई बात नहीं कही गयी है।

दूसरी व्रत प्रतिमा में श्रावक पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत (दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्डव्रत) और चार शिक्षाव्रत (सामायिक, प्रोषधोपवास, भोगोपभोग परिमाण, अतिथिसंविभाग) का पालन करता है।² यहाँ सामायिक को शिक्षाव्रत में लिया गया है। सब प्राणियों के प्रति समता भाव धारण करना, संयम के विषय में शुभ विचार रखना तथा आर्त और रौद्र ध्यानों का त्याग करना इसे सामायिक व्रत कहते हैं अथवा मन, वचन और काय तथा कृत, कारित एवं अनुमोदना, इनसे निष्पन्न (3 X 3 = 9) ऐसे नवकोटि से की हुई मर्यादा के भीतर या बाहर भी नियत समय (अन्तर्मुहूर्त) पर्यन्त पाँच पापों का त्याग करना सामायिक व्रत कहलाता है।³

सामायिक व्रत के पाँच अतिचार हैं, जिनसे बचना चाहिए; ये हैं—1. मनोदुष्प्रणिधान (मन में बुरा चिन्तन करना), 2. वचन दुष्प्रणिधान (वाणी से मृषा, कर्कश, मर्मवेधी बातें बोलना), 3. काय दुष्प्रणिधान (शरीर से बुरे आचरण करना), 4. अस्मृति (सामायिक कर रहा हूँ, इसे भूल जाना) और 5. अनवस्थितता (अव्यवस्थित अथवा अशास्त्रीय रीति से सामायिक करना)।^{4,5}

सामायिक प्रतिमा—श्रावक की तीसरी प्रतिमा 'सामायिक' है। जिस श्रावक की बुद्धि निरतिचार सम्यग्दर्शन, निरतिचार मूलगुण और उत्तर गुणों के समूह

* परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की सन्निधि में 25-26 सितम्बर, 2021 को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा मानसरोवर-जयपुर में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

के अभ्यास से विशुद्ध है, ऐसा श्रावक पूर्वाह्न, मध्याह्न और अपराह्न इन तीनों कालों में परीषह एवं उपसर्ग उपस्थित होने पर भी साम्य भाव को धारण करता है वह सामायिक प्रतिमाधारी है। इसमें श्रावक प्रतिदिन सुबह, दोपहर और सायंकाल इन तीन संध्याओं में निरतिचार सामायिक करता है, इसीलिए इसे सामायिक प्रतिमा कहते हैं।⁶

व्रत प्रतिमा में एक बार, दो बार अथवा तीन बार सामायिक होती है जबकि सामायिक प्रतिमा में नियम से तीन बार सामायिक करना अनिवार्य है। यही सामायिक व्रत और सामायिक प्रतिमा में अन्तर है।

अन्नती गृहस्थ भी सामायिक कर सकता है, लेकिन व्रती के कर्मों की निर्जरा तथा अन्नती के कर्मों की निर्जरा में बहुत अन्तर होता है। जो सामायिक व्रत के साथ की जाती है उसका अधिक महत्त्व बताया गया है।

सामायिक चारित्र—तत्त्वार्थसूत्र में चारित्र के पाँच प्रकार बताये गये हैं—सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसम्पराय और यथाख्यात।⁷ सामायिक चारित्र में आजीवन पाँच महाव्रतों को अङ्गीकार किया जाता है। यह मुनि अवस्था में होता है। सामायिक चारित्र में सकल संयम संगृहीत है। ऐसे सर्व सावद्य (मन, वचन, काय तीनों की हिंसाजनक प्रवृत्ति) के त्याग रूप अभेद संयम को धारण करना सामायिक-चारित्र है, जो स्व-शुद्धात्मा की अनुभूति के बल से आर्त्त-रौद्र परिणामों के परित्याग रूप अथवा समस्त सुख-दुःख आदि में माध्यस्थ भाव (समता भाव) रखने रूप है। उसे धारण करने वाला सामायिक संयत कहलाता है। वह सामायिक चारित्र दो प्रकार का होता है—नियतकाल और अनियतकाल। सर्व सावद्य योगों का अभेद रूप से सार्वकालिक त्याग करना अनियत काल या सर्वकाल सामायिक है। नियत समय तक त्याग करना नियतकाल सामायिक है अथवा स्वाध्याय आदि कृतिकर्म पूर्वक आसन आदि लगाकर (पञ्चपरमेष्ठी आदि के स्वरूप का या निजात्मा का चिन्तन करना)

नियतकाल सामायिक है।⁸ जब मुनि के सब पापों से निवृत्ति हो जाती है तो वे नियम से सामायिक चारित्र में स्थित हो जाते हैं।

सामायिक आवश्यक—मुनियों के छह आवश्यक भी बताये गये हैं जिनमें वे निरन्तर रत रहते हैं, ये हैं—समता (सामायिक), स्तुति, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग।⁹ इनमें सामायिक सबसे पहला है। सामायिक चारित्र की चर्या में जब दोष लग जाते हैं तो 'सामायिक आवश्यक' बताकर उन दोषों का परिमार्जन किया जाता है। दोषों को दूर करने के लिए नियत सामायिक-तीन सन्ध्याओं में की जाती है। इसे सामायिक आवश्यक कहते हैं। आचार्य विद्यासागरजी कहते हैं—समता में लीन रहना उत्कृष्ट स्थिति है। समता के लिए ही स्तुति है और स्तुति बिना समता के होती नहीं है। यदि बिना समता के स्तुति है तो उसका कोई महत्त्व नहीं है। स्तुति के परिमार्जन और समीचीनता के लिए वन्दना है। इसके बाद आता है प्रतिक्रमण। यदि कहीं कोई चूक हो गई तो यह वापस लौटने की प्रक्रिया है। इसका साधक तो स्वयं में लौट ही रहा है। प्रतिक्रमण अतीत का होता है। फिर आता है प्रत्याख्यान, यानी कि दोषों की पुनरावृत्ति न होने देना और अन्त में आता है कायोत्सर्ग (काया का उत्सर्ग)। शरीर से ममत्व छोड़ देना, काय से अनासक्त होना तथा मन एकाग्र होना कायोत्सर्ग कहलाता है। प्रतिक्रमण में सामायिक गर्भित है, लेकिन सामायिक में प्रतिक्रमण गर्भित नहीं है। सामायिक तक पहुँचने के लिए प्रतिक्रमण एक रास्ता बनता है। सामायिक नीरोग अवस्था है और प्रतिक्रमण रोग हटाने की प्रक्रिया है। सामायिक के लिए प्रतिक्रमण है।

आचार्य विद्यानन्दजी¹⁰ कहते हैं कि प्रतिक्रमण और सामायिक एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं, लेकिन पर्यायवाची नहीं हैं। ये आत्म-शुद्धि की विशेष क्रियाएँ हैं। प्रतिक्रमण और सामायिक तो साधन हैं। साध्य तो मनुष्य के उत्तम/ निर्मल परिणाम हैं। लोग साधन को ही साध्य मान बैठे हैं। यदि मिथ्यादृष्टि मंगलाचरण करेगा,

तो उसे पुण्य का फल मिलेगा, किन्तु पाप का प्रक्षालन नहीं होगा। धवला में एक स्थान पर कहा है—सम्यग्दृष्टि यदि सामायिक/ प्रतिक्रमण, जप-तप, देवदर्शन करेगा, तो उसकी क्रियाओं से पापों का क्षय भी होगा और पुण्य का बन्ध भी। सम्यक्त्व अनिवार्य है। सम्यग्ज्ञान प्रत्याख्यान का कार्य करता है, यानी आने वाले कर्मों को रोक देता है और सम्यक् चारित्र प्रतिक्रमण का काम करता है, यानी वह पुराने कर्मों को बाहर फेंक देता है। सम्यग्दर्शन इन दोनों को मजबूत बनाता है। सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र ठीक तरह से चलें, उसके लिए सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र ही सीधा मोक्षमार्ग है।

प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान में अन्तर- प्रतिक्रमण भूतकाल में जितने भी दोष लगे हैं उनकी आलोचना है और भविष्य में न लगे, इसके लिए सतर्कता प्रत्याख्यान है। प्रत्याख्यान को संवर मारने। ज्ञानी ध्यान कर रहा है, उधर से धूल आ रही है, तो वह अपनी आँखें बन्द करेगा। आँख में धूल हो तो उसे पानी से साफ़ करना, धोना यह प्रतिक्रमण है और धूल भीतर न जाए यह प्रत्याख्यान है।

सामयिक और सामायिक-आचार्य समन्तभद्र ने श्रावकों के लिए सामायिक के स्थान पर सामयिक शब्द का प्रयोग किया है तथा उसे शिक्षाव्रत के अन्तर्गत लिया है। किसी समय की अवधि लेकर उतने समय तक मर्यादा के भीतर और बाहर दोनों जगह सम्पूर्ण रूप से हिंसादि पाँच पापों का त्याग करना सामयिक नाम का शिक्षाव्रत कहलाता है।¹⁰ इन दोनों का भेद स्पष्ट करते हुए आचार्य विद्यासागरजी कहते हैं कि गृहस्थ समय की पाबन्दी पालने वाला होता है, इसलिए उसे सामयिक कहते हैं, सामायिक नहीं। गृहस्थ सामयिक वाले होते हैं जबकि मुनि सामायिक वाले होते हैं। सामयिक का मतलब है समय की पाबन्दी लेकर बैठना जबकि सामायिक आजीवन होता है।¹ सामयिक को श्रावकों की सामायिक कह सकते हैं। सामायिक का अधिकारी वही

माना गया है जो व्रती है। गृहस्थ अभ्यास करता है, लेकिन उसे भी व्रती होना चाहिए। जो बन्धन (अनुशासन) में होगा वही सामायिक करेगा।¹¹

सामायिक के निश्चय और व्यवहार दो रूप हैं। तत्त्वदर्शी सम्यक् चारित्र वाले साधुओं के सहज ही निश्चय सामायिक होती है, इसके लिए उन्हें प्रयास नहीं करना पड़ता है। सामायिक को स्थिर करने के लिए नए साधक अथवा श्रावकों के द्वारा व्यवहार सामायिक की जाती है।¹² इसके लिए श्रावक आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन और मनन (स्वाध्याय) करता है, मिथ्या श्रद्धान से हटकर सम्यक् श्रद्धान में प्रवृत्त होता है तथा अणुव्रत रूप आचार को स्वीकार कर अपनाता है।

सामायिक की परिभाषा-जैसा कि ऊपर लिखा है, अलग-अलग आचार्यों ने सामायिक को कई तरह से प्रतिपादित किया है। इसीलिए सामायिक की अनेक परिभाषाएँ मिलती हैं। लेकिन सामायिक के सम्बन्ध में सब का आशय एक ही है। ये परिभाषाएँ निम्न प्रकार हैं-

1. जीवन-मरण में, लाभ-अलाभ में, संयोग-वियोग में, अप्रिय-प्रिय में, शत्रु-मित्र में, सुख-दुःख में, समभाव को सामायिक कहते हैं।^{13,14}
2. सब कार्यों में राग-द्वेष को छोड़कर समभाव होना और द्वादशाङ्गसूत्रों में श्रद्धान होना उत्तम सामायिक है।¹⁵
3. सर्व द्रव्य में राग-द्वेष का अभाव तथा आत्म स्वरूप में लीनता को सामायिक कहते हैं।¹⁶
4. सर्व सावद्य योग निवृत्ति ही सामायिक है।¹⁷
5. जिसका आत्मा संयम, नियम और तप में लीन है, उसे सामायिक रहती है।¹⁸
6. तीनों ही सन्ध्याओं में या पक्ष और मास की सन्धि दिनों में या अपने इच्छित समय में बाह्य और आभ्यन्तर समस्त पदार्थों में कषाय का निरोध करना सामायिक है।¹⁹

7. नित्य नैमित्तिक क्रिया विशेष तथा सामायिक का प्रतिपादन करने वाला शास्त्र भी सामायिक कहलाता है। यह अङ्ग बाह्य श्रुत का एक भेद है।²⁰

सामायिक के छह भेद—सामायिक का विवेचन नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा विविध दृष्टियों से किया गया है। सभी दृष्टियों से विवेचित सामायिक वर्णन में समता पर बल दिया गया है।²¹⁻²³ कर्मों के निमित्त से राग-द्वेष के विभिन्न विषयभावों से अपने आप को हटाकर स्व-स्वरूप में रमण करना समता है। किसी-किसी आचार्य ने नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव तथा किसी-किसी ने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव, ये चार भेद भी बताये हैं।

नाम सामायिक—अशुभ नाम लेना छोड़ देना और शुभ नाम लेना। इष्ट और अनिष्ट नामों में राग-द्वेष की निवृत्ति करना नाम सामायिक है। अथवा कोई मेरे विषय में शुभ या अशुभ शब्दों का प्रयोग करे तो उसमें हर्ष-विषाद नहीं करना, नाम सामायिक है।

स्थापना सामायिक—अपने अन्दर में जो अनन्त विषयों को स्थापित कर रखा है, उन्हें निकालकर वीतरागता को स्थापित करना, प्रिय या अप्रिय स्त्री-पुरुष आदि की आकृति में अथवा उनकी काष्ठ लिपि चित्र आदि प्रतिमाओं में राग-द्वेष की निवृत्ति करना स्थापना सामायिक है।

द्रव्य सामायिक—भगवान की वीतराग मुद्रा का आलम्बन के रूप में चिन्तन करना, सचित्त-अचित्त द्रव्यों में राग-द्वेष की निवृत्ति करना द्रव्य सामायिक है।

क्षेत्र सामायिक—ग्राम, नगर, खेत, कर्बट, मटम्ब, पट्टन, द्रोणमुख आदि में राग-द्वेष की निवृत्ति करना अथवा अपने निवास स्थान में कषाय का निरोध करना क्षेत्र सामायिक है।

काल सामायिक—बसन्त आदि छह ऋतुओं विषयक राग-द्वेष की निवृत्ति करना अर्थात् किसी ऋतु में इष्ट-अनिष्ट बुद्धि न करना काल सामायिक है।

भाव सामायिक—समता भाव में शुद्धोपयोग में

रमण करना भाव सामायिक है। इसमें कोई स्थूल आलम्बन नहीं रहता, मात्र आत्मा ही बचा रहता है। आत्मा ही आत्मा का आलम्बन हो जाता है। यही भाव सामायिक है। इसमें आप क्षण-प्रतिक्षण स्थिर होते हुए एकाग्र हो सकते हैं। इस समय कोई द्वन्द्व नहीं होना चाहिये। जब आप एकाग्र हो जाते हैं, समता भाव में बैठ जाते हैं, आत्मरूढ़ हो जाते हैं, तभी भाव सामायिक हो जाती है।

जिसने समस्त कषायों का निरोध कर दिया है, जो मिथ्यात्व से रहित है और जो नयों में निपुण है ऐसे पुरुष को बाधारहित और अस्खलित जो छह द्रव्य विषयक ज्ञान होता है वह भाव सामायिक है; अथवा जीवन-मरण में, लाभ-अलाभ में, संयोग-वियोग में, शत्रु-मित्र में, सुख-दुःख इन सब में मैं साम्यभाव धारण करता हूँ, सर्व जीवों से मेरा मैत्री भाव है, किसी से भी मुझे वैर भाव नहीं है, मैं सावद्य से निवृत्त हूँ, इस प्रकार के भावों को धारण करना भाव सामायिक है।

सामायिक करने की विधि—सामायिक करने के लिए क्षेत्रशुद्धि, कालशुद्धि, आसनशुद्धि, विनय शुद्धि, मनशुद्धि, वचन शुद्धि, काय शुद्धि और भाव शुद्धि, इन आठ बातों का ध्यान रखना चाहिए। पूर्वाह्न, मध्याह्न और अपराह्न इन तीन कालों में दो-दो घड़ी से लेकर छह-छह घड़ी (1 घड़ी = 24 मिनट) तक सामायिक का काल कहा गया है। चारों दिशाओं में तीन-तीन आवर्त करना, चारों दिशाओं में चार-चार प्रणाम करना, कायोत्सर्ग में स्थित होना, खड्गासन या पद्मासन में से कोई एक आसन लगाना, त्रिकाल वन्दना करना, समस्त परिग्रह का त्याग करके मन, वचन और काय के व्यापार को शुद्ध रखना यह सामायिक की विधि है। शुद्ध निर्जीव या छिद्र रहित भूमि, शिला या तखतमयी पीठिका पर बैठकर सामायिक करें। गिरि की गुफा, वृक्ष की कोटर, नदी का किनारा या पुल, श्मशान, जीर्ण-उद्यान, शून्यागार पर्वत का शिखर, सिद्ध क्षेत्र, चैत्यालय आदि शान्त और बाधारहित क्षेत्र में सामायिक करें। कमर सीधी और निश्चल रहे, नासाग्र दृष्टि हो, अपनी

गोद में बायें हाथ के ऊपर दाहिना हाथ रखा हो, नेत्र न अधिक खुले हों, न मुँदें हों, निद्रा और आलस्य से रहित प्रसन्न मुख हो ऐसी मुद्रा सहित सामायिक करें। मैं अशरण रूप हूँ। मैं अशुभ, अनित्य, दुःखमय और पर रूप संसार में निवास करता हूँ और मोक्ष इसके विपरीत है; इस प्रकार सामायिक में ध्यान करना चाहिए।²⁴⁻²⁵

जैसा कि ऊपर कहा, सामायिक के लिए आठ शुद्धियों का होना आवश्यक है। सुखासन या पद्मासन से पूर्व दिशा में बैठ जाएँ और बैठने के बाद दिशा-वन्दन कर लें कि इस स्थान से बाहर नहीं जाऊँगा; इस आसन से नहीं उठूँगा। इसके बाद गृहस्थों को यह भी बताया है कि एकान्त में वे कपड़े उतार लें या गाँठ बाँध लें। मर्यादा निश्चित कर लें। जब तक सामायिक करूँगा, इस क्षेत्र से नहीं उठूँगा। जब लघुशंका आदि का अहसास हुआ तो गाँठ खोल दी (गृहस्थों के लिए इस तरह का निर्देश है)। गृहस्थ काल निर्धारित कर लें कि इतने समय तक के लिए आरम्भ आदि परिग्रहों का त्याग करता हूँ। इस अवधि में मेरा कोई भी नहीं है। मैं केवल आत्मा हूँ। यह संकल्प लेकर चारों दिशाओं में वन्दना करके लें। वन्दना के समय नौ बार नमोकार मन्त्र कहें। यह चारों दिशाओं में घड़ी की तरह (Clockwise) तीन आवर्त के साथ करें। जब चारों दिशाओं में कायोत्सर्ग करें तब भी नमोकार मन्त्र बोलें। वन्दना के समय शिरोनति करें यानी कि सिर झुकाकर अञ्जलिबद्ध नमस्कार करें, यह पञ्च परमेष्ठी के प्रति विनय है। यह सामायिक की पूर्व अवस्था है।

शिरोनति पूर्व या उत्तर दिशा से प्रारम्भ कर सकते हैं। यदि पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर रहे हैं तो पूर्व दिशा में जितने केवली हो गये, सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गये, उन सबको मैं प्रणाम करता हूँ, ऐसा विचार करें। फिर दिशा बदल दी। चारों दिशाओं में नमस्कार करके थोड़ी देर सामायिक पाठ करें, उसका मनन करें। सामायिक भक्ति पूर्वक करें। फिर चारों दिशाओं में पंचांग (दो हाथ, दो घुटने तथा सिर को जमीन से स्पर्श कर देना) नमस्कार करें। (गृहस्थ साष्टाङ्ग कर सकते हैं। साष्टाङ्ग-छाती, मस्तक, नेत्र, मन, वचन, पैर, जंघा और हाथ इन आठ

अङ्गों से झुकना)। आज के युग में बिना आलम्बन के ज्यादा देर टिक नहीं सकते। इसलिए किसी का आलम्बन ले सकते हैं।

इसके बाद जो समय बचे उसमें सोचें कि मैं शरीर से भिन्न हूँ, यह शरीर शरण-योग्य नहीं है। यह दुःख रूप है। यह अनात्म है; यह भावना ही आत्मोत्थान देगी, शरीर से ऊपर ले जाएगी। हम सोचें कि इस शरीर में क्या भरा है, सात धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र)के अलावा इसमें कुछ नहीं है। सामायिक का उत्कृष्ट काल/समय 48 मिनट है, छद्मस्थ का उपयोग इतने समय ही टिक पायेगा। जैसे सामायिक अङ्गीकार की थी वैसे ही करें। उसी तरह चारों दिशाओं में शिरोनति तथा आवर्तनपूर्वक समापन करें।¹

आजकल कुछ श्रावक सामायिक की उपर्युक्त विधि का पालन न करके सामायिक काल में मात्र चार छह मालाएँ फेर लेते हैं, लेकिन इसे उचित नहीं माना गया है।²⁶

सन्दर्भ

1. तीर्थकर/अक्टूबर-नवम्बर 84/ बातचीत-डॉ नेमीचंद एवं आचार्य विद्यासागर
2. तत्त्वार्थसूत्र 7/21
3. पद्मनदी पंचविंशतिका 8
4. तत्त्वार्थसूत्र 7/33
5. रत्नकरण्ड श्रावकाचार 105
6. सागर धर्माभूत 7/1
7. तत्त्वार्थसूत्र 9/18
8. पंचसंग्रह (प्राकृत) 1/129
9. छहढाला 6/5
10. तीर्थकर/अक्टूबर-नवम्बर 84/ बातचीत-डॉ नेमीचंद एवं आचार्य विद्यानन्द
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार/ चतुर्थ अधिकार 1,7
12. वही, पृष्ठ 135-138/ सामायिक : समता-संयम का अभ्यास - कन्हैयालाल सरावगी
13. अमितगति श्रावकाचार 8/31
14. मूलाचार 23
15. मूलाचार 523
16. योगसार अमितगति 5/47

17. चरित्रसार 55/4
 18. मूलाचार 525
 19. कषायपाहुड 1/1,1 /81/98/5
 20. गोम्मटसार जीवकांड, जीव तत्त्वप्रबोधिका 367/789/12
 21. मूलाचार प्रदीप 2971-72
 22. कषायपाहुड/1/1-1/81/97/4
 23. 'श्रमण-साधना में षडावश्यकों का माहात्म्य', श्रुताराधक
 (डॉ श्रेयांस कुमार जैन अभिनन्दन ग्रन्थ), पृष्ठ 318
 24. जैनदर्शन पारिभाषिक शब्दकोष-मुनि क्षमासागर, पृष्ठ 350
 25. वसुनंदी श्रावकाचार 39
 26. सामायिक ----/आचार्य राजकुमार जैन/ज्ञान देशना/वर्ष 12/अंक 1/जनवरी-जून 2019/पृष्ठ 22
 -डरी 197, मोती मार्ग, बापू नगर, जयपुर-302015 (राज.)

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 76 वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मास से वच्चित गाँव-शहरों में पर्वारिधिराज पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण महापर्व 24 अगस्त से 31 अगस्त, 2022 तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष-मन्त्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन-पत्र 15 जुलाई, 2022 तक कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करारें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जाएगी।

1. गाँव/शहर का नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
4. संघ मन्त्री का नाम, पता मय फोन नं.....
5. सम्बन्धित जगह पहुँचने के विभिन्न साधन.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा सम्बन्धी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता- संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्लॉट नं. 2, सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, 9414126279, 9444852330, 9462543360 (कार्यालय) मो.-9460551096 (संयोजक), ईमेल- swadhyaysangh jodhpur@gmail.com

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी माँग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street, Sowcarpet, Chennai-600001 (Tamilnadu) के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- 9150640000, 9444051065

महावीर तेरे शासन के लिए

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

(तर्ज :: आवारा हवा का झोंका ...)

इस मन की समाधि बढ़ती है,

वीर तेरे शासन के लिए।

हम खुद को समर्पित करते हैं,

महावीर तेरे शासन के लिए॥

यह एक कदम जो बढ़ जाएँ, तो धर्म की गंगा बह जाए।

भाग्य हमारा चमका है, पतझड़ से सावन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥1॥

जो वीर हृदय में बस जाएँ, तो नाव हमारी बच जाए।

एवन्ता सा तिर जाएँ, मुक्ति के सागर के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥2॥

हम संयम में अभिमन्यु बनें, गुरुभक्ति में एकलव्य बनें।

यह शीश सदा से अर्पित है, पावन जिनशासन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥3॥

अब कर्मयुद्ध में आये हम, अर्जुन से अमर बन जाएँ हम।

यह धर्म है वीर के वीरों का, नहीं किसी कायर के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥4॥

इस दुनिया में हम राम बने, और कृष्ण के बलराम बने।

संयम के तीर चलाये हैं, कर्मों के रावण के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥5॥

ये राग द्वेष की कालिमा, तप अग्नि में जल जाएँ तो।

कृष्ण कन्हैया बन जाएँ, मुक्ति के माखन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥6॥

हम संयम पथ के राही हैं, मञ्जिल का पता मालूम नहीं।

वीर तुझे खत लिखते हैं, मोक्षपुरी वाहन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥7॥

चन्दन की भक्ति भावों में, बस सूखे उड़द थे हाथों में।

वे जूठे बेर भी मीठे थे, शबरी के भगवन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥8॥

इन आँखों का तू तारा है, तूने चन्दना को भी तारा है।

आँखें हरदम तरसी हैं, भादो और सावन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥9॥

हम श्रद्धा में बलवान बनें, और संयम में पुरुषार्थ करें।

भक्ति के तार ये बजते हैं, वीणा के वादन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥10॥

इस रंग बिरंगी दुनिया के, सारे रंग ही फीके हैं।

बस केसरिया ही रंग चढ़े, केसरिया चन्दन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥11॥

केसर की बारिश कुछ भी नहीं, वाणी से अमृत बरसे हैं।

मंथन है ज्ञान के सागर का, अमृत की चाहत के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥12॥

धर्म ध्यान की रुत आई, ये आगम की मीठी शहनाई।

घुंघरू बन कर बजते हैं, भक्ति की पायल के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥13॥

तेरे उपवन के हम फूल वही, तेरे चरणों की हम धूल सही।

कदमों में दुनिया तेरे है, भाव भरे वन्दन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥14॥

प्रभु पर्वत की ऊँचाई हो, तुम सागर की गहराई हो।

इस मनमन्दिर के मोती हो, गागर में सागर के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥15॥

इन आँखों में अफसाने हैं, इन नज़रों में नज़राने हैं।

नज़रानों की क्या कीमत, वीर तेरे दर्शन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥16॥

जो इन्द्र कभी भी आ जाएँ, तो नमिराज सा पा जाएँ।

संसार के कंगन छूटे हैं, मुक्ति के चन्दन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥17॥

कष्टों की कसौटी आई थी, हर एक कदम पर खाई थी।
तप अग्नि में अब जलते हैं, माटी से कञ्चन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥18॥

एक वीर झलक जो मिल जाए,

मुरझाया कमल भी खिल जाए।

तेरी दृष्टि बहारों वाली है, सावन मनभावन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥19॥

वीर बसे हर कण कण में, अहसान उसी का जीवन में।
यह कर्ज चुका ना पायेंगे, आभार तेरा जीवन के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥20॥

वीर तेरा जो शासन है, ये कल्पवृक्ष का आसन है।
यहाँ बिन माँगी ही मिल जाएँ, भक्तों की चाहत के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥21॥

करुणा का सागर बहता है, प्रेम का झरना झरता है।
तेरे दिल में दया के बादल हैं, नहीं जगह नफ़रत के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥22॥

तक्रदीर हमारी संवर गई, है वीर विधाता जीवन के।
हार्थों की लकीरें बदली हैं, वीर तेरे वन्दन के लिए॥

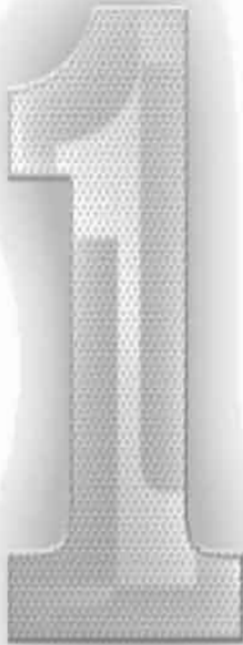
हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥23॥

कर्मों की व्याधि मिट जाए, तो मन को समाधि मिल जाए।
मानसरोवर वीर तुम्हीं, 'तीर्थ' मेरे मानस के लिए॥

हम खुद को समर्पित करते हैं ...॥24॥

- 'जिन्दाशसन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट,
चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

एक कदम धर्म की ओर



Tirth's Inspiration

धर्म की ओर

बढ़ने वाला प्रथम कदम

भी महान सौभाग्य का

निर्माण करता है

Tirth's UniQ



क्रोध वह अग्नि है जो सामने वाले को जलाएगी
या नहीं...किन्तु स्वयं को अवश्य जलाती है

अनमोल मोती (1)

श्री पी. शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

1. मोक्ष मार्ग तभी प्रशस्त होगा जब हर प्रसङ्ग में वीतरागता का पोषण हो।
2. ध्यान के शिखर पर पहुँचने के लिए वैराग्य, तत्त्व विचार, निर्ग्रन्थता, मन-वचन-काया पर नियन्त्रण और परीषहों में समता अनिवार्य है।
3. मन कर्मबन्ध का कारण है तो कर्म निर्जरा का कारण भी है, जैसे जल से ही कीचड़ होता है और कीचड़ साफ़ भी जल से होता है।
4. संयोग दृष्टि, संसार दृष्टि तथा परिणाम दृष्टि इन तीन के कारण ही इस जीव का संसार भ्रमण है, स्वभाव दृष्टि से यह भ्रमण तोड़ा जा सकता है।
5. यदि जीव की दृष्टि सही नहीं होगी तो रामायण में द्रव्यानुयोग पढ़कर राम से राग और रावण से द्वेष करेगा, चरणानुयोग पढ़कर व्रत, जप, तप आदि क्रिया से कषाय पैदा करेगा, करणानुयोग पढ़कर कर्मों को दोष देगा कि मोहनीय कर्म के उदय से ऐसा हुआ। इसलिए दृष्टि का सम्यक् होना नितान्त आवश्यक है।
6. निमित्त, उपादान, पूर्व पर्याय का नाश तथा तत् समय की योग्यता से ही कार्य की सिद्धि होती है, किसी एक कारण से नहीं।
7. जिनवाणी श्रवण की जाती है धर्मस्थान में, किन्तु प्रयोग तो धर्मस्थान के बाहर भी करना है।
8. बहुमत हमेशा सत्य नहीं होता और अल्पमत हमेशा गलती पर नहीं होता। यदि एक व्यक्ति भी सत्य के पक्ष में है, तो भी वह प्रशंसनीय है।
9. चातुर्मास में शादी नहीं करते, पर सगाई कर सकते हैं। इस जन्म में केवलज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते, पर सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।
10. जितने दुःख भोगोगे उतने अशुभ कर्म खत्म, जितने सुख भोगोगे उतने शुभ कर्म खत्म।
11. दुःख में पाप की होली जलती है, कचरा साफ़ होने से आत्मा की दिवाली होती है। सुख सम्पत्ति में भोगासक्ति से पुण्य की होली जलती है, आत्मा के पुण्य धन का दिवाला निकलता है।
12. हजारों अज्ञानियों के द्वारा की गई मेरी प्रशंसा की तुलना में एक ज्ञानी द्वारा की गई मेरी हितालोचना श्रेयस्कर है।
13. श्रद्धा और शंका विपरीत स्थानों पर करके जीव भवभ्रमण को बढ़ा रहा है।
14. विपक्ष में द्वेष हुए बिना स्वपक्ष में राग नहीं होता और विपक्ष में राग हुए बिना स्वपक्ष में द्वेष नहीं होता।
15. बिना सम्यक्त्व के पुण्योदय भी विशेष लाभकारी नहीं है।
16. संसार अजायबघर (Museum) के समान है, देखने की छूट है खरीदने की नहीं।
17. ज्ञान, वैराग्य और अनुराग ये तीनों जुड़ने से भक्तिभाव बनता है।
18. जो जीव संसार में रहते हैं उनका पतन हो भी सकता है और नहीं भी, किन्तु जिस जीव में संसार रहता है उसका पतन निश्चित है।
19. भाग्य का निर्माता पुरुषार्थ है। सांसारिक क्रियाओं द्वारा बाँधे कर्मों का फल भोगने में भाग्य की प्रधानता है, लेकिन कर्मों को तोड़ने में तथा पुण्यानुबन्धी पुण्य प्राप्त करने में पुरुषार्थ की प्रधानता है।

सफल जीवन का 'सॉफ्टवेयर' : महावीर वाणी

श्री दिल्लीय गाँधी

जीवन अनमोल, दुर्लभ एवं संघर्षमय है। आज से 2610 वर्ष पूर्व भी जब वर्धमान महावीर का जन्म हुआ तब भी ऐसा ही था जैसा आज है। आज विज्ञान और तकनीक ने जीवन को समुन्नत, सरल, सुगम, दीर्घायु, नीरोगी बनाने का प्रयास किया है, किन्तु कतिपय समस्याएँ ऐसी हैं जो त्रैकालिक हैं, जीवन के साथ भी और जीवन के बाद भी ज्यों की त्यों बनी रहती हैं। उपभोक्तावाद, कम्प्यूटर, मोबाइल, टी.वी., इण्टरनेट आदि क्षेत्रों ने जीवन के हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धाओं के मैदान खड़े कर दिए हैं। हर व्यक्ति 'सुपर' बनना चाहता है। कहीं भूखमरी, गरीबी, मँहगाई, कमाई, व्यावसायिक, पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याएँ हैं। कहीं प्रतिष्ठा का सवाल है तो कहीं व्यक्तिगत उलझनें। चारों ओर समस्याओं का उफनता सागर दिखाई देता है। इस दौड़ में मानव आज शुगर, टी.बी., बी.पी., डिप्रेशन, टेंशन जैसी व्याधियों से जूझता जा रहा है। कहते हैं-

हर समस्या मुलझेगी अगर उलझना छोड़ दो।

हर राह कटेगी अगर भटकना छोड़ दो।

महावीर ने दुःख-मुक्ति के पाँच सूत्र बताये जो कम्प्यूटर के सॉफ्टवेयर की तरह हैं, जिनसे हर व्यक्ति अपना जीवन सफल बना सकता है।

ऋजुता-मनुष्य यदि सुख पाना चाहे तो वह सहज-सरल, स्पष्ट चिन्तन तथा सद्व्यवहार को जीवन में आत्मसात् करे, जिससे समाज में आज जो दिखावट, सजावट, छलावट तथा मिलावट है वह बन्द हो सकती है। धर्म का आधार स्पष्ट चिन्तन तथा हृदय की पवित्रता एवं सरलता है। आज भाषा, हँसी, खुशी आदि सभी कुछ बनावटी है। आदमी पर आज आदमी का विश्वास

मिटता जा रहा है। अपना व्यवहार सहज-सरल एवं स्पष्ट होना चाहिए।

असङ्गता-आसक्ति या सङ्ग दुःख का मूल है। आसक्ति का अर्थ है-इन्द्रिय और मन का बाहरी पदार्थों में केन्द्रित हो जाना। अनासक्त व्यक्ति पदार्थ का उपयोग करता है, भोग नहीं करता। असङ्गता अपने मन, इन्द्रियों और वृत्तियों का स्वामित्व बढ़ाती है। असङ्ग को कोई भय नहीं होता, न ही उसे कभी आकांक्षा सताती है।

सहिष्णुता-सुखी रहने के लिए सहना सीखो। जो मनुष्य अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समत्व धारण कर लेता है तो उसके मन की गाँठें खुल जाती हैं। वह कभी भी प्रियता के लिए अकुलाता नहीं है और न ही अप्रियता से कतराता है। वह हर मुसीबत को इस चिन्तन के साथ झेलता है कि वह भी टिकने वाली नहीं है।

जागरूकता-जागृति शान्ति का द्वार है तो सुषुप्ति मौत का रास्ता। महावीर के दर्शन में सोने और जागने का अर्थ है-आन्तरिक प्रमाद और अप्रमाद। अप्रमत्त साधक सोता हुआ भी जागृत है और प्रमादी बाहर से जागता हुआ भी भीतर से सोया रहता है। प्रतिक्षण सजग रहने वाला न अतीत की स्मृतियों का भार ढोता है और न ही कल्पनाओं के जाल में उलझता है। वह सदा वर्तमान में जीता है।

मित्रता-किसी भी प्राणी से मेरी शत्रुता नहीं है, सब जीवों के प्रति मेरी मित्रता है, कोई वैर-विरोध नहीं है। यह सब भली-भाँति जानते हैं, पर अनजान बने बैठे हैं। आज ईर्ष्या, क्रोध, घृणा, प्रतिशोध की वृत्ति, कलुषित भाव-धाराओं के कारण पग-पग पर शत्रुता के बीज बोये जा रहे हैं। सोते, उठते, बैठते, जागते,

चलते-फिरते हम शत्रुओं के आतंक से पीड़ित रहते हैं। महावीर कहते हैं-तुम किसी के प्रति शत्रुता का चिन्तन मत करो, अपने चित्त में सञ्चित वैर-भाव के ज़हर को समाप्त कर दो। अन्तःकरण को मैत्री, करुणा और स्नेह के अमृत से भर दो, तो धरती-अम्बर तक हमारा कोई शत्रु नहीं होगा।

जब तक आचरण में महावीर की वाणी उतर नहीं जायेगी तब तक मनुष्य के साथ जीवन की सभी समस्याएँ चलती रहेंगी। जीवन में इन समस्याओं का

समाधान अगर है तो यही है- 'महावीर वाणी।' यदि इन सिद्धान्तों का स्मरण कर मस्तिष्क के पटल पर अंकित कर क्लिक करें तो जीवन का मोनीटर कभी भी परेशानी से नहीं जूझेगा। कोई भी वापस इसे करेप्ट नहीं कर सकेगा। अतः आइए इस सॉफ्टवेयर को हमारे हृदय में डाउनलोड करें, जिससे सारी फाइलें करेप्ट होने से दूर रहे।

-117, कैलाशपुरी, निम्बाहेड़ा रोड, चित्तौड़गढ़
(राजस्थान)

अहिंसा एवं विश्व शान्ति के अग्रदूत 'महावीर'

श्री पदमचन्द्र गाँधी

आज सम्पूर्ण विश्व मानव एवं मानवता के विनाश की कगार पर खड़ा है। मानवता शर्मसार हो रही है। अणु एवं परमाणु बम्ब के परीक्षणों द्वारा सर्वशक्तिमान बनना चाहते हैं। अधिकांश देश गृह युद्ध एवं सत्ता की लड़ाई लड़ रहे हैं। हाल ही में अफगानिस्तान तालिबान युद्ध, सीरिया गृहयुद्ध, इराक-इरान युद्ध ताजा उदाहरण हैं। लेकिन रूस एवं यूक्रेन युद्ध ने सम्पूर्ण विश्व को हिला कर रख दिया है। सम्पूर्ण मानव जाति पर खतरा मण्डराने लग गया है। हिंसा के ताण्डव का उदाहरण स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है। महाभारत का धर्मयुद्ध भी अठारह दिन में समाप्त हो गया था, लेकिन इस युद्ध को 33 दिन होने पर भी ठहरने का नाम नहीं ले रहा है। यूक्रेन विश्व में 30 प्रतिशत खाद्यान्नों की आपूर्ति करने वाला देश है जो आज स्वयं भुखमरी से गुजर रहा है। रूस के हौंसले ने एक बार फिर जता दिया है कि विश्व में मनुष्य ही मनुष्य की घात कर रहा है। जो रूस यूक्रेन की सम्प्रभुता एवं अखण्डता को सम्बल देता था, वही उसे आज मिसाइलों से ध्वस्त कर रहा है। मानवता ने हार कर मानव को अन्य देश में पलायन के लिए मजबूर कर दिया है। ऐसे मञ्जर स्पष्ट संकेत करते हैं कि हम सभी बारूद के ढेर पर खड़े हैं, जो घोर हिंसा, पाप, परिग्रह

से बढ़ कर और कुछ नहीं है। ऐसे में आज अहिंसा एवं शान्ति के अग्रदूत महावीर की नितान्त आवश्यकता है। महावीर ने कहा था- 'मिस्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई' अर्थात् मेरी सभी प्राणियों से मित्रता है, मेरा किसी से वैर नहीं, मेरा कोई शत्रु नहीं। ऐसी मंगल मैत्री ही अहिंसा को साकार करके शान्ति की स्थापना कर सकती है। क्योंकि प्रत्येक जीव जीना चाहता है, अपने अस्तित्व को बचाये रखना चाहता है, मरना कोई नहीं चाहता चाहे वह सूक्ष्म स्थावर जीव ही क्यों न हो। आज की दुनिया में आतंकवाद लूटमार और अराजकता का नङ्गा नाच हो रहा है। कुछ अविवेकी जनों ने अपनी सनक पूरी करने के लिए संकल्पी एवं विरोधी हिंसा का रास्ता अपना लिया है। उनके भीतर सुलगती हिंसा की ज्वालाओं में आज सम्पूर्ण मानव जाति झुलस रही है एवं चारों तरफ त्राहि-त्राहि मच रही है।

अहिंसा धर्म का प्राण है। इसलिए प्रभु महावीर ने अहिंसा की प्रेरणा के लिए हिंसा के निषेध के लिए बार-बार जोर दिया है और कहा है अहिंसा मानसिक पवित्रता का नाम है उसके व्यापक क्षेत्र में सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि सभी सदगुण समा जाते हैं। इसीलिये अहिंसा को 'परमो धर्मः' कहा गया है।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुर बाईपास, जयपुर (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द्र जैन

अमनस्कयोग (गोरखनाथ कृत तारकयोग एवं अमनस्कयोग)-अनुवादक एवं विवेचक-कन्हैयालाल लोढ़ा, सम्पादक-रणजीतसिंह कूमट एवं डॉ. धर्मचन्द्र जैन। प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.) फोन नं. 0141-2520230, Email : prabharati@gmail.com, ISBN No. 978-93-92317-22-4, प्रथम संस्करण-2022, पृष्ठ-117 + 44 = कुल 161, मूल्य-220/- रुपये।

‘अमनस्कयोग’ भारतीय योग परम्परा का सन्त गोरखनाथ कृत एक विशिष्ट ग्रन्थ है, जो संस्कृत भाषा में पद्यों में रचित है। इसके पूर्वार्द्ध में तारकयोग एवं उत्तरार्द्ध में अमनस्कयोग का प्रतिपादन किया गया है। तारकयोग से अमनस्कयोग सधता है। इसे राजयोग भी कहा गया है। तारकयोग में तत्त्वबोध के लिए ‘परतत्त्व’ शब्द का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में लोढ़ा साहब ने तारकयोग के 98 श्लोकों का और अमनस्कयोग के 113 श्लोकों का सरल भाषा में हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है, जो सुगम है। तत्पश्चात् अमनस्कयोग का विवेचन प्रस्तुत किया है। विवेचन में अमनस्कयोग को अप्रयत्न होने की साधना बतलाया है। दूसरे लेख में विपश्यना साधना में अप्रयत्नता का वर्णन किया है। लेखक के कथनानुसार विपश्यना में सिर से पैर तक की अन्तर्यात्रा का प्रयत्न भी अप्रयत्न होने के लिए ही है, क्योंकि यह अप्रयत्नता में सहायक है। इसके साथ ही पुस्तक के अन्य अध्याय में पातञ्जल योगसूत्र में अप्रयत्न साधना एवं स्वामी शरणानन्दजी की दृष्टि में मूक सत्संग या अप्रयत्न साधना का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है, जो ध्यान-साधक के लिए विशेष उपयोगी है। अमनस्कयोग में

जाग्रत-सुषुप्ति की साधना और स्वप्न एवं निद्रा का ज्ञान बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट करते हुए समझाया गया है। स्वामी शरणानन्दजी की दृष्टि में जाग्रत-सुषुप्ति को भी प्रस्तुत किया गया है। आचार्य हेमचन्द्रसूरि के अनुसार कायोत्सर्ग और अमनस्क साधना के लेख में विवेचक लोढ़ा साहब ने सम्बन्धित श्लोकों के अर्थ को स्पष्ट करते हुए उन्मनी भाव, मनोजिजय, अमनस्कता, आत्मसाधना आदि विषयों को विस्तार से समझाया है। अन्त में गोरखनाथजी द्वारा कायोत्सर्ग की पुष्टि का उल्लेख किया गया है।

पुस्तक के सम्पादकीय और भूमिका में भी तारक योग एवं अमनस्कयोग का सारगर्भित विवेचन किया गया है और प्रारम्भ में अमनस्क योग ग्रन्थ का वैशिष्ट्य एवं संक्षिप्त सार दिया गया है। परिशिष्ट में अमनस्कयोग के श्लोक एवं उपनिषदों में वर्णित श्लोकों की तुलना का चार्ट प्रस्तुत किया गया है जो शोधार्थियों के लिए विशेष उपयोगी है। प्रस्तुत ग्रन्थ आत्मान्वेषी योग साधक के लिए सम्यक् दिग्दर्शक एवं अत्युपयोगी है।

ओह लाइफ रिलैक्स प्लैज-लेखक- आगमज्ञाता गुरुदेव श्री अरुणचन्द्रजी महाराज, प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-रत्नत्रय प्रकाशन समिति, दिल्ली, पीपी 114, निकट गोपालमन्दिर, पूर्वी पीतमपुरा, दिल्ली, दूरभाष 9911177434, Email : info@gurusewakparivaar.org, अन्य प्राप्ति स्थल-कुशल जैन-श्री गंगानगर 9462961490, आशीष जैन-बड़ौत 9837210341, विनोद जैन-लुधियाना 9814033180, दीपक जैन-नरवाना 9034112000, द्वितीय संस्करण-2021, पृष्ठ-200, मूल्य-100/- रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक में श्रद्धेय श्री अरुणमुनिजी म.सा. ने सभी मनुष्यों के जीवन के कतिपय मूलभूत प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया है, जिनके पालन से वह व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में सुख, शान्ति एवं प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है। लेखक मुनिश्री ने जीवन जीने के तरीके की सम्यग्दृष्टि प्रदान की है और

कतिपय सूत्र दिये हैं, जिनका आचरण कर हम सुखी जीवन जीते हुए अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तक के सभी अध्याय पठनीय हैं और हमारे दैनन्दिन जीवन की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। यथा- 'विवाह बने वरदान' शीर्षक का अध्याय सभी विवाहित पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन को सुखमय एवं शान्तिप्रद तथा प्रसन्नतापूर्वक जीने की राह दिखाता है। 'समभाव ही धर्म' अध्याय प्रत्येक परिस्थिति में समभाव पूर्वक रहते हुए परिस्थिति का सदुपयोग करने की शिक्षा देता है। 'अपने भाग्य का निर्माण करें' अध्याय बतलाता है कि किस प्रकार से हम वर्तमान का सदुपयोग कर अपने सुन्दर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। अनहद आनन्द की यात्रा और अन्तर्यात्रा के छह क्रम भी विशेष ध्यान देने योग्य हैं, जिनका आचरण कर हम स्थायी एवं वास्तविक सुख-शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पूर्ण पुस्तक बहुत ही रोचक एवं सुबोध शैली में लिखी गई है, जो सभी विज्ञानों के लिए पठनीय एवं जीवन में अनुकरणीय है। पुस्तक में वर्णित शिक्षाओं का पालन कर हम अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं और सम्पूर्ण जीवन को आनन्द पूर्वक जीते हुए चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

श्रमणाचार दिग्दर्शिका-लेखक- आगमज्ञाता गुरुदेव श्री अरुणचन्द्रजी महाराज, सह-सम्पादक-विदुषी साधना बहन, **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-उपर्युक्त पुस्तकानुसार, **प्रथम संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-96, **मूल्य**-50/- रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है कि इस पुस्तक में मुनि श्री अरुणचन्द्रजी ने श्रमणों के आचार का दिग्दर्शन कराया है। दशवैकालिकसूत्र एवं उत्तराध्ययनसूत्र को आधार बनाकर इसमें सरल, स्पष्ट एवं संक्षिप्त शैली में साधु-साध्वियों के आचार अर्थात् मुनिचर्या का सुन्दर वर्णन किया गया है। साधु-साध्वियों के लिए करणीय एवं अकरणीय कार्यों का विशद वर्णन किया गया है। वास्तव में इस पुस्तक को 'मिनी

दशवैकालिकसूत्र' भी कह सकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में मुनिश्री ने अपने सारे अनुभव का सार परोस दिया है। पुस्तक में प्रत्येक अध्याय में विषय से सम्बन्धित सूत्र दिये गये हैं जो स्पष्ट करते हैं कि क्या कार्य करना चाहिये और क्या कार्य नहीं करना चाहिये। आहार, ईर्या समिति, स्वाध्याय, तप, वाणी, सेवा, विहार, परठना आदि साधु-जीवन की प्रत्येक क्रिया की इसमें स्पष्ट विधि बतलाई गई है। उपचार औषधि, व्यवहार और दीक्षा प्रकरण में भी विषय का स्पष्ट वर्णन किया है और अन्त में उपसंहार में सभी बातों का समावेश कर दिया है। प्रस्तुत पुस्तक साधु-साध्वियों के लिए तो उपयोगी है ही, साथ में गृहस्थजनों के लिए भी पठनीय है। सामान्य गृहस्थ भी इसका अध्ययन कर साधुचर्या से परिचित हो सकता है तथा अपने जीवन की प्रतिदिन की सामान्य क्रियाओं को करते हुए हिंसाकारी पाप कार्यों से बच सकता है और जीवन को सुखी एवं शान्तिदायक बना सकता है।

पुरुषार्थ का दीप-लेखक-डॉ. दिलीप धींग, **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-अभय श्री श्रीमाल (जैन) चैयरेमेन, अभुषा फाउण्डेशन, 27, मडलै रंगनाथन स्ट्रीट, टी. नगर, चेन्नई-600017 (तमिलनाडु), फोन 044-42984141, Email : abhaya@abushaims.com, **प्रथम संस्करण**-दिसम्बर 2021, **पृष्ठ**-296, **मूल्य**-300/- रुपये।

पुरुषार्थ का दीप पुस्तक में लेखक ने अपने चयनित निबन्धों का संकलन कर प्रस्तुत किया है। अधिकतर निबन्ध समय-समय पर 'जिनवाणी' सहित विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं, जिनका सन्दर्भ भी लेख के अन्त में दिया गया है। प्रारम्भिक लेख पुरुषार्थ विषय पर है, जिसमें पुरुषार्थ का महत्त्व और उपयोगिता का सुन्दर विवेचन किया गया है। तत्पश्चात् जीवन, जीवन-मूल्य, समाज, देश, भाषा और संस्कृति आदि अनेक विषयों पर रोचक, प्रेरक एवं शोधपूर्ण लेख प्रस्तुत किये गये हैं। आगम, स्वाध्याय-सामायिक,

पारिवारिक जीवन, आहार, लेखन और वक्तृत्व कला तथा नारी की महिमा से सम्बन्धित विविध लेख सभी के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक तथा प्रेरणादायी हैं। लेखों में लेखक के विचार स्पष्ट और विशद रूप से तथा क्रमबद्ध तरीके से प्रभावी रूप में परिलक्षित होते हैं। समसामयिक विषयों पर भी लेखक ने प्रमाण सहित सुन्दर लेख प्रस्तुत किये हैं। अन्त में संथारा विषय पर

प्रामाणिक और राजकीय निर्णयों का उल्लेख करते हुए विशद जानकारी उपलब्ध कराई है तथा निधन समाचार के बारे में भी अपना निवेदन किया है।

प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थियों, शोधार्थियों और सभी जिज्ञासु पाठकों एवं सामान्य जनों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महाराणी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

एक भारतीय आत्मा की अभिलाषा

डॉ. दिलीप धींग

भारत की आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। आजादी के आन्दोलन में कवियों, साहित्यकारों और पत्रकारों का भी अप्रतिम योगदान रहा। स्वतन्त्रता आन्दोलन केवल राजनीतिक दासता से ही मुक्ति का आन्दोलन नहीं था, वरन् सांस्कृतिक दासता से मुक्ति का संग्राम भी था। पत्रकार और कवि माखनलाल चतुर्वेदी ऐसी ही समग्र आजादी की अलख जगाने वाले स्वतन्त्रता सेनानी थे।

उन दिनों ब्रिटिश शासन ने रनौता (मध्यप्रदेश) में एक बूचड़खाना खोल दिया। इस पर माखनलाल चतुर्वेदी ने बूचड़खाने के विरोध में राष्ट्रीय आन्दोलन छेड़ दिया। उन दिनों वे दैनिक अखबार 'कर्मवीर' के सम्पादक थे। उन्होंने कई दिनों तक 'कर्मवीर' में बूचड़खाने के विरुद्ध लिखा। बूचड़खाने के विरुद्ध 'कर्मवीर' में उनके आह्वान को जैन, हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई सहित सभी समुदायों ने अपना समर्थन दिया। 'एक भारतीय आत्मा' विशेषण से प्रसिद्ध चतुर्वेदी की लेखनी का ऐसा प्रभाव हुआ कि अंग्रेजी हुकूमत को अपना निर्णय वापस लेकर कसाईखाना बन्द करना पड़ा। विजयदत्त श्रीधर के अनुसार 'रनौता कसाईखाना आन्दोलन और झण्डा सत्याग्रह की सफल परिणति से उनका संघर्षशील नेतृत्व सर्वमान्य हुआ था।'

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अहिंसा की

तेजस्विता के अनेक रूपों में यह भी एक उल्लेखनीय प्रसङ्ग है। लेकिन दुःखद यह है कि अब स्वतन्त्र भारत में कसाईखानों की संख्या कई गुना बढ़ गई है। स्वतन्त्र भारत की सरकारें मांस-निर्यात में अब्वल रहने की होड़ और दौड़ में शामिल हैं। क्या आजादी के अमृत महोत्सव में मूक प्रजा को जीने की आजादी के बारे में भी विचार नहीं करना चाहिये? अवश्य करना चाहिये।

यह कार्य कई रूपों में किया जा सकता है। जैसे कोई नया बूचड़खाना नहीं खोला जाए, अवैध बूचड़खानों को तुरन्त बन्द किया जाए, मांस-निर्यात पर अंकुश लगाया जाए, पशु-पक्षियों के वध और मांस व्यवसाय को सरकारी प्रोत्साहन बन्द किया जाए इत्यादि। देश की मूक प्रजा को कुछ पवित्र दिनों में तो जीने की आजादी मिले। इस क्रम में प्रमुख राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और धार्मिक पर्वों के दिन सभी बूचड़खानों और मांस की दुकानों को बन्द रखा जाना चाहिये।

इसके लिए कवियों, लेखकों, साहित्यकारों और पत्रकारों को मूक प्रजा की रक्षार्थ अपनी चुप्पी तोड़नी चाहिये। उन्हें हिंसा, क्रूरता और बूचड़खानों के विरुद्ध भी अपनी कलम चलानी चाहिये और समाज को उनका समर्थन करना चाहिये। ऐसा करना छह पंक्तियों के अमर गीत 'पुष्प की अभिलाषा' के रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी की अभिलाषा के अनुरूप ही होगा। इससे कुछ अंशों में या कुछेक दिनों के लिए ही सही, मूक प्रजा भी आजादी का उत्सव मनाएगी और प्रकृति मुस्कुराएगी।

-चेन्नई

समाचार विविधा

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशचन्द्रजी म.सा. का मधुर-सम्मिलन फाल्गुनी चौमासी पर तप-त्याग, चातुर्मासार्थ विनतियाँ एवं पूज्य आचार्यप्रवर का 84वाँ जन्मदिवस

स्थानकवासी परम्परा में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, सामायिक-शीलव्रत के सम्प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी भावी आचार्य परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-9 सुखे समाधे पीपाड़ शहर में विराजित हैं।

आचार्य भगवन्त की साधना-आराधना, मौन और स्वाध्याय के साथ उत्तरोत्तर प्रवर्धमान हो रही है। दर्शनार्थ एवं विनति हेतु आने वाले श्रद्धालुओं एवं श्रीसंघों की विनति एवं भावना महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के समक्ष अर्ज की जाती है तथा आपश्री परमाराध्य आचार्य भगवन्त के पावन श्रीचरणों में सभी की भावना एवं विनतियों को अर्जकर पूज्य आचार्य भगवन्त से विमर्शकर, मार्गदर्शन एवं आवश्यक आदेश-निर्देश प्राप्त कर समस्त कार्य सम्पादित करते हैं।

15-16 मार्च से परमाराध्य आचार्य भगवन्त के असाता वेदनीय के उदय के चलते स्वास्थ्य में प्रतिकूलता रही, किन्तु 28-29 मार्च से आंशिक साता-सुधार हुआ है तथा पूर्ण स्वस्थ होने की सम्भावना बनी है।

फाल्गुनी चौमासी-इस पावन प्रसङ्ग पर महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. ने फाल्गुनी चौमासी के आध्यात्मिक महत्त्व का वर्णन करते हुए शरीर, मन, भावशुद्धि से मुक्तिपथ पर अग्रसर होकर साधना-आराधना से आत्मकल्याण का लक्ष्य रखकर यथासम्भव तप-त्याग, धर्म-ध्यान, व्रत-प्रत्याख्यान पूर्वक धर्ममय जीवन जीने की प्रेरणा की। विविध तपाराधनों के साथ ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल, चहुँओर से आये श्रद्धालुओं ने सामायिक, प्रतिक्रमण, दया, संवर, पौषध आदि की साधना की।

श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. के अठाई की तपाराधना फाल्गुनी पूर्णिमा को सुखे-समाधे सम्पन्न हुई।

विनतियाँ-इस माह में बैतूल, बालाघाट, नागपुर, जोधपुर, सरवाड़, सोजतरोड़, थाँवला, मण्डावर, चौथ का बरवाड़ा, बाड़मेर, ऊटी, बेंगलोर, कोयम्बटूर, रायचूर, गंगावती, भोपालगढ़, रणसीगाँव, मेड़ता, गोदन, पाली, सूरत, हिरण्डौनसिटी आदि से संघों ने पूज्य आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में चातुर्मासार्थ अपनी-अपनी विनतियाँ प्रस्तुत की।

सतियों का पदार्पण-विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-4 का 25 फरवरी, 2022 तक एवं व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 का 3 फरवरी से 19 मार्च तक तथा व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-8 का 8 से 19 मार्च, 2022 तक पीपाड़ में परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में रहने के अनन्तर विहार हुआ।

नदबई, मण्डावर, जोधपुर, शिरपुर, दिल्ली आदि अनेक स्थानों से वीर परिवारजनों का एवं दिवंगत हुई जीवात्माओं के परिवारजनों का भी अनेक स्थानों से पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में मांगलिक श्रवण हेतु

आगमन हुआ।

मधुर-सम्मिलन-23 मार्च, 2022 को ज्ञानगच्छाधिपति श्रुतधर परम श्रद्धेय श्री प्रकाशचन्द्रजी म.सा. मुनिमण्डल सहित पीपाड़ पधारे। जिनके साथ सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ। इस सम्मिलन से दोनों सम्प्रदायों की पूर्व से चली आ रही मैत्री और सौहार्द की परम्परा और अधिक प्रगाढ़ हो गई।

श्रुतधरजी ने कहा-“नजदीक से ही जाना था। यहाँ के कुछ श्रावकों का भी आग्रह था और पीपाड़ तो आपश्री की जन्मभूमि है और आप स्वयं यहाँ विराज रहे हैं तो आपसे मिलन और सातापृच्छा भी हो जाएगी, इसलिये पीपाड़ आगमन हुआ।” दोनों महापुरुषों के प्रेमव्यवहार को देखकर उपस्थित सभी सन्त और श्रावक-श्राविका चित्रलिखित से स्तब्ध थे। पूज्य आचार्यदेव ने स्वास्थ्य प्रतिकूलता के कारण बोलने और खड़े होने में अशक्यता होने पर भी अञ्जलिबद्ध होकर भिन्नकण्ठ ध्वनि में फरमाया-“मैं ज्ञानगच्छाधिपति श्रुतधर पण्डित श्री प्रकाशचन्द्रजी म.सा. से आज दिन तक की सम्पूर्ण क्षमायाचना करता हूँ।” आचार्य भगवन्त के मुखमण्डल से निसृत इन सौहार्द भावसिक्त वचनों को सुनकर सभी भावुक हो गये और गुरु हस्ती द्वारा जीवन के पिछले पड़ाव में सभी प्रमुख आचार्यों से किए क्षमायाचना आदि प्रसङ्ग स्मृति पटल पर उभरने लगे। श्रुतधर प्रकाशचन्द्रजी म.सा. भी अभिभूत हो गये और फरमाने लगे-“आप तो आचार्य हैं, आप महान् हैं, आपका जीवन महान् है।” तदनन्तर श्रुतधरजी ने क्षमायाचना की।

आचार्य भगवन्त, भावी आचार्य भगवन्त और ज्ञानगच्छाधिपति आदि की और भी अनेक मधुर वार्ताएँ हुईं। इस तरह दोनों महापुरुषों की महानता को देखकर, दोनों महापुरुषों से मांगलिक श्रवण कर उपस्थित सभी लोग स्वयं को धन्य और कृतार्थ मानने लगे। यह समागम मुनि पर्याय की अपेक्षा 34 वर्ष बाद तथा दोनों महापुरुषों के संघनायक बनने के बाद पहली बार हुआ।

84वाँ जन्मदिवस-चैत्र कृष्णा अष्टमी तदनुसार 25 मार्च को भगवान आदिनाथ का जन्म कल्याणक एवं गुरु हस्ती पट्टधर गुरु हीरा का 84वाँ जन्म-दिवस को श्रद्धा, भक्ति, भावना पूर्वक मनाया गया। 84 एकाशन, 36 उपवास, विविध तपाराधना आदि के साथ ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल एवं दक्षिणभारत सहित चहुँओर से आये श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक-प्रतिक्रमण, संवर, दया, पौषध एवं दोपहर में भक्ति के रूप में गुरुस्तुति के साथ यह दिवस सार्थक किया। भजन, स्तुतियों की सुमधुर स्वरलहरियों से वातावरण भक्तिमय हो गया तथा महान् अध्यवसायी भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के हृदयोद्गार सुनकर उपस्थित धर्मसभा भावविभोर हो उठी। श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा, युवक परिषद् जोधपुर के भजन मण्डल की भक्ति कार्यक्रम में सराहनीय भूमिका रही। वयोवृद्ध सुश्राविका तपसाधिका श्रीमती लीलाबाईजी कटारिया ने ग्यारह की तपस्या का अर्घ्य आचार्य भगवन्त के 84वें जन्म-दिवस पर अर्पित किया।

संघ संरक्षक संयोजक श्री मोफतराजजी पी. मुणोत, शासन सेवा समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द्रजी हुण्डीवाल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, स्वास्थ्य रक्षक श्री मनमोहनजी कर्णावट, सहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्रजी सालेचा का गुरुदेव की सेवा में आगमन हुआ। संघीय विशेष कार्य, मार्गदर्शन एवं स्वास्थ्य सेवा आदि कार्य भी सम्पन्न हुए। मुमुक्षु सुश्री रेणुजी गुन्देचा सपरिवार का 20 मार्च को परमाराध्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्य भगवन्त आदि चारित्रात्माओं के दर्शन-वन्दन हेतु पीपाड़ आगमन हुआ।

पीपाड़ श्रीसंघ के आबाल वृद्ध श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा-भक्ति भावना, सेवा-सम्भाल, आतिथ्यसत्कार, धर्मरुचि, ज्ञानार्जन रुचि, सामायिक, प्रतिक्रमण, साधना-आराधना, सन्त-सती सेवा, संवर, दया, पौषध एवं विविध तपाराधना के आयाम उत्तरोत्तर प्रवर्धमान होकर गतिशील हैं।

-गिर्राज/देवेन्द्र जैन

जयपुर में सन्त-सतियों का विचरण

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा के विराजने से आदर्शनगर में पर्युषण जैसा धार्मिक वातावरण बन गया। तदनन्तर मुनित्रय यहाँ से विहार कर आनन्दपुरी पधारे, यहाँ प्रवचन करते हुए तिलकनगर में कोठारीजी के यहाँ 'सुधर्म सदन' में विराजे।

आस-पास एवं समीपस्थ उपनगरों से जुड़े श्रद्धालु लोगों ने सन्तों के विराजने से प्रवचन आदि का तन्मयता और श्रद्धा के साथ लाभ लिया। स्थानीय लोग सन्तों के सान्निध्य के लाभ का कोई मौका चूकना नहीं चाहते थे। यही कारण है कि तिलकनगर वासियों के हर घर के सदस्य सुपात्रदान के लिए चन्दनबाला तथा जिनवाणी श्रवण के लिए सुदर्शन श्रावक बने हुए थे। साथ ही वाचनी एवं जिज्ञासा-समाधान में जयन्ती श्राविका की तरह श्रद्धालु लोग समाधान पाने के लिए आतुर नज़र आए, इस धार्मिक रुचि को देखकर यहीं पर एक दिवसीय गुरुकुल शिविर का आयोजन किया, जिसमें प्रातः 9 बजे से सायं 4 बजे तक कार्यक्रम रखा। लक्ष्य यही था कि किशोर, युवा और प्रौढ़ हमारी प्राचीन गुरुकुल पद्धति के अनुसार सुसंस्कार और शुद्धाचरण में ढलें। प्रातः प्रवचन सत्र में सन्तों ने इसी पद्धति पर प्रवचन किया, जिसमें श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाते हुए कहा कि वर्तमान की शिक्षा पद्धति व्यक्ति को मालिक नहीं नौकर बनाती है। जिसमें केवल शोहरत, समृद्धि की ही सोच है। इस पद्धति में न नैतिकता है, न ही चारित्रिक विकास का कोई अलग से पाठ्यक्रम देखने को मिलता है। हमारी पुरातन संस्कृति के विनय, सेवा आदि के संस्कार शिक्षा क्षेत्र में अब कहाँ देखने को मिलते हैं? इसीलिए आज आवश्यकता है हमारा घर ही गुरुकुल बने, माता-पिता स्वयं शिक्षक बनकर नैतिक एवं संयमी जीवन जीते हुए वैसी ही प्रभावी प्रेरणा दें। इसी शिविर में डॉ. गणतन्त्रजी ने अपने प्रभावी उद्बोधन से उपस्थित शिविरार्थियों को आधुनिक जीवनशैली में अवसाद मुक्त जीवन के गुर बताए। युवारत्न श्री नमनजी डागा ने अपने चिर-परिचित अन्दाज़ में वर्तमान की जीवनशैली को समझाते हुए जो वक्तव्य दिया, वह सभी को गद्गद् कर गया। भले ही यह एक दिवसीय शिविर था, पर लगभग 150-200 शिविरार्थियों ने इसमें एकाग्रता और समर्पण से भाग लिया। सन्तत्रय जितने दिन यहाँ विराजे, प्रवचन आदि की छटा दर्शनीय थी।

यहाँ से विहार कर बापूनगर प्राज्ञ भवन में विराजे जहाँ चार प्रवचन हुए। स्थान छोटा होने के कारण लोगों को बहुत ही संकुचित होकर बैठना पड़ा। प्रवचन, वाचनी आदि सभी कार्यों में लोगों ने अपूर्व लाभ लिया। यहाँ से एक दिन न्यू-लाइट कॉलोनी एवं एक दिन देवनगर विराजे जहाँ एक-एक प्रवचन कर फाल्गुनी चौमासी सन्निकट देखकर महावीर नगर सामायिक-स्वाध्याय भवन में पधार गए। फाल्गुनी चौमासी के धार्मिक दिवस को देखते हुए यहाँ पर भी अर्द्ध दिवसीय 'कल्याण मित्र शिविर' का आयोजन रखा गया। प्रातःकाल प्रवचन बेला में श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने गुरुभक्ति का मर्म बताते हुए अनेक रोचक प्रसङ्गों का उल्लेख किया। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने कल्याण मित्र की सुन्दर व्याख्या फरमाते हुए कहा कि- "सच्चा मित्र वह होता है जो मिथ्यात्व से त्राण दिलाता है। अच्छा दोस्त वह होता है जो दोषों को अस्त कराता है। कल्याण मित्र वह होता है जो हमारे आत्महित साधने में सहयोग करता है। आप सब उदायी राजा की घटना से परिचित हैं जिसने पुत्र को राज्य नहीं देकर भाञ्जे को राज्य दिया। उन्होंने पुत्र के सच्चे कल्याणमित्र बनने का परिचय दिया। यह तो आगम युग की घटना है, मगर आज भी ऐसे दम्पती हैं, जिनमें पत्नी अपने पति को प्रातःकाल सामायिक में प्रतिक्रमण, पच्चीसबोल, दशवैकालिकसूत्र के चार अध्ययन ही नहीं, बल्कि उत्तराध्ययनसूत्र का 29वाँ अध्ययन भी कण्ठस्थ करा देती है। कुछ वर्षों पूर्व एक दम्पती उपाध्याय भगवन्त की सेवा में उपस्थित हुआ, जिनकी शादी हुए अभी तीन महीने ही हुए थे। उपाध्याय भगवन्त से

पति बोलता है—प्रभो! मेरी पत्नी को अभी प्रतिक्रमण याद नहीं है। जब तक यह प्रतिक्रमण याद नहीं करेगी तब तक हम 'ब्रह्मचर्य' का पालन करेंगे। यह है कल्याण मित्र बनने का संकल्प।" मुनिश्री ने घण्टे भर धाराप्रवाह प्रवचन करते हुए कई सारे प्रसङ्गों का उल्लेख करते हुए कल्याणमित्र बनने की मार्मिक प्रेरणा दी। आज चौमासी का सुअवसर होने पर विशाल संख्या में लोगों ने दया, संवर, पौषध, सामायिक आदि करके आराधना की और कल्याणमित्र शिविर का लाभ लिया। इसी क्रम में श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन ने प्रथमव्रत, 9वाँ व्रत आदि की प्रभावी प्रेरणा के साथ बहुत सुन्दर व्याख्या की। कुल मिलाकर कल्याणमित्र शिविर इस प्रवास का एक यादगार दिन बन गया। कुछ दिन विराज कर मुनित्रय यहाँ से विहारकर राधानिकुञ्ज पधार गए जहाँ पहले से ही सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-11 विराज रहे हैं।

—सुरेशचन्द्र कोठारी, मन्त्री

आचार्य भगवन्त का जन्म दिवस त्याग-तप पूर्वक मनाया

जयपुर-25 मार्च 2022 को जयपुर में राधानिकुञ्ज स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-6 एवं साध्वी प्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-11 के पावन सान्निध्य में जिनशासन गौरव, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 84वाँ जन्मदिवस एवं भगवान ऋषभदेव का जन्म कल्याणक दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हम सब अत्यन्त पुण्यशाली और सौभाग्यशाली हैं कि हमको ऐसे अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है जो अपनी साधना-आराधना से जिनशासन की अद्वितीय प्रभावना कर रहे हैं। कहा जाता है कि हीरे की परख तो जौहरी ही कर सकता है। आपश्री तो प्रतिपल स्मरणीय जैन जगत् के मूर्धन्य आचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा तराशे गए अनमोल और कोहिनूर हीरे हैं। आपने अपनी साधना-आराधना द्वारा अपने गुरु का नाम और भी अधिक गौरवान्वित कर दिया। प्रवचन प्रभाकर उन महापुरुष ने एक बार जयपुर में ही प्रवचन करते हुए फरमाया था—'हम पराए को अपना नहीं बना सकते, परन्तु अपने को कभी पराया मत बनाना।' गुरु हीरा का व्यक्तित्व बोलता है, उनका आचार बोलता है और जिनका आचार होता है उनका प्रचार तो अपने आप ही हो जाता है।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सूरज के बिना सुबह नहीं हो सकती, बादलों के बिना बरसात नहीं हो सकती वैसे ही गुरु के बिना भवसागर पार नहीं हो सकता। संघनायक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का आज हम सभी 84वाँ जन्मदिवस मना रहे हैं। अध्यात्मयोगी इन महान् सन्त का सम्पूर्ण जीवन धार्मिकता और आध्यात्मिकता से ओतप्रोत है। आप आचार के अन्दर पहाड़ से भी कठोर हैं। गुणों की खान आचार्य भगवन्त के दर्शन करने से ऐसा प्रतीत होता है मानो हमने भगवान के दर्शन कर लिए हों। आप लोकैषणा और कीर्ति कामना से कोसों दूर हैं। आपने भावी आचार्य के रूप में श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का चयन करते हुए जो शब्दावली प्रकट की है वह आपकी सरलता को प्रतिबिम्बित करती है। उस पत्र में आपने हस्ताक्षर करते हुए कहीं पर भी आचार्य शब्द का उल्लेख नहीं किया। पत्र के अन्दर आपने लिखा पूज्य गजेन्द्राचार्य शिष्य चरण रज हीराचन्द्र। यह गुरुदेव की महानता को प्रकट करने का सशक्त उदाहरण है। धन्य है ऐसे महामहिम आचार्य भगवन्त को जो संघनायक, संघ शिरोमणि पद पर रहते हुए भी अपने गुरु को आगे रखकर प्रत्येक कार्य करते हैं। ऐसे महान् आचार्य भगवन्त की महिमा का वर्णन करना अशक्य है। मुनिश्री ने भावी आचार्य की घोषणा का अपने

शब्दों में सजीव वर्णन कर सभा को प्रमुदित कर दिया।

श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्यप्रवर जैन जगत् के ऐसे महान् सन्तरत्न हैं जो अपनी साधना-आराधना से जिनशासन की अद्भुत प्रभावना कर रहे हैं।

श्रद्धेया महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.ने फरमाया कि अध्यात्मवादी आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. सेवा और समर्पण की प्रतिमूर्ति हैं। आपने 28 चातुर्मास पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के पावन सान्निध्य में किए, एक चातुर्मास केवल नागौर का अलग किया। अध्यात्म जगत् के आप कल्पवृक्ष हैं, संघ के सरताज हैं, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक हैं। आप संघहित चिन्तक, संघहित रक्षक, महान् सन्तरत्न हैं।

प्रातः 8 बजे से 12 बजे तक वन्दना, भजन, प्रवचन आदि के कार्यक्रम निरन्तर चलते रहे। समयाभाव के कारण सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. ने मूक रूप से अपने भाव सम्प्रेषित किए। इस अवसर पर कम से कम तीन सामायिक, एकाशन तथा 84 संवर का लक्ष्य रखा गया, जिसमें श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक लक्ष्य से अधिक भाग लिया।

-प्रजन्मलाल जैन, मन्त्री

जोधपुर-व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-7 के सान्निध्य में प्रताप नगर में, व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में शक्तिनगर में तथा व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा-13 के सान्निध्य में चौपासनी हाउसिंग बोर्ड में जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 84वाँ जन्म-दिवस त्रिदिवसीय धर्मसाधना के साथ मनाया गया। जिसके अन्तर्गत आचार्य भगवन्त के श्री चरणों में 36 बार तिकखुत्तो के पाठ से सामूहिक वन्दना, हीरा चालीसा का सामूहिक पठन, नवकार मन्त्र का जाप रखा गया। गुरु हीरा के व्यसन त्याग के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने हेतु राइटिंग, ड्राइंग तथा क्राफ्ट प्रतियोगिता चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थानक में आयोजित की गई, जिसमें जोधपुर के सभी क्षेत्रों के युवक-युवतियों ने अच्छी संख्या में उत्साहपूर्वक भाग लिया। तीनों प्रतियोगिताओं में क्रमशः राइटिंग में दीक्षा गुलेच्छा, ड्राइंग में याशिका सेठिया, क्राफ्ट में भूमि सिंघवी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन प्रतियोगिताओं के आयोजन में श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी एवं युवक परिषद् अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने विशेष प्रयास किये तथा निर्णायक की भूमिका निभाई।

तीनों स्थानों पर महासतियाँ जी के सान्निध्य में बहुत अच्छी संख्या में भाई-बहिनों ने गुरु गुणगान एवं जिनवाणी श्रवण का लाभ प्राप्त किया। आयम्बिल, एकाशन, उपवास, नीवी, संवर, पौषध की आराधना के साथ जन्म दिवस मनाया गया। वर्षभर में कम से कम 84 दिन के लिए नवकारसी, पौरसी, 15 मिनट स्वाध्याय, रात्रि भोजन त्याग, 1 घण्टे की मौन, जमीकन्द त्याग आदि अनेक व्रत-प्रत्याख्यान बहुत से भाई-बहिनों ने इस अवसर पर ग्रहण किये।

प्रताप नगर में प्रवचन के उपरान्त गुरु हीरा के जीवन दर्शन पर आधारित वन डे मैच प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 8-8 भाई-बहिनों की टीम बनाई गई। प्रत्येक टीम से प्रश्न पूछकर उनके उत्तरों के अनुपात में रन दिये गये। सुविधिनाथजी की टीम को विजेता तथा कृति बागरेचा को मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। इस प्रतियोगिता में संस्कार पाठशाला के बच्चे-बच्चियों के साथ युवारत्न बन्धुओं एवं महिला मण्डल की श्राविकाओं ने विशेष रूप से भाग लिया। प्रतियोगिता का सञ्चालन श्री धर्मचन्दजी जैन-रजिस्ट्रार द्वारा किया गया।

महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. की प्रेरणा से वर्धमान नगर मे संस्कार पाठशाला का प्रारम्भ हुआ। यहाँ पर तत्त्वज्ञ श्रावकरत्न स्व. श्री सम्पतराजजी डोसी के सुपुत्र श्री प्रेमचन्दजी डोसी ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत पालन का नियम अङ्गीकार किया।

संघ अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा ने बताया कि रत्नसंघ के तीनों सिंघाड़ों ने जोधपुर शहर के लगभग 20-25

उपनगरों में पधारकर धर्माराधन-तपाराधन के साथ जिनवाणी के अमृत वचनों से लाभान्वित किया, एतदर्थ सम्पूर्ण जोधपुर संघ इन महासतियाँ जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

-नवरत्न गिड़िया, मन्त्री

धनारी कलौं-जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में आदिनाथ भगवान का जन्मकल्याणक और आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 84वाँ जन्मदिवस तप-त्याग से मनाया गया। इस अवसर पर प्रवचन में नवदीक्षित महासती श्री सुप्रियाश्रीजी म.सा. ने आचार्यश्री के गुणगान किए तथा महासती श्री कान्ताजी ने आचार्यश्री के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला तथा फरमाया कि महापुरुषों की साधना का अतिशय होता है जिससे चमत्कार स्वतः ही हो जाते हैं। इस अवसर पर उपवास, आयम्बिल, एकाशन, बियासन आदि अनेक प्रत्याख्यान हुए।

-प्रकाशचन्द पारख

कुशतला (सवाईमाधोपुर)-भगवान ऋषभदेव का जन्म-दीक्षा कल्याणक तथा जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 84वाँ जन्म दिवस पोरवाल सम्भाग क्षेत्रीय समारोह सामूहिक सामायिक, एकाशन दिवस के रूप में ग्राम कुशतला में तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता थे। समारोह की अध्यक्षता श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ कुशतला के अध्यक्ष श्री नेमीचन्दजी जैन ने की। श्री मनीषजी मेहता ने गुरुदेव के गुरु गुणगान कर गुरु-आज्ञा पालन, गुरु दर्शन की भावना एवं भगवान महावीर की जीवनी के स्वाध्याय की प्रभावी प्रेरणा के साथ संघ कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की दिशा में मार्गदर्शन दिया। इस अवसर पर सर्व श्री धर्मचन्दजी जैन अध्यक्ष सवाईमाधोपुर, श्री पारस कुमारजी जैन पार्षद-इन्द्रगढ़, श्री लड्डूलालजी जैन (बराणा वाले) अलीगढ़, श्री धर्मन्द्रकुमारजी जैन अलीगढ़, श्री राकेशजी जैन इन्द्रगढ़, श्री महेन्द्रकुमारजी जैन मन्त्री एवं श्री नीरजजी जैन चौथ का बरवाड़ा, श्री धर्मचन्दजी कुशतला, श्री त्रिलोकचन्दजी जैन प्रधानाचार्य, महावीर नगर सवाईमाधोपुर, वरिष्ठ श्राविका श्रीमती मोहिनीजी आलनपुर, सुरेखाजी जैन पूर्व मन्त्री-सवाईमाधोपुर, रेखाजी जैन, अध्यक्ष-श्राविका मण्डल बजरिया आदि ने तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान और पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के गुणगान कर प्रेरक प्रसङ्गों का वर्णन कर श्रद्धाभक्ति की अभिव्यक्ति की। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कुशलजी जैन गोटेवाला ने सप्त सूत्री कार्यक्रम की जानकारी दी। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती रजनीजी जैन गोटेवाला ने 'इस वर्ष सभी प्रतिक्रमण सीखें' योजना प्रस्तुत कर प्रतिक्रमण सीखने का आह्वान किया तथा सभी से सहयोग की अपील की। समारोह में श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामूहिक रूप से 36 बार गुरु वन्दना श्रद्धाभक्ति की अनुभूति के साथ की गई। प्रत्येक वन्दना के पूर्व गुरु गुणगान स्वरूप एक-एक पद (कुल 36 पद) सामूहिक रूप से बोले। पोरवाल क्षेत्र की गुरु भक्ति का नज़ारा भव्य था। पूर्व क्षेत्रीय प्रधान समाजसेवी श्री सुरेशचन्दजी जैन कुशतला ने सभी गुरु भक्तों के प्रति आभार व्यक्त किया, तपस्या करने वालों के तप की अनुमोदना की। सामायिक-स्वाध्याय संगोष्ठी की जानकारी युवारत्न श्री ऋषभजी जैन, क्षेत्रीय प्रधान द्वारा दी गई। प्रत्याख्यान, पर्युपासना, मंगल पाठ और जय घोष के साथ समारोह पूर्ण हुआ। आतिथ्य सत्कार का लाभ सर्व श्री रतनलालजी, पदमचन्दजी, सुरेन्द्रकुमारजी, सुनीलकुमारजी, राजेशकुमारजी जैन कुशतला ने अहो भाव पूर्वक लिया। कार्यक्रम का सञ्चालन श्रावकरत्न श्री धर्मचन्दजी जैन कुशतला ने किया। कार्यक्रम की सर्वत्र प्रसंशा रही।

-धनसुरेश जैन, सवाईमाधोपुर

चेन्नई-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट में फाल्गुनी चातुर्मासिक पर्व तप-त्याग पूर्वक मनाया गया। स्वाध्यायी श्री विनोद जैन ने अवसर्पिणी कालचक्र के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आरों पर प्रकाश डाला। श्रावक संघ तमिलनाडु के प्रचार-प्रसार सचिव आर. नरेन्द्र कांकरिया ने बताया कि जैनधर्म में फाल्गुनी चातुर्मासिक को अति महत्त्वपूर्ण पर्व माना गया है। सभी उपस्थित श्रद्धालुओं द्वारा इस पावन

पर्व पर प्रतिक्रमण करते हुए अपने द्वारा हुई विराधना के लिए विश्व के सभी जीव राशि से क्षमायाचना की गई। धर्मसभा में सामायिक गणवेश में श्री अम्बालालजी कर्णावट, श्री महावीरजी तातेड़, श्री मोहितजी छाजेड़, श्री आर. नरेन्द्रजी कांकरिया, श्री राजेशजी लुणावत, श्री गौतमचन्दजी मुणोत, श्री आर. वीरेन्द्रजी कांकरिया आदि श्रद्धालु उपस्थित थे। व्रत-सामूहिक नियम, मंगल पाठ, तीर्थंकरों एवं महापुरुषों की जय-जयकार के साथ होली चातुर्मासिक पर्व मनाया गया। उपस्थित श्रद्धालुओं में से श्री गौतमचन्दजी मुणोत, श्री वीरेन्द्रजी कांकरिया ने अष्ट प्रहर उपवास युक्त पौषध और अनेक भाइयों ने होली चातुर्मासिक पर्व पर रात्रिकालीन संवर, सामायिक, ज्ञानचर्चा आदि साधना की।

रत्नसंघ परम्परा के मूलपुरुष पूज्यश्री कुशलचन्दजी म.सा का 284वाँ दीक्षा-दिवस एवं रत्नसंघ के तृतीय पट्टधर विनयमूर्ति आचार्य पूज्यश्री हमीरमलजी म.सा का 216वाँ दीक्षा दिवस साधना-आराधना पूर्वक मनाया गया। स्वाध्यायी श्री वीरेन्द्रजी कांकरिया ने आचार्य भगवन्त पूज्यश्री हस्तीमलजी म.सा की अनमोल कृति जैनधर्म का मौलिक इतिहास का वाचन करते हुए भगवान महावीरस्वामी के केवलज्ञान के पश्चात् वर्षावासों में भगवान द्वारा अनेक आत्माओं के दीक्षित होकर सिद्ध होने का वर्णन किया। श्री गौतमचन्दजी मुणोत ने दोनों महापुरुषों के जीवन परिचय का धर्मसभा में वर्णन किया। श्री महावीरचन्दजी तातेड़ ने गीतिका के माध्यम से दीक्षा के अर्थ का विवेचन किया। श्रावक संघ, तमिलनाडु के प्रचार-प्रसार सचिव आर. नरेन्द्रजी कांकरिया ने रत्नसंघ के मूलपुरुष श्री कुशलचन्दजी म.सा एवं तृतीय पट्टधर पूज्य आचार्य श्री हमीरमलजी म.सा. के जन्म, बचपन, गुरुदेव के सम्पर्क में आने के साथ दृढमय वैराग्य और जैन भागवती दीक्षा लेकर जिनशासन की सुन्दर प्रभावना करने आदि विशिष्ट उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। धर्मसभा में श्री इन्दरचन्दजी कर्णावट, श्री अम्बालालजी कर्णावट, श्री अशोकजी बाफना, श्री विनोदजी जैन आदि श्रद्धालु उपस्थित थे।

- आर नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार-प्रसार सचिव

रत्नसंघ के कतिपय चातुर्मास घोषित

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 24 मार्च, 2022 को पीपाइसिटी में विक्रम सम्वत् 2079, ईस्वी सन् 2022 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ, वर्तमान की देश-प्रदेश की परिस्थिति के कारण कोई परिवर्तन करना पड़े इत्यादि आगार के साथ कतिपय चातुर्मास स्वीकृत किए हैं, जिनका विवरण निम्नानुसार है-

- | | |
|--|------------------------------------|
| 1. मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा | मदनगंज-किशनगढ़ (राज.) |
| 2. साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा | राधानिकुञ्ज-जयपुर (राज.) |
| 3. व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा. आदि ठाणा | नया शम्भूगढ़, जिला-भीलवाड़ा (राज.) |
| 4. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा | नागौर (राज.) |
| 5. व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा | रायचूर (कर्नाटक) |
| 6. व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. की सहवर्तिनी सतियों का | गंगावती (कर्नाटक) |
| (नाम यथा समय खोले जायेंगे) | |
| 7. व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा | चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर |
| 8. व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा | वर्द्धमान नगर, नागपुर (महा.) |

- | | |
|---|-----------------------------------|
| 9. व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा | ओपनकारा स्ट्रीट-कोयम्बटूर (तमिल.) |
| 10. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा | सोजत रोड़ (राज.) |
| 11. व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा | बाड़मेर (राज.) |
| 12. व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा | ऊटी (ऊटकमण्डूक) |

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

अक्षय-तृतीया पर एकान्तर तप-साधकों से निवेदन

आगामी वैशाख शुक्ल तृतीया, 3 मई 2022 को तप और दान का विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया समुपस्थित हो रहा है। इस पावन अवसर पर तप साधक आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में उपस्थित होकर जो भी तपस्वी भाई-बहिन दान एवं तप के माहात्म्य को श्रवण कर नवीन त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करना चाहते हैं, वे सभी साधक अपने पधारने की स्वीकृति नाम एवं सदस्य संख्या का उल्लेख करते हुए संघ के प्रधान कार्यालय-सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर, फोन नं. 0291-2636763, 2624891 पर अवश्य लिखवा दिरावें।

कार्यक्रम स्थल की सूचना गुरुदेव द्वारा घोषणा होने पर शीघ्र ही देने का लक्ष्य रहेगा। दूर गाँव से पधारने वाले साधक अपना आरक्षण जोधपुर तक का करवा सकते हैं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

चीफ जस्टिस श्री मुनिश्वरनाथजी भण्डारी का जयपुर में भव्य एवं गरिमामय सम्मान-समारोह

जयपुर-मानसरोवर स्थित एस. एस. जैन सुबोध लॉ कॉलेज में रविवार, 13 मार्च, 2022 को सुबोध शिक्षा समिति, जयपुर और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में मद्रास उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति श्री मुनिश्वरनाथजी (मनीषजी) भण्डारी का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण के साथ हुआ। अतिथियों के सम्मान में स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया तथा कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि श्री मुनिश्वरनाथजी भण्डारी, मुख्य न्यायाधिपति, उच्च न्यायालय मद्रास, विशिष्ट अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री जी. एस. सिंघवी, पूर्व न्यायाधिपति, सर्वोच्च न्यायालय एवं श्री प्रकाशजी टाटिया, पूर्व अध्यक्ष, सशस्त्र बल न्यायाधिकरण एवं मुख्य न्यायाधिपति झारखण्ड का सुबोध शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नवरतनजी कोठारी, मानद सचिव श्री एस. एस. बोथरा, कोषाध्यक्ष श्री विनोदजी लोढ़ा और अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया एवं श्री प्रमोदजी महनोत, अध्यक्ष श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया।

सुबोध शिक्षा समिति के कोषाध्यक्ष श्री विनोदजी लोढ़ा ने अपने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों और आगन्तुकों का अभिनन्दन किया, समिति के मानद मन्त्री श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने श्री मुनिश्वरनाथजी भण्डारी के साथ संस्मरण का उल्लेख करते हुए पधारने का आभार व्यक्त किया तथा समिति के अध्यक्ष श्री नवरतनजी कोठारी ने सुबोध के विकास की जानकारी के साथ-साथ न्याय की महत्ता को बताते हुए कहा कि यह हमारे लिये गौरव की बात है कि आज हमारे समाज के प्रतिनिधि देश के सम्माननीय पदों पर आसीन हैं तथा राष्ट्र के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मुख्य अतिथि श्री मुनिश्वरनाथजी भण्डारी ने शिक्षा को समाज में ऊँचा रखने की बात कही। उन्होंने कहा कि छात्र अपने कर्म को इतना ऊँचा ले जाएँ कि समाज स्वतः ही ऊँचा उठ जाए। व्यक्ति पद पर प्रतिष्ठित होने के पश्चात् अपना नहीं समाज का सोचे और देश हित के लिए कार्य करे। उन्होंने मानव संस्कारों और उसके व्यवहार पर

बल दिया।

विशिष्ट अतिथि श्री मोफतराजजी पी. मुणोट ने न्याय को समाज का आधार स्तम्भ बताते हुए कर्मनिष्ठा और माध्यस्थ भाव को उत्कृष्ट न्यायाधिपति का लक्षण बताया। उन्होंने कहा कि न्याय अपने आप में धर्म है इसके प्रति सजगता ही समुचित समाज की सृष्टि करती है।

समारोह में आशीर्वचन देते हुए मुख्य अतिथि सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति श्री जी. एस. सिंघवी ने समाज में सेवक बने रहने की बात कही, उन्होंने सेवा के प्रति प्रतिबद्ध बने रहने और बिना किसी भय के कार्य करने को न्याय सङ्गत बताया।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे श्री प्रकाशजी टाटिया ने पद एवं व्यक्ति के महत्त्व को बताते हुए उसका उदार बने रहना महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने संवेदनशीलता को व्यक्ति का सर्व प्रमुख गुण बताया और समारोह में उपस्थित सभी गणमान्य प्रबुद्ध जनों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अन्त में श्री प्रमोदजी महनोत ने सभी का आभार प्रकट कर धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में प्रमुख समाजसेवी, न्यायमूर्ति, प्रशासनिक अधिकारी एवं गणमान्य शिक्षाविद् उपस्थित थे। कार्यक्रम में सुबोध महाविद्यालय के एन. सी. सी. के छात्रों द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया तथा पुलिस सेण्ट्रल बैंक के द्वारा भी मनोरम प्रस्तुति दी गई। मञ्च का सञ्चालन श्री राजेन्द्रजी जैन 'राजा', डॉ. शेफालीजी जैन और डॉ. चित्रा राठौड़ ने किया।

-सुमेरसिंह बोथरा, मानद् मन्त्री-सुबोध शिक्षा समिति, जयपुर

जयपुर में उच्च अध्ययन हेतु छात्र-छात्राओं को सुनहरा अवसर

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (सिद्धान्त-शाला) में

वर्ष 2022-23 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

नैतिक-आध्यात्मिक संस्कारों के साथ जयपुर में रहकर उच्च शैक्षणिक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों हेतु संस्थान में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ है। कक्षा 8वीं से ऊपर के छात्र संस्थान में प्रवेश हेतु आवेदन कर सकते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ, कम्प्यूटर शिक्षण, इंग्लिश स्पीकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं। शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र संस्कारित एवं अनुशासित रहकर अध्ययन करना चाहते हैं, वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें।

नोट-रजिस्ट्रेशन फार्म रत्नसंघ की वेबसाइट ratansangh.com पर जाकर About us option पर click कर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पेज से डाउनलोड किया जा सकता है अथवा हमारे फेसबुक पेज <https://www.facebook.com/profile.php?id=100011420126008> से भी जुड़कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य', ए-9, महावीर उद्यानपथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन न. 0141-2710946, 94614-56489, 79762-46596 Email: ahassansthan@gmail.com

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास) में

वर्ष 2022-23 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सञ्चालित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका

छात्रावास) में प्रवेश हेतु सत्र 2022-23 के लिए आवेदन-पत्र आमन्त्रित हैं। कक्षा 7वीं से 12वीं एवं स्नातक प्रथम वर्ष में अध्ययन की इच्छुक छात्राएँ आवेदन कर सकती हैं। छात्रावास में बालिकाओं के लिए निःशुल्क आवास, भोजन एवं सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था है। शैक्षणिक अध्ययन हेतु प्रवेश लेने वाली छात्राओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देना अनिवार्य है। छात्रावास में बालिकाओं के सर्वांगीण विकास का ध्यान रखते हुए समय-समय पर मोटिवेशनल क्लासेज, सेमिनार, वेबिनार, गृह कौशल, पर्सनलिटी डवलपमेंट जैसी विशेष कक्षाएँ लगाई जाती हैं। प्राप्त आवेदनों में वरीयता क्रम के अनुसार चयनित छात्राओं का साक्षात्कार लिया जायेगा। प्रवेश पाने वाली छात्राओं को संस्थान द्वारा निर्धारित नियमों का पूर्ण पालन करना अनिवार्य है।

इच्छुक छात्राएँ 1 मई, 2022 तक अपना आवेदन पत्र भर कर संस्थान में जमा करा सकती हैं।

आवेदन-पत्र प्राप्त करने एवं जमा कराने हेतु सम्पर्क सूत्र-अधिष्ठाता-श्रीमती मंजू जी जैन, श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, 12/251 के सामने, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.), मो. 9413019982 E-mail- sjratangirlssansthan@gmail.com

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

29. श्री गौतमचन्द्रजी जैन-पूर्व डी.एस.ओ., जयपुर (पूर्व छात्र)	2,00,000/-
30. श्री सुशीलजी, सिद्धार्थजी सिंघवी, निर्माण नगर, जयपुर	25,000/-
31. श्री महावीरजी मेहता, दूदू	24,000/-
32. श्रीमती सुनीताजी जैन, मनवाजी का बाग, जयपुर	12,000/-

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजें।

खाते का विवरण:-Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*, Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : *Khadi*

Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Customer ID : 35288297 निवेदक : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

1. श्री सुशीलजी, श्री शशांकजी, श्री सिद्धार्थजी सिंघवी, निर्माण नगर, जयपुर (राज.) 25,000/-
आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL**, Account Type : *Saving*, Account Number : **51026632997**, Bank Name : *SBI*, Branch : *Bapu Bazar, Jaipur*, Ifsc Code : *SBIN0031843* निवेदक : अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 17 जुलाई, 2022 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 17 जुलाई, 2022 रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

1. परीक्षा, ज्ञान वृद्धि का प्रमुख साधन है। क्रमबद्ध एवं सही ज्ञान ही व्यक्ति को हित-अहित की जानकारी कराता है। अतः ज्ञान बढ़ाने एवं सुसंस्कार पाने हेतु आप स्वयं भी परीक्षा दें तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्म दलाली का लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित आवेदन-पत्र, पुस्तकें, शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार एवं मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
5. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अन्तिम तिथि 17 जून, 2022 है। नियत समय में आवेदन-पत्र जमा कराना अनिवार्य है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-शिक्षण बोर्ड कार्यालय-सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.) 291-2630490, व्हाट्सएप्प नं. 7610953735 Website : jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboardjodhpur@gmail.com

जोधपुर में त्रिदिवसीय स्थानीय स्वाध्यायी-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के तत्त्वावधान में 27 फरवरी से 01 मार्च, 2022 तक दोपहर 1 से 3.45 तक त्रिदिवसीय स्थानीय स्वाध्यायी-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन नेहरू पार्क स्थानक में आचार्य भगवन्त परम पूज्य 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 13 के पावन सान्निध्य में रखा गया। शिविर में महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने अन्तगडसूत्र की धारणाएँ एवं आगम का स्वाध्याय करने की प्रेरणा, महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. ने संवर एवं पौषध सम्बन्धी जिज्ञासाओं के समाधान एवं महासती श्री मधुश्रीजी म.सा. ने प्रतिक्रमण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर के माध्यम से स्वाध्यायियों को ज्ञानार्जन करवाया।

महासती मण्डल के साथ ही शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द्रजी जैन द्वारा तत्त्वज्ञान सम्बन्धी अध्यापन करवाया गया एवं संघ के संयुक्त महामन्त्री श्री प्रकाशजी सालेचा ने स्वाध्यायी की गुणवत्ता बढ़ाने के बारे में सरल भाषा में स्वाध्यायियों को समझाया।

शिविर में लगभग 60 स्वाध्यायियों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। वर्षभर में 3 आगम का स्वाध्याय करने का संकल्प लेने के साथ ही और भी अपनी इच्छानुसार व्रत नियम ग्रहण किये। 01 मार्च, 2022 शिविर के अन्तिम सत्र में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सम्माननीय न्यायाधीश श्री प्रकाशजी टाटिया, महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, संयुक्त महामन्त्री श्री प्रकाशजी सालेचा, स्थानीय अध्यक्ष श्री सुभाषचन्द्रजी गुन्देचा, शिक्षण बोर्ड के सचिव श्री सुभाषजी नाहर, संस्कार केन्द्र के सचिव श्री राजेशजी भण्डारी, स्वाध्याय संघ के निदेशक श्री चंचलमलजी चोरड़िया, संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल एवं सचिव श्री सुनीलजी संकलेचा, कोषाध्यक्ष श्री चंचलजी गिड़िया, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा एवं श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी आदि अनेक गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। पूरे भारतवर्ष के स्वाध्यायियों के संक्षिप्त परिचय की स्वाध्यायी निर्देशिका का विमोचन भी इस सत्र में उपस्थित पदाधिकारियों के कर-कमलों से हुआ। सभी स्वाध्यायियों का अनुरोध था कि महीने-दो महीने में ऐसे शिविर निरन्तर आयोजित किये जायें। सभी शिविरार्थियों को स्मृति चिह्न एवं स्वाध्यायियों को स्वाध्यायी निर्देशिका प्रदान की गई।

शिविर में पधारे हुए स्वाध्यायियों के आतिथ्य हेतु संघ को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

-सुनील संकलेचा, सचिव

तमिलनाडु क्षेत्र में स्वाध्याय संघ द्वारा प्रचार-प्रसार

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं तमिलनाडु शाखा के संयुक्त तत्त्वावधान में 10 से 15 मार्च, 2022 तक आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग 55 क्षेत्रों के अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर आगामी पर्युषण पर्व हेतु स्वाध्यायी बुलाने हेतु प्रबल प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप 15 क्षेत्रों की माँग प्राप्त हुई। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत तमिलनाडु शाखा के संयोजक भी नवरत्नमलजी बाघमार, श्री प्रसन्नजी भंसाली (सहसंयोजक) तथा स्वाध्याय संघ के प्रभारी श्री सुरेशजी हींगड़ की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं।

चेन्नई में 24वाँ भगवान महावीर अवार्ड वितरण समारोह सम्पन्न

भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई के तत्त्वावधान में 24वें महावीर पुरस्कारों का वितरण किलपाक स्थित भवन राजाजी विद्याश्रम, चेन्नई में बुधवार, 2 मार्च, 2022 को किया गया। महावीर अवार्ड समारोह के मुख्य

अतिथि लोकसभा अध्यक्ष श्री ओमजी बिरला रहे। इस अवसर पर श्री ओमजी बिरला ने अपने उद्बोधन में कहा- “मुझे प्रसन्नता है कि भगवान महावीर फाउण्डेशन द्वारा सामाजिक सेवा करने वाली संस्थाओं एवं सज्जनों को प्रोत्साहित करने हेतु महावीर पुरस्कार से अलंकृत कर अपने सद्कार्यों की अमूल्य परम्परा का निर्वहन किया जा रहा है। भगवान महावीर के सिद्धान्त आज भी प्रासङ्गिक हैं।”

ज्ञातव्य है कि भगवान महावीर फाउण्डेशन की ओर से प्रदान किये जाने वाले महावीर अवार्ड प्रतिवर्ष चार क्षेत्रों (अहिंसा और शाकाहार, चिकित्सा, शिक्षा, सामुदायिक और सामाजिक सेवा) में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति या संस्था को प्रदान किये जाते हैं। इनमें प्रत्येक श्रेणी के लिए दस लाख रुपये, प्रशस्ति-पत्र और स्मृति-चिह्न प्रदान किए जाते हैं। अपने उत्कृष्ट कार्यों हेतु इस वर्ष निम्नलिखित व्यक्तित्व और संस्थाओं को महावीर अवार्ड से अलंकृत किया गया-

अहिंसा और शाकाहार क्षेत्र (श्री जसराजजी श्रीश्रीमाल, हैदराबाद)-श्री जसराजजी श्रीश्रीमाल ने अपना समय और जीवन शाकाहार के सन्देश के प्रसार हेतु एवं जानवरों को यातना और दुःख से बचाने के लिए समर्पित किया है। उन्होंने 40 गौशालाएँ स्थापित करने में मदद की, अल-कबीर-बूचड़खाने की स्थापना में देरी करवाई एवं दक्षिण भारत में हत्या के लिए भेजे जाने वाले ऊँटों पर रोक लगवा दी।

शिक्षा के क्षेत्र में (महिला अभिवृद्धि मट्टू संरक्षण संस्थान, कर्नाटक MASS)-MASS संस्थान पूर्व देवदासियों और दलितों के लिए आजीविका प्रोत्साहन, बाल-विवाह के खिलाफ अभियान और अन्याय की शिकार महिलाओं के लिए कानूनी सहायता प्रदान करता है।

चिकित्सा के क्षेत्र में (सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय, मध्यप्रदेश)-सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय में गरीबों और वञ्चितों की गुणवत्तापूर्ण नेत्र देखभाल नवीनतम उपकरणों के माध्यम से निःशुल्क की जाती है। चिकित्सालय हर वर्ष 1.40 लाख आँखों की सर्जरी कर रहा है। गरीब मरीजों को परिवहन, भोजन, आवास, सर्जरी, दवा और चश्मे जैसी सभी सेवाएँ मुफ्त में प्रदान की जाती हैं।

समुदाय और सामाजिक सेवा क्षेत्र (सोसायटी फॉर एजुकेशन, एक्शन एण्ड रिसर्च इन कम्युनिटी हेल्थ, महाराष्ट्र SEARCH)-SEARCH 34 वर्षों से अधिक समय से 134 गाँवों के गरीब आदिवासियों को बिल्कुल सस्ती दरों पर स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाएँ प्रदान कर रहा है। गढ़चिरौली और आसपास के जिलों में लगभग 2,500 गाँवों के ग्रामीणजनों और आदिवासी रोगियों की सेवा करने के उद्देश्य से माँ दन्तेश्वरी जनजातीय अस्पताल चला रहा है, जहाँ विभिन्न विशेषज्ञों के द्वारा प्रतिवर्ष 55,000 रोगियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है। SEARCH द्वारा 1,20,000 आदिवासी और ग्रामीणजनों को चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवाने हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। गढ़चिरौली जिले में 39 गाँवों में घर-आधारित माँ, नवजात और शिशु देखभाल (Home-based Mother, New-born and Child Care) हेतु प्रशिक्षण शिविर लगाये गये जिससे इस क्षेत्र में शिशु मृत्यु दर में 42% की कमी आई है।

संक्षिप्त समाचार

जयपुर-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सञ्चालित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका छात्रावास) की छात्राओं ने आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के 84वें जन्म-दिवस के अवसर पर राधानिकुञ्ज-जयपुर में

प्रवचन श्रवण का लाभ लेकर एकाशन, उपवास के प्रत्याख्यान किये तथा सन्त-सतियों की सेवा में 3-3 सामायिक कर अपनी धार्मिक जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

संस्थान में प्रतिदिन होने वाली सार्थकालीन सामायिक में गुरु भक्ति पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साथ ही भजन एवं प्रार्थना के माध्यम से आचार्यश्री के जन्म-दिवस को भक्तिभाव से मनाया गया। इस प्रकार संस्थान की छात्राएँ विशेष पर्व-तिथियों पर सन्त-सतीवृन्द के सान्निध्य का लाभ लेती रहती हैं। समय-समय पर लगने वाले शिविरों में भाग लेती हैं तथा अपने ज्ञान-ध्यान में अभिवृद्धि करती हैं। -श्रीमती मंजु जैन, अधिष्ठाता

बधाई माधोपुर-नगर परिषद् क्षेत्र में सामायिक-स्वाध्याय संगोष्ठी शहर सवाई माधोपुर, महावीर नगर, बजरिया, आवासन मण्डल, आलनपुर में क्रमानुसार चल रही है। उत्तराध्ययनसूत्र आगम का स्वाध्याय भावार्थ, विवेचन, पद पद्यानुवाद सहित सरस एवं सरल रूप में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कुशलचन्दजी जैन गोटेवाला, श्री त्रिलोकचन्दजी जैन प्रधानाचार्य और श्री संजयजी जैन व्याख्याता द्वारा किया जा रहा है। अठारह पापों की आलोचना तथा वक्तृत्व कला विकास का क्रम भी जारी है। एक-एक श्रावक, श्राविका, युवक, युवती को भी अभिव्यक्ति का अवसर दिया जाता है। युवारत्न श्री ऋषभकुमारजी जैन क्षेत्रीय प्रधान का पुरुषार्थ बहुत ही अच्छा है। -धनसुरेश जैन, सवाईमाधोपुर

बधाई

दिल्ली-दिवङ्गत उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.सा. की शिष्या एवं प्रथम साध्वी-आचार्य श्री चन्दनाजी को भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा 21 मार्च, 2022 को राष्ट्रपति भवन में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह उनके 65 वर्षों से जारी अनवरत सेवा का सम्मान है। वे शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में अपने साध्वी समुदाय के साथ वीरायतन (राजगृही) के नेत्र चिकित्सालय से लेकर पावापुरी तथा गुजरात के कच्छ में स्थापित शिक्षा संस्थानों में अनेक आदिवासी एवं निर्धन परिवार के बालकों का जीवन-निर्माण कर रही हैं।

जोधपुर-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर की 6 फरवरी, 2022 को आयोजित साधारण सभा में परामर्शदाता मण्डल के प्रतिनिधि संघ के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया ने आगामी कार्यकाल हेतु श्री सुभाषजी गुन्देचा का नाम प्रस्तावित किया, जिसका साधारण सभा ने सर्वसम्मति से अनुमोदन किया। नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा ने मन्त्री पद पर श्री नवरतनजी गिड़िया तथा कोषाध्यक्ष पद पर श्री जिनेन्द्रजी ओस्तवाल के नाम की घोषणा की। साथ ही जोधपुर श्राविका मण्डल अध्यक्ष के रूप में श्रीमती सुमनजी सिंघवी तथा युवक परिषद् अध्यक्ष के रूप में श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा को मनोनीत किया गया। -नवरतन गिड़िया, मन्त्री

जयपुर-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर की 24 मार्च, 2022 को आयोजित साधारण सभा में श्री प्रमोदजी महनोत का पुनः अध्यक्ष पद पर मनोनयन किया गया। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा 'संघ-रत्न' एवं 'भामाशाह सम्मान' से अलङ्कृत होने वाले हैं तथा संघ के दृढ़ स्तम्भ हैं। आपकी ओर से उत्तम स्वाध्याय भवनों का निर्माण कराया गया है। स्वभाव से शान्त एवं गम्भीर हैं। आप द्वारा श्री सुरेशजी कोठारी कार्याध्यक्ष, श्री संजीवजी कोठारी को मन्त्री एवं श्री श्रीचन्दजी बेताला कोषाध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया है।

जोधपुर-सुश्री धनुषी सुराना सुपुत्री स्व. श्री मयंकजी एवं श्रीमती अञ्जुजी सुराना, सुपौत्री स्व. श्री धनरूपमलजी एवं श्रीमती विजयलक्ष्मीजी सुराना (जोधपुर) ने गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद से एम.ए. (मनोविज्ञान) में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।



जयपुर-श्री मितुलजी सुपुत्र श्रीमती चविताजी-श्री पीयूषजी जैन ने 22 वर्ष की आयु में प्रथम प्रयास में ही चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट परीक्षा दिसम्बर 2021 में उत्तीर्ण की है। आपने अपनी ग्रेजुएशन एच. आर. कॉलेज, मुम्बई यूनिवर्सिटी से की है। आपने सी.एफ.ए.-एल 1 भी उत्तीर्ण किया हुआ है।



जयपुर-श्रीमती सेहल जी धर्मसहायिका सी.ए. श्री चिरागजी जैन (हरकावत) सुपुत्री श्री पीयूष-चविताजी जैन को राजस्थान यूनिवर्सिटी में एम.फिल (राजनीतिक विज्ञान) में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर दीक्षान्त समारोह में गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। आपने बी.ए. एवं एम.ए. दिल्ली विश्वविद्यालय से किया है और वहाँ पर भी प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए गोल्ड मेडल हासिल किया था।



पाचोरा-चि. दिवेश विनोद कुमारजी सुपौत्र दीपचन्दजी बोथरा वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं सुपुत्र श्री विनोदजी बोथरा वरिष्ठ स्वाध्यायी ने दिसम्बर, 2021 की चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट (सी.ए.) की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

चेन्नई-श्री शंकरलाल सुन्दरबाई शासुन जैन महिला महाविद्यालय के कला व संस्कृति विभाग द्वारा 8 मार्च, 2022 को महिला दिवस समारोह में महाविद्यालय की सचिव धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती उषा अभय श्रीश्रीमाल (जैन) को 'शासुन श्रेष्ठश्री' सम्मान प्रदान किया गया। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन एजुकेशनल सोसायटी के 85 वर्षों के इतिहास में उषाजी प्रथम महिला सचिव बनी हैं। सोसायटी के अन्तर्गत दो महाविद्यालय, पाँच विद्यालय और एक औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र सञ्चालित है।

जोधपुर-श्री राहुलजी सुपुत्र श्री समरजी (सी.ए.)-श्रीमती मनीषाजी, सुपौत्र श्री धनपतराजजी-श्रीमती कृष्णाजी मुणोत, दोहित्र श्रीमती गुलाबजी-स्व. श्री सोहनलालजी लूंकड़ ने चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

श्रद्धाञ्जलि

दिल्ली-जैन तेरापथ धर्मसंघ के साध्वी समुदाय की शासनमाता साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी म.सा. का 17 मार्च, 2022 को संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। वे तेरापंथ के 9वें आचार्य तुलसी से दीक्षित थीं। उन्हें अपने संयम काल में तीन आचार्यों-आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण का सान्निध्य प्राप्त हुआ। वे विदुषी साध्वी होने के साथ कुशल कवयित्री भी थीं। उन्होंने शताधिक पुस्तकों का लेखन एवं सम्पादन किया तथा साध्वी समुदाय का कुशल नेतृत्व भी किया। उन्हें लगभग डेढ़ घण्टे का संथारा आया। आचार्य महाश्रमणजी द्वारा आपको 'शासन माता' के अलङ्कार से अलंकृत किया गया।

जलगाँव-अनन्य गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ, संघ-सेवी, संघ संरक्षक सुश्रावक श्री रिखबराजजी सुपुत्र श्री जालमचन्दजी बाफना (मूल निवासी भोपालगढ़) का 13 मार्च, 2022 को 88 साल की आयु में देवलोकगमन हो गया। आपकी मानवसेवा, जीवदया के साथ स्वाध्याय-सामायिक में विशेष रुचि थी। आपने पिछले 30 साल से अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक पद को सुशोभित किया। आपने भोपालगढ़ चिकित्सालय में विश्रामकक्ष तथा जलगाँव में भी अनेक जनोपयोगी कार्य करवाए। नेत्र ज्योति के लिए हर माह 8 से 10 ऑपरेशन जरूरतमन्दों के करवाते थे। मूक बधिरों के लिए भूमि प्राप्त कर उस पर छात्रावास बनवाया। संघ में विरक्त-विरक्ताओं, वीर परिवारजनों एवं सन्त-सतियों की सार-सम्भाल में आपकी सक्रियता प्रेरणादायी थी। आप विगत काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे, परन्तु स्वास्थ्य की प्रतिकूलता



होते हुए भी धर्म साधना-आराधना में अग्रसर थे। आप स्वयं तो संघ-सेवा में पूर्णरूपेण सन्नद्ध रहे साथ ही समस्त पारिवारिक जनों को भी सदैव प्रेरणा करते रहे। आपके भ्राता आदरणीय श्री मनमोहनजी बाफना रत्नसंघ के विभिन्न पदों पर सेवाएँ प्रदान करते रहे हैं। आपके सुपुत्र श्री विनोदकुमारजी बाफना वर्तमान में गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। -*धनपत सेठिया, महामन्त्री*

चेन्नई-धर्मनिष्ठ, अनन्य गुरुभक्त, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री सुधीरजी सुराणा का 26 फरवरी, 2022 को संधारा पूर्वक समाधिमरण हो गया। आपने तीन वर्ष तक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के मन्त्री के रूप में सेवाएँ दीं। आप दिनभर अपने शरीर का मोह रखे बिना संघ-सेवा का कार्य करते थे। विगत कुछ वर्षों में वे साधु-साध्वियों की निर्दोष चिकित्सा-सेवा में एक वैद्यराजजी के माध्यम से संलग्न थे। विगत कई वर्षों से आप तत्त्वचिन्तक पूज्य श्री प्रमोदमुनिजी का चातुर्मास जहाँ होता था, वहाँ चार-पाँच महीनों के लिए चौका करते थे और धर्म-ध्यान का पूरा लाभ लेते थे। पिछले वर्ष 2021 में आपने गोटन में चौका किया था। इस दौरान आपको नित्य जोधपुर जाकर स्वयं का डायलिसिस करवाना पड़ता था। ऐसी स्थिति में भी आप शरीर का मोह त्यागकर चातुर्मासिक आराधना, सन्त-समागम और सन्तसेवा में डटे रहे। पर्युषण-सेवा के लिए स्वाध्यायियों की उपयुक्त स्थान पर नियुक्ति का सारा कार्य करते थे। बिना पद के भी आप संघ-सेवा में पूरी तरह संलग्न रहे। आप अपने व्यक्तित्व के कारण पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में प्रिय थे तथा तन-मन-धन से संघसेवा, समाजसेवा में संलग्न रहे। ऋजुता, मृदुता आदि आपके विशेष गुण थे। आप भद्रिक और सरल प्रकृति के श्रावक थे। आप स्वयं प्रतिदिन त्याग-प्रत्याख्यान करते थे तथा दूसरों को भी प्रेरित करते थे। प्रतिदिन लोगों को त्याग-प्रत्याख्यान हेतु सन्देश प्राप्त होता था। अन्तिम समय में आपने परम सरल भाव से सबसे क्षमायाचना की। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती सुनीताजी भी एक उच्च कोटि की श्राविका, स्वाध्यायी, सेवाभावी और तपस्विनी हैं तथा तीनों पुत्र आदर्शजी, आशीषजी एवं कुलदीपजी भी धर्मनिष्ठ हैं।

-*पी. शिखरमल सुराणा, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष : अ.भ. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ*

जयपुर-धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ, सन्तसेवी सुश्रावक श्री ज्ञानचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री नथमलजी कोठारी का 18 मार्च, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे एवं सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि रत्नसंघीय सन्त-सती मण्डल का विशेष प्रभाव रहा। आपका परिवार रत्नसंघ के समर्पित वरिष्ठ परिवारों में से एक है। जयपुर में पधारने वाले प्रायः सभी सन्त-सतियों के शय्यातर का लाभ भी आप लेते रहे हैं। संघसेवा, समाजसेवा के आप पर्याय रहे तथा कई सामाजिक संस्थाओं के जरिए आपने लोगों को सशक्त बनाया। आप जयपुर ज्वैलरी एसोसिएशन में मानद पदों पर रहे, आपने अपनी नैतिकता और प्रामाणिकता से एक आदर्श छवि का निर्माण किया। आपके सुपुत्र श्री विनयचन्दजी कोठारी भी आपकी आदर्श छवि को बनाये हुए हैं। आपकी पुत्रवधू श्रीमती सुमनजी कोठारी कई वर्षों से आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, बजाज नगर, जयपुर के संयोजक के रूप में अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कर रही हैं।

-*अशोक कुमार सेठ, मन्त्री*

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलाजी भण्डारी धर्मसहायिका स्व. श्री अमरसिंहजी भण्डारी का 15 मार्च, 2022 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन कर्तव्यपरायणता, कर्मठ सेवा भावना, वात्सल्य, विनम्रता, उदारता आदि सदगुणों से ओतप्रोत था। आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट आस्था थी। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करती थी। आप अपने पीछे भरा-

पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-राजेश भण्डारी, सचिव, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर (राज.)

गोपालगढ़-भरतपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सुरेशचन्दजी जैन का 74 वर्ष की आयु में 5 मार्च, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा थी। आप सन्त-सतियों की सेवा में हमेशा अग्रसर रहते थे। आपका परिवार भी सन्त-सतियों की सेवा में सदा तत्पर रहता है। आप अपने पीछे पत्नी, दो सुपुत्र एवं सुपौत्र-सुपौत्रियों का भरपूर परिवार छोड़कर गये हैं।



-हररत्नचन्द जैन, मन्त्री

धनोप-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री जवरीलालजी पालडेचा का 12 जनवरी, 2022 को 62 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आप साधु-सन्तों की सेवा में हमेशा अग्रणी रहते थे। आप श्री प्रेमचन्दजी, पारसमलजी एवं सुरेन्द्रकुमारजी पालडेचा के भ्राता थे। आप अपने पीछे भरपूर परिवार छोड़कर गये हैं।



-हररत्नचन्द त्रेडर

भोपाल-जैन जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर रतनचन्द जी जैन, भोपाल का 01 मार्च, 2022 को देहावसान हो गया। आप जैनदर्शन, प्राकृत, संस्कृत के अधिकारी विद्वान् थे। आप अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, निर्भीक तथा स्पष्टवादी थे। आपने 'जैनदर्शन में निश्चय और व्यवहार नय : एक अनुशीलन' विषय पर पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त की। आपने रीवा एवं भोपाल में संस्कृत के प्रोफेसर रहकर पी-एच.डी. उपाधि के लिए शोधार्थियों का मार्गदर्शन भी किया। 10 वर्ष तक अथक् परिश्रम करके आपने 'जैन परम्परा और यापनीय संघ' जैसी ऐतिहासिक कृति की रचना की। आपको दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन समाज ने अनेक पुरस्कारों से अलंकृत किया था। आप सरल, सौम्य, उदार और परोपकारी व्यक्तित्व के धनी थे। आपने सन् 2001 से 2012 तक 'जिनभाषित' मासिक पत्रिका का सम्पादन किया। यह पत्रिका आपके कुशल सम्पादन के लिए जानी जाती थी।



-डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कोटा-धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री बाबूलालजी जैन (खातोली वाले) का 10 मार्च, 2022 को 74 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप हमेशा संघ-समाज एवं साधुसन्तों की सेवा में तत्पर रहते थे। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि गुणों से ओतप्रोत था तथा सामायिक-स्वाध्याय एवं त्याग-पचकखान किया करते थे। आप अपने पीछे भरपूर परिवार छोड़कर गए हैं।



-अनिल जैन, बरबई

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती किरणजी धर्मसहायिका स्व. श्री नवरतनराजजी मेहता का 11 फरवरी, 2022 को 85 वर्ष की वय में स्वर्गवास हो गया। आप की सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति तथा जीवन में सरलता थी। आप अपने पीछे दो सुपुत्र और 2 सुपुत्रियों सहित भरपूर परिवार छोड़कर गई हैं। आपके सुपुत्र श्री सुनीलजी-पुत्रवधू श्रीमती रेणुजी सन्त-सतियों की गोचरी पानी सेवा में नियमित प्रतिबद्ध हैं।



किशनगढ़-धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री सागरमलजी सुपुत्र स्व. श्री मिश्रीमलजी मुणोत का 12 मार्च, 2022 को 83 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप स्थानक पधार कर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने में अग्रणी थे। आप प्रामाणिक और अनुशासित जीवन शैली के धनी थे। आप नियमित 2-3 सामायिक करते थे। आप सरल हृदय, मिलनसार एवं व्यवहार-कुशल थे। अमेरिका में रहते हुए आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री सुभाषचन्दजी गुरु हस्ती के फरमान स्वाध्याय के लिए स्वाध्याय संघ के अन्तर्गत सप्ताह में कुछ दिन शिक्षक रूप में सेवा दे रहे हैं।



बीकानेर-संघ-सेवी, धर्मनिष्ठ, श्रावकरत्न श्री जितेन्द्रजी सुपुत्र श्रीमान् नेमीचन्द्रजी कोठारी (भोपाल वाले),



बीकानेर का 15 फरवरी, 2022 को देहावसान हो गया। आपकी चारित्रसम्पन्न सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति थी। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित तथा धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक श्रावकरत्न सन्त-सतीवृन्द की सेवा में भी तत्पर रहते थे। आपश्री का जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सदगुणों से ओतप्रोत था। आप नियमित रूप से सामायिक करने वाले एवं गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लेने वाले अग्रणी श्रावक थे। सन्त-सतीवृन्द एवं स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य सत्कार में आपका परिवार सदैव तत्पर है।



जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विजयलक्ष्मीजी धर्मपत्नी श्री प्रकाशमलजी भण्डारी का 21 फरवरी, 2022 को स्वर्गवास हो गया। श्राविकारत्न की आचार्यश्री हस्ती, आचार्यश्री हीरा, उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा. सहित सभी सन्त-सतियों के प्रति गहरी श्रद्धाभक्ति थी। आप नियमित 5 से 7 सामायिक करती तथा सिंहपोल स्थानक में जब कभी सन्त-सतियों का आवागमन होता आप प्रवचन एवं साधर्मी वात्सल्य का लाभ लेती थीं।



झरत-बालक ह्रीधानजी सुपुत्र श्रीसिद्धार्थजी एवं सुपौत्र श्री धर्मेशजी चौपड़ा (कवास वाले) बालोतरा का बाल्यकाल में ही देवलोकगमन हो गया। श्री धर्मेशजी का पूरा परिवार गुरुभक्ति, सेवा और समर्पण में अग्रणी रहता है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

काल गणना का 'वीर सम्बत्' : भारत का सर्वप्राचीन सम्बत्

डॉ. पी. सी. जैन

भारत का सर्वप्राचीन सम्बत् वीर निर्वाण सम्बत् है। इसकी प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए सुप्राचीन विपुल साहित्य के अतिरिक्त एक शिलालेख अजमेर जिले के बडली ग्राम में मिला है। वीर निर्वाण सम्बत् 84 (ईस्वी पूर्व 443) का यह शिलालेख वीर निर्वाण सूचक लेखों में सर्वप्रथम लेख है तथा सम्प्रति अजमेर संग्रहालय में मौजूद है। कुछ भी हो, महावीर स्वामी के मोक्ष जाने के थोड़े ही समय के बाद यह लेख महावीर सम्बत् को सर्वप्राचीन सिद्ध करने के लिए पर्याप्त सुदृढ़ प्रमाण है। अशोक के काल से पूर्व के लिखे इस अभिलेख की पहली पंक्ति में 'वीराय भगवत्' तथा दूसरी पंक्ति में चतुराशि लिखा है।

'जैन साहित्य संशोधन' खण्ड 1, पृष्ठ 211 पर प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल लिखते हैं- "जैनों में करीब 2,550 वर्षों से प्रचलित संवत्सर गणना की रीति भारत में सर्वोत्तम एवं सर्वप्राचीन है। प्राचीन काल से ऐतिहासिक पद्धति की वर्ष गणना हमारे देश में प्रचार में थी, इससे यह बात स्पष्ट सिद्ध होती है। यह पद्धति अन्यत्र नष्ट होकर सिर्फ जैनों में ही रही है। जैन वर्ष गणना के आधार पर बुद्ध और महावीर के काल के बाद की ऐतिहासिक घटनाओं को मैंने कालक्रम से ठीक किया है। वह सुज्ञात गणना से बिल्कुल ठीक बैठता है। अनेक ऐतिहासिक विचारों का संकेत हमें जैनों के ऐतिहासिक लेख एवं पट्टावलिओं से भी मिलता है।"

जैन लेखक अपनी रचनाओं में निर्वाण सम्बत् का उल्लेख आज भी कर रहे हैं। श्वेताम्बर जैन मेरुतुंगसुरि ने 'विचार श्रेणी' में बताया है कि 'महावीर सम्बत्' और विक्रम सम्बत् में 470 वर्षों का अन्तर आता है। इस गणना से महावीर सम्बत् का आरम्भ 527 ईस्वी पूर्व में हुआ, क्योंकि विक्रम सम्बत् का आरम्भ 57 ईस्वी पूर्व में होता है और 470 वर्ष का अन्तर होने से $57 + 470 = 527$ ईस्वी पूर्व महावीर का निर्वाण सम्बत् हुआ।

-बेचरमेन, सरस्वती उच्चस्तरीय अध्ययन अनुसन्धान संस्थान, जयपुर-302017 (राज.)

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन

(अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 16293 से 16306 तक कुल 14 सदस्य बने।

जिनवाणी मासिक पत्रिका प्रकाशन योजना हेतु

साभार

100000/-श्रीमती शान्ताजी मोदी, जयपुर

जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

25000/-श्री सुशीलजी, शशांकजी, सिद्धार्थ जी सिंघवी, जयपुर, जिनवाणी हेतु सप्रेम।

21000/-श्री रिखबचन्दजी, नवरतनमलजी, अशोकजी, सुभाषजी, चन्द्रप्रकाशजी, राजेशजी, सुशीलजी, सुनीलजी, विशालजी, विनीतजी बम्ब, विल्लीपुरम, सौ. छायाजी सङ्ग श्री विक्रमजी के शुभविवाह 05 फरवरी, 2022 के उपलक्ष्य में।

11000/-श्री पोपटलालजी, शशीकान्तजी, अजीतजी सुराणा, मनमाड, पूज्य पिताजी श्री सम्पतलालजी सुराणा का 29 जनवरी, 2022 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।

10000/-श्रीमती पुष्पाजी-स्व.श्री विनयचन्दजी संचेती, श्रीमती ऊषाजी-डॉ. ज्ञानचन्दजी माथुर, श्रीमती आशाजी जैन, श्री कमलचन्दजी नवलखा, श्रीमती स्मिताजी-श्री नीलेशजी कोठारी, सुश्री अतिकाजी, श्री अश्विनजी ललवानी, जयपुर, पूज्या मातुश्री श्रीमती प्रेमबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री सूरजमलजी नवलखा के 10 फरवरी, 2022 एवं भ्राता श्री कैलाशचन्दजी पुत्र स्व. श्री सूरजमलजी नवलखा के 22 फरवरी, 2022 को स्वर्गगमन करने पर पुण्य-स्मृति में।

5100/-श्रीमती इचरजदेवीजी-श्री पदमचन्दजी मुणोत, जयपुर, सुपुत्र श्री सुनीलजी-पुत्रवधू श्रीमती शशीजी मुणोत के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में।

5100/-श्रीमती रतनजी कर्णावट, जयपुर, स्व. श्री मोतीचन्दजी कर्णावट की पुण्य-स्मृति में।

5000/-श्री सोहनलालजी, प्रेमचन्दजी हुण्डीवाल (भोपालगढ़ वाले), चेन्नई, चि. विक्रमजी सङ्ग सौ. छायाजी का 5 फरवरी, 2022 को शुभविवाह एवं गुरु प्रेरणा आह्वान

अनुरूप दिन में जमीकन्द रहित विवाह भोज आदि समस्त कार्य सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

4200/-श्री मोहन कोठारी विनर, दुर्गा, जिनवाणी को सप्रेम।

3700/-श्रीमती निधि दिनेशजी लोढ़ा, मुम्बई, जिनवाणी को सप्रेम।

2100/-श्री राजीवजी जैन, मुम्बई, जिनवाणी को सप्रेम।

2100/-श्री प्रमोदजी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़, भतीजे चि. अरिहन्त सङ्ग सौ. शालूजी के शुभविवाहोपलक्ष्य एवं गुरु आमना ग्रहण करने की खुशी में।

2100/-वीरभ्राता श्री सरूपचन्दजी सुराणा (नागौर वाले), जोधपुर, सुपुत्र चि. नयनजी सङ्ग सौ. श्रेयाजी के शुभविवाहोपलक्ष्य में एवं गुरु आमना ग्रहण करने की खुशी में।

2100/-श्री नवरतनमलजी बम्ब (निमाज वाले), विल्लीपुरम, भतीजी सौ. छायाजी सङ्ग चि. विक्रमजी के शुभ विवाहोपलक्ष्य में।

2100/-श्री अशोकजी बम्ब, विल्लीपुरम, भतीजी सौ. छायाजी सङ्ग चि. विक्रमजी के शुभ विवाहोपलक्ष्य में।

2100/-श्री सुभाषजी, अशोकजी बम्ब, विल्लीपुरम, भतीजी सौ. छायाजी सङ्ग चि. विक्रमजी के शुभ विवाहोपलक्ष्य में।

2100/-श्रीमती आशाजी नवलखा, जयपुर, श्रीमती प्रेमबाईजी और श्री कैलाशचन्दजी नवलखा की पुण्य-स्मृति में।

2100/-श्री जीतमलजी बोथरा, जयपुर, सुपौत्र संवेग एवं निर्वेग पुत्र श्रीमती संध्या-सौरभजी बोथरा के जन्म के उपलक्ष्य में।

2100/-श्रीमती राजकँवरजी, श्रीसम्पतराजजी, श्रेणिकराजजी भण्डारी, चैन्नई-रायचूर, वर्ष 2022 का चातुर्मास रायचूर के लिए स्वीकृत होने के उपलक्ष्य में।

2100/-श्रीमती निर्मलाजी चोरड़िया, सुश्री प्रेक्षाजी चोरड़िया, रायचूर, वर्ष 2022 का चातुर्मास रायचूर के लिए स्वीकृत होने के उपलक्ष्य में एवं स्व. श्री प्रदीपजी चोरड़िया की 5वीं पुण्य-स्मृति में।

2100/-श्री बसन्तजी गोलेछा, सनावद-खरगौन, पूज्या मातुश्री श्रीमती दाखाबाईजी गोलेछा के 14 फरवरी, 2022 को स्वर्गगमन करने पर पुण्य-स्मृति में।

- 1100/- श्री अंकितजी, अनुभवजी जैन, अजमेर, पड़दादाजी स्व. श्री इंद्रचन्दजी एवं पड़दादीजी स्व. श्रीमती उगमबाईजी कटारिया की पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्रीमती प्रियंकाजी धर्मपत्नी श्री हितेशजी जैन, अहमदाबाद, गुरुचरण सन्निधि में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।
- 1100/- श्री विनोदकुमारजी, सिनोदकुमारजी, प्रमोदकुमारजी जैन (खातौली वाले) कोटा, पूज्य पिता श्री बाबूलालजी जैन का देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्री भारत भूषणजी-श्रीमती राजुलदेवी जी जैन (जहाडू वाले) अलवर, अपनी 60वीं वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री प्रकाशचन्दजी जैन सुपुत्र स्व. श्री लड्डूलालजी जैन (श्यामपुरा वाले), जलगाँव, सुपुत्र श्री अभिषेक जैन के Face Book (Meta) मुम्बई में Agency Solution Partner के पद पर कार्य ग्रहण करने की खुशी में।
- 1100/- श्री प्रेमचन्दजी, पारसमलजी, सुरेन्द्रकुमारजी पालडेचा, धनोप-भीलवाड़ा, भ्राता स्व. श्री जवरीलालजी पालडेचा की पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्रीमती फूलकँवरजी मेहता, ब्यावर, पूज्या सासू माँ श्रीमती कंचनकँवरजी की पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्रीमती शान्ताजी मोदी, जयपुर अपनी ननद श्रीमती विजयलक्ष्मीजी सुराणा की सुपौत्री सुश्री धनुषी के एम.ए. (मनोविज्ञान) में स्वर्ण पदक पाने के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्रीमती विद्याबाईजी कोठारी, जयपुर, स्व. श्री शान्तिचन्दजी कोठारी की पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्री हुकुमचन्दजी जैन (चौरू वाले), सवाईमाधोपुर, चि. अमित का शुभविवाह सौ. सुनिता सुपुत्री श्री महावीरप्रसादजी जैन सुमेरगंजमण्डी के साथ 5 फरवरी, 2022 को सम्पन्न होने की खुशी में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

- 232702/-श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, पुस्तक जैन इतिहास के प्रेरक प्रसङ्ग के 25 भागों के पुनर्मुद्रण हेतु।
- 35000/-श्री सायरकँवर प्यारेलाल शेषमल कोठारी चेरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद पुस्तक उत्तराध्ययनसूत्र भाग-1 के पुनर्मुद्रण हेतु।

गजेन्द्र निधि / गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु साभार

- श्री राधेश्यामजी, कुशलजी, पदमजी, अशोकजी, प्रदीपजी गोटेवाला, सवाईमाधोपुर (राजस्थान) श्री सुरेशजी कवाड़, चेन्नई (तमिलनाडु)

आवश्यक-सूचना

वर्ष 2022 का चातुर्मास आषाढ शुक्ला पूर्णिमा 13 जुलाई, 2022 से प्रारम्भ होगा तथा पर्युषण 24 अगस्त, 2022 से प्रारम्भ होंगे। सम्वत्सरी 31 अगस्त, 2022 को रहेगी।

पाक्षिक-पत्र मँगवाने का सम्पर्क सूत्र

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् 2079 का प्रकाशन जिनवाणी मार्च, 2022 में किया गया था। उस पाक्षिक-पत्र प्राप्ति का सम्पर्कसूत्र-श्री चंचलचन्दजी सिंघवी, 507 ए, 5वीं बी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.) फोन 9460767029

7 मई, 2022 को दीक्षा

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जिनशासन गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने महती कृपा करते हुए व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. की सन्निधि में ज्ञानार्जन कर रही मुमुक्षु बहिन सुश्री रेणुजी गुन्देचा सुपुत्री श्री गौतमचन्दजी गुन्देचा, सोजत रोड़ की जैन भागवती दीक्षा 7 मई, 2022 को होने की घोषणा की है। स्थान की घोषणा यथासमय की जाएगी।

-धन्यपत् सेठिया, महामन्त्री

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

जेल की हवा

एक शहर में अधिकांश धनवान एक ही कॉलोनी में रहते थे। ऐसी कॉलोनी के बच्चों के पढ़ने के लिए इंग्लिश मीडियम स्कूल बना हुआ था, जिसमें प्रवेश लेने का प्रारम्भिक डोनेशन 3-5 लाख रुपये था। पहली कक्षा से शुरू करके आगे की कक्षाओं में अध्ययन करने वाले ऐसे बच्चों के जीवन में भोग के अलावा कुछ भी नहीं था। गरीब मनुष्य पर यदि निबन्ध लिखने को कहा जाये तो ये बच्चे एक भी अक्षर न लिख सके, क्योंकि गरीबी में कैसा दुःख होता है यह उन धनवान बच्चों ने देखा ही नहीं था। आज के जमाने के युवक नरक और तिर्यञ्च के बारे में क्या जानेंगे, क्योंकि वे तो केवल मौज-शौक में डूबे हुए हैं। जैसे-जैसे ये लड़के बड़े होते जाते हैं, वैसे-वैसे उनके भोग के क्षेत्र भी बढ़ते जाते हैं। दिन हो या रात, केवल काला काम ही करते हैं।

वे गर्मी की छुट्टी में दर्शनीय स्थानों का भ्रमण (ट्यूर) करते हैं। पहली कक्षा की पिकनिक का खर्च 10 हजार, पाँचवीं कक्षा का खर्च 50 हजार। दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने ही सब कुछ देख लिया है। अतः उनके बारे में तो कुछ कह ही नहीं सकते। इस तरह उन बच्चों ने कहा कि इस वर्ष यदि पिकनिक पर ले जाना हो तो इतने वर्षों में जहाँ नहीं गए वहाँ पर ही ले चलना। प्रिंसिपल

बोले-“हाँ बच्चों! इस साल पिकनिक में ऐसी जगह ले चलेंगे जहाँ तुम कभी नहीं गए। इस बार फ्री में ले जा रहे हैं। स्कूल ही सारा खर्चा करेगा, लेकिन कहाँ ले जाना है यह सस्पेन्स है।” अब जाऊँ अथवा न जाऊँ? फ्री में जाना है तो सभी ने अपना नाम लिखवा दिया। मजा जो आयेगा। सभी बच्चे तैयार हो गए। इस समय की पिकनिक यादगार रहे ऐसा करना है। बस में बैठने के बाद सभी के मन में एक ही प्रश्न था कि हमको कहाँ जाना है?

सभी बच्चों ने एक साथ टीचर और प्रिंसिपल से पूछा कि हम सब लोग कहाँ जा रहे हैं? प्रिंसिपल बोले-“रात को बारह बजे बतायेंगे।” बस पूरे दिन दौड़ती रही। 400 किलोमीटर तक लगातार दौड़ने के बाद शाम को बस एक होटल पर पहुँचती है। रात को दस बजे अचानक एक घटना घट गई। पिकनिक जाने के लिए खर्च हेतु स्कूल से पैसा साथ लिया था, वह पैसों का बैग खो गया।

सभी से पूछा गया कि अचानक पैसों का बैग कहाँ गायब हो गया? वातावरण में जो आनन्द था, वह दुःख में बदल गया। थोड़ी देर में पुलिस वहाँ आ गई और सभी से पूछताछ करने लगी। बैग आखिर किसने लिया, इसकी खोज शुरू हो गई। प्रिंसिपल ने सभी विद्यार्थियों का नाम लिया। पुलिस ने सभी विद्यार्थियों को रिमाण्ड

पर ले लिया। रात 12 बजे सभी विद्यार्थियों को पुलिस ने जेल में बन्द कर दिया।

जेल तो जेल होती है, महल नहीं होता। अनजान शहर की पुलिस चौकी और वहाँ की जेल। कहीं गए न हों, ऐसी जगह पिकनिक मनाने जाना था, अब उनकी दशा क्या हो गई? सभी टीचर प्रिंसिपल से कहने लगे— “हमारे बच्चे ऐसे नहीं हैं, उनको छोड़ दो।” जेल में खाना-पीना, रहना कैसा होता है? करोड़पति कॉलोनी के लड़के जेल में? यहाँ घर के समान सुख-सुविधा नहीं थी। मच्छर, कीड़े और मकोड़े थे। ऊपर से पुलिस के डण्डे फ्री में पड़ते। पिकनिक कैसी होती है, यह उनको अच्छी तरह समझ में आ गई। 1, 2 और 3 दिन तक वे जेल में रहे। जेल में वे बहुत परेशान हो गए। तीन दिन बाद प्रिंसिपल ने सभी को जेल से बाहर निकालकर पूछा कि तुम सभी को कहाँ जाना है? सभी को घर जाने की जल्दी थी। अब किसी को कहीं जाने की इच्छा नहीं थी।

सभी को अपनी मम्मी की याद आ रही थी। हमको हमारी जिनवाणी माता याद आती है क्या? सभी घर वापस आ गए। अपने-अपने बच्चों का मुख देखकर सभी के माता-पिता खुश हो गए। सभी अभिभावकों ने एक साथ उनसे पूछा— “साहब पैसों के थैले का क्या हुआ?” प्रिंसिपल बोले— “पैसा कहीं गया ही नहीं था। ये बच्चे कॉलेज की आबोहवा में बिगड़ न जायें, अतः उनको समझाने के लिए जेल की सजा कैसी होती है, ऐसी एक पिकचर दिखाई है। अब बड़े होकर जो करें सो करें, किन्तु जेल कैसी होती है, यह याद तो जरूर रखेंगे।”

-जैनिष्म सीरखे भाग-2 पुस्तक से साभार

Game of life

Sh. Shrikant Gupta

Imagine life as a game in which you are juggling some five balls in the air. You name them- work, family, health, friends and spirit and you're keeping all of these in the air. You will soon understand that work is a rubber ball. If you drop it, it will

bounce back. But the other four balls- family, health, friends and spirit-are made of glass.

If you drop one of these, they will be irrevocably scuffed, marked, nicked, damaged or even shattered. They will never be the same. You must understand that and strive for balance in your life.

Don't give up, when you still have something to give. Nothing is really over until the moment you stop trying. Don't be afraid to admit that you are less than perfect. It is this fragile thread that binds us to each together.

Don't be afraid to encounter risks. It is by taking chances that we learn how to be brave. Don't shut love out of your life by saying it's impossible to find time. The quickest way to receive love is to give; the fastest way to lose love is to hold it too tightly; and the best way to keep love is to give it wings.

Don't run through life so fast that you forget not only where you've been, but also where you are going. Don't forget, a person's greatest emotional need is to feel appreciated. Don't be afraid to learn. Knowledge is weightless, a treasure you can always carry easily. Don't use time or words carelessly. Neither can be retrieved. Life is not a race, but a journey to be savored each step of the way.

Yesterday is History, Tomorrow is a mystery and Today is a gift-that's why we call it the PRESENT.

-जोधपुर (राज.)

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1-कायोत्सर्ग की क्या काल मर्यादा है?

उत्तर- कायोत्सर्ग की कोई निश्चित काल मर्यादा नहीं है। इसकी पूर्ति 'नमो अरिहंताणं' शब्द बोलकर की जाती है। कायोत्सर्ग काया को स्थिर करके, मौन धारण करके और मन को एकाग्र करके किया जाता है।

प्र. 2-कायोत्सर्ग के कितने आगार हैं?

उत्तर- कायोत्सर्ग के 12 आगार हैं जो इस प्रकार हैं-1. ऊससिएणं-(ऊँचा) श्वास लेने से, 2. नीससिएणं-(नीचा) श्वास छोड़ने से, 3. खासिएणं-खाँसी आने से, 4. छीएणं-छीक आने से, 5. जंभाइएणं-उबासी (जम्हाई) आने से, 6. उड्डुएणं-डकार आने से, 7. वायनिसग्गेणं-अधो-वायु निकलने से, 8. भमलीए-चक्कर आने से, 9. पित्तमुच्छाए-पित्त के कारण मूर्च्छित होने से, 10. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं-सूक्ष्म रूप से अङ्ग हिलने से, 11. सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं-सूक्ष्म रूप से कफ का सञ्चार होने से और 12. सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं-सूक्ष्म रूप से दृष्टि का सञ्चार होने से अर्थात् नेत्र फड़कने से।

-‘श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र’ पुस्तक से

ऊँचे काम करो जीवन में

श्री मोहन कोठारी ‘विनर’

ऊँचे काम करो जीवन में, सौरभ उनकी महकाओ, दुःखियों के दुःख देख देखकर, दयाभाव घट में लाओ॥

ऊँचे काम करो जीवन में....॥टेर॥

क्रिस्मत के मारे बेचारे, इधर उधर वो फिरते हैं, दो जून की रोटी खातिर, दर दर वो भटकते हैं। कई इज्जत से देते हैं, कई दुत्कार लगाते हैं, नहीं बोलते कुछ बेचारे, कड़वा घूँट पी जाते हैं। अपने हाथों से खाना दो, साता उनको पहुँचाओ,

ऊँचे काम करो जीवन में....॥1॥

कभी भिक्षा से पेट है भरता, कभी भूखे सो जाते हैं, देख, देख बच्चों की हालत, नैनों से आँसू बहाते हैं। ठण्डी रातों की ठिठुरन में, नींद नहीं ले पाते हैं, जीवन की इस बदहाली पर, मन मसोस रह जाते हैं। खाना दो कम्बल दो उनको, कुछ राशन घर दे आओ॥

ऊँचे काम करो जीवन में....॥2॥

बहुत मिला धन-वैभव तुमको, पुण्यवानी से पाया है, मुक्त हस्त से दान दिया था, वही सामने आया है।

सदुपयोग करो इसका तुम, ज्ञानी जन फरमाते हैं, शुभ कारज में जो उसे लगाते, कर्मों की क्रोड़ खपाते हैं। दुःखियों के दुःख दूर करो तुम, श्रेष्ठीवर्य कहलाओ॥ ऊँचे काम करो जीवन में....॥3॥

-जन्ता साड़ी सेण्टर, स्टेशन् रोड, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

जिज्ञासा-समाधान

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

(पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 23 जनवरी, 2022 को मेड़तासिटी के वीर भवन में श्री मयंक भण्डारी की जिज्ञासा का समाधान किया गया, जिसका संकलन श्री हस्तीमलजी डोसी ने किया है। -सम्पादक)

जिज्ञासा- ‘जय जिनेन्द्र’ शब्द का क्या अभिप्राय है?

समाधान- अभिवादन व्यवहार जगत् का महत्त्वपूर्ण कार्य है। हर परम्परा में अभिवादन का सिलसिला देखने को मिलता है। एक-दूसरे से जब मिलना होता है तब व्यक्ति अपने से अन्य व्यक्ति को सम्मान देने के लिए हाथ जोड़कर अभिवादन करता है और साथ ही सामने वाले व्यक्ति का अभिवादन स्वीकार भी करता है। जो व्यक्ति जिस परम्परा से सम्बन्ध रखता है। उस परम्परा के अनुसार अभिवादन में शब्दों का प्रयोग करता है। जैसे-रामस्नेही परम्परा से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति ‘राम-राम सा’ बोलते हैं, कृष्ण के अनुयायी ‘जय श्री कृष्णा’ अथवा ‘राधे-राधे’ शब्द का प्रयोग कर अभिवादन करते हैं, इतर परम्परा पर भी दृष्टिपात किया जाता है तो मुस्लिम समुदाय में भी एक-दूसरे से मिलने पर ‘सलाम ए मालिकम्’ बोलने की प्रथा देखी जाती है।

जैनधर्म में अभिवादन करते समय ‘जय जिनेन्द्र’ शब्द का प्रयोग पिछले कुछ सालों से विशेष रूप से प्रचलन में आया है। इस ‘जय जिनेन्द्र’ शब्द के अन्तर्निहित गूढ़ रहस्य क्या-क्या हैं उसे हम समझने का प्रयास करेंगे।

अन्य परम्पराओं में अभिवादन के समय अपने-अपने इष्ट एवं भगवान का नाम लेकर अभिवादन किया

जाता है, जबकि जैनदर्शन नाम से निर्नाम बनने की प्रेरणा देता है, इसलिये यहाँ जय जिनेन्द्र शब्द में किसी भी तीर्थङ्कर, आचार्य, उपाध्याय, साधु-साध्वी का नामोल्लेख न होकर उनके गुणों की गरिमा का संगान किया गया है। यह जय जिनेन्द्र शब्द की पहली विशेषता है।

‘जय जिनेन्द्र’ अर्थात् जिन्होंने इन्द्रियों के विषय को जीत लिया है, उनकी जय। राग-द्वेष, विषय-कषाय को जिन्होंने सदैव के लिए समाप्त कर दिया ऐसे वीतराग भगवन्तों की जय।

‘जय जिनेन्द्र’ में दो शब्द हैं-पहला जय, दूसरा जिनेन्द्र। जिससे जय जिनेन्द्र बोलने वाले व्यक्ति को तीन चीजें प्राप्त होती हैं। सर्वप्रथम जय शब्द बोलने से मन को शान्ति मिलती है। क्योंकि हार और जीत ये दो शब्द हैं, इन दो शब्दों में प्रत्येक व्यक्ति जीत को पसन्द करता है, हर क्षेत्र में व्यक्ति विजयश्री का ही वरण करना चाहता है। हार को व्यक्ति पसन्द नहीं करता, सिर्फ एक स्थान को छोड़कर, कौन-सा स्थान? व्यक्ति मन्दिर के सामने बैठे हुए फूल माला बेचने वाले (मालाकार) के पास जाकर कहता है ‘मुझे हार दे दो’, यहाँ व्यक्ति हार माँगता है, शेष सभी जगह ‘जीत’ को ही चाहता है, ‘जय’ शब्द जीत का द्योतक है। इसलिये जय शब्द बोलने से व्यक्ति को मन की शान्ति मिलती है। दूसरा जिनेन्द्र शब्द बोलने से वचन को शक्ति मिलती है। हम हमारी वाणी का जितना सदुपयोग करते हैं, उतनी ही हमारी अभिव्यक्ति शक्तिशाली बनती चली जाती है और यदि वाणी का दुरुपयोग बुराई, निंदा, आलोचना, गाली-गलौच आदि में किया जाता है तो वचन की शक्ति घटती चली जाती है। जिनेन्द्र शब्द वाणी का भूषण है, वचन का आभूषण है, प्रभु का गुणगान है, इसलिए कहा- ‘जिनेन्द्र’ शब्द बोलने से वचन को शक्ति मिलती है। तीसरा-जय जिनेन्द्र एक साथ बोलने से प्रभु की भक्ति होती है और जहाँ प्रभु की भक्ति होती है वहाँ कर्मों से मुक्ति मिलती है। इसलिए ‘जय जिनेन्द्र’ शब्द बोलने से मन को शान्ति मिलती है। वचन की शक्ति

बढ़ती है और प्रभु की भक्ति होती है, इन भावों को हृदय में धरकर यदि व्यक्ति अभिवादन में जय जिनेन्द्र बोलता है तो निश्चित रूप से कर्मों से मुक्ति मिलती है।

‘जय जिनेन्द्र’ शब्द बोलने से नव प्रकार के पुण्य में से अन्तिम चार पुण्य भी होते हैं, इसलिए सभी को जय जिनेन्द्र शब्द का उच्चारण करना चाहिए। चार पुण्य कौन से? तो देखिए (पश्चादानुपूर्वी से) सर्वप्रथम व्यक्ति जय जिनेन्द्र बोलते समय प्रायः सामने वाले व्यक्ति को आदर-सम्मान देने के लिए हाथ जोड़कर जय जिनेन्द्र बोलता है तब नमस्कार पुण्य होता है, साथ ही काया का (हाथ का) सदुपयोग दूसरे को सम्मान देने के लिए किया तो काया पुण्य भी साथ-साथ होता है। मुँह से बोला जा रहा है-जय जिनेन्द्र सा, तो वचन पुण्य भी हुआ और सामने वाले के प्रति जब मन में सम्मान का भाव होता है तभी व्यक्ति सामने वाले को जय जिनेन्द्र बोल पाता है अन्यथा घर के सदस्यों के साथ अनबन या कहासुनी हो जाने पर प्रतिदिन का कार्य (जय जिनेन्द्र बोलना) भी बन्द-सा हो जाता है। इसलिये मन में अच्छे भाव आने पर ‘जय जिनेन्द्र’ का उच्चारण किया जाता है, इसलिये चौथा मन पुण्य हुआ।

हम भाग्यशाली हैं कि हमें जैनधर्म मिला, जिसमें हर कार्य के पीछे कर्म-निर्जरा का भाव निहित है। जय जिनेन्द्र एक छोटा-सा शब्द है जिसको भाव से बोलने पर एक साथ चार पुण्य कमाने का सुअवसर प्राप्त होता है। यदि व्यक्ति रूढ़िवादिता से, परम्परा से, बिना भाव के जय जिनेन्द्र शब्द बोलता है तो शायद वे इतने बड़े पुण्य से, इतनी बड़ी निर्जरा से अपने आपको वञ्चित रख लेता है। हम जय जिनेन्द्र के भावों को समझें और भाव से ‘जय जिनेन्द्र’ शब्द का उच्चारण करें। जय जिनेन्द्र शब्द बोलने से अतीत में हुए अनन्त जिनेन्द्र भगवन्तों को, सिद्ध भगवन्तों को, वर्तमान में रहे वीतराग भगवन्तों के प्रति एक साथ नमन करता है।

जय जिनेन्द्र वर्तमान में जैनों की पहचान बन गया है। जय जिनेन्द्र जैन का सम्मान है, जैन की पहचान है,

जैनियों का अभिवादन है। जिन घरों के बाहर जय जिनेन्द्र का स्लोगन लिखा हुआ रहता है वहाँ से गुजरने वाले व्यक्ति को यह समझने में देर नहीं लगती कि यह घर/दुकान जैन का है। जय जिनेन्द्र शब्द हमें भी इन्द्रिय विजेता-आत्म-विजेता बनने की पावन प्रेरणा देता है। हम भी अनन्त वीतराग भगवन्तों के समान इन्द्रियजेता बन शीघ्र ही कर्म विजेता बनें, यही 'जय जिनेन्द्र' शब्द का भाव है।

ज्ञान क्रीड़ा

श्री सार्थक डोसी

One-One-One	::	कर्मों को हन।
Two-Two-Two	::	गुरु चरणों को छू।
Three-Three-Three	::	घर से हो जाओ फ्री।
Four-Four-Four	::	मत मचाओ शोर।
Five-Five-Five	::	अच्छी बनाओ लाइफ।
Six-Six-Six	::	गुरु चरणों में हो जाओ फिक्स।
Seven-Seven-Seven	::	हीरा गुरु ए-वन।
Eight-Eight-Eight	::	खोलो मोक्ष नगर का गेट।
Nine-Nine-Nine	::	मेरे गुरु सुपर फाइन।
Ten-Ten-Ten	::	बन जाओ पक्के जैन।
Goli-Biscute-Lolipop	::	जैनधर्म है सबसे टॉप।
Twinkle Twinkle Little Star	::	गुरु हीरा सुपर स्टार
		-जोधपुर (राज.)

Sweet Lines

Mrs. Minakshi Dinesh Jain

- ✽ A bitter tongue makes life bitter, a sweet tongue makes life better.
- ✽ Anger is a condition in which the tongue works faster than the mind.
- ✽ People are unreasonable, illogical and self centered. Love them anyway.
- ✽ Ships are safer in the harbour but they are

not meant for that purpose.

- ✽ People may doubt what you say, but they will always believe what you do.

-17/729, CHB, Jhodhpur-342008 (Rajasthan)

जीवन का नीति वाक्य

श्री पी. एस. सुराणा

इस संसार में वही सुखी रह सकता है, जो विधि के विधान को स्वीकार कर उसी में सन्तुष्ट रहता है तथा कर्मों के कारण प्राप्त विकल्पों में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनकर अपने कर्तव्य का पालन करता है। विधि का विधान हमें अकर्मण्य नहीं बनाना चाहता, बल्कि हमें सत्कार्यों में लगाए रखना चाहता है। सत्कार्य से सबका भला होता है, अपना भी और दूसरों का भी। कर्म के अभाव में जीवन-यात्रा ही सम्भव नहीं है। व्यक्ति विशेष की अन्तरात्मा की आवाज़ विधि के विधान का संकेत होती है। जिन कार्यों का अनुमोदन आत्मा कर दे उसे विधि के विधान के अनुकूल ही समझा जा सकता है। विधि का विधान अटल है और उसे स्वीकारना खुशियों एवं सन्तोष को आमन्त्रण देना है।

-सुराणा एण्ड सुराणा, 61-63, राधाकृष्णन रोड, मेलापुर, चेन्नई-600004 (तमिलनाडु)

जैनधर्म का सार

संकलित

एक शब्द में-समता (अनुकूल-प्रतिकूल स्थिति में विचलित न होना)। दो शब्दों में-वीतरागता, अविद्वेष। तीन शब्दों में-मनःसंयम, वचन संयम, काया संयम। चार शब्दों में-क्रोधमुक्ति, मानमुक्ति, मायामुक्ति, लोभमुक्ति। पाँच शब्दों में-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

आचार में सत्य, संयम, अहिंसा, तप और अपरिग्रह तथा विचार में वीतरागता (बिना पूर्वाग्रह के देखना) और अनेकान्त दृष्टि, यह है जैनधर्म का सार।

-सुश्री लोरी मोदी, 5 ए/1, सुभाष नगर, पाल रोड, जोधपुर-342008 (राजस्थान)

ईर्ष्या

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 मई, 2022 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

पुनीत और ध्येय दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। दोनों के बीच अच्छी मित्रता थी। ध्येय पढ़ने, खेलने तथा अन्य कार्यों में पुनीत से हमेशा अक्वल रहता था। इससे ध्येय का स्कूल में बहुत नाम था। स्कूल के प्रत्येक प्रोग्राम में ध्येय हिस्सा लेना पसन्द करता था। पुनीत भी ध्येय की तरह आगे बढ़ने का प्रयत्न तो करता, परन्तु सफल नहीं हो पाता था।

एक दिन पुनीत स्कूल से उदास होकर घर वापस आया और अपना चेहरा दर्पण में देखने लगा तो उसका चेहरा भौंड़ू बाबा जैसा लग रहा था। भौंड़ू की तरह दिखने वाले अपने चेहरे को देखकर वह शीशे के ऊपर गुस्सा हो गया। तभी शीशा बोला-“पुनीत! मैं दर्पण हूँ। जो देखता हूँ, वही बताता हूँ। यह बता तू आज उदास क्यों है?” पुनीत चिड़ता हुआ बोला-“ध्येय के कारण। इस बार भी मुझसे अधिक अंक उसके आ गए। मैं चाहे कितनी भी अधिक मेहनत कर लूँ, लेकिन वह मुझसे आगे ही बढ़ जाता है। आखिर मैं पीछे क्यों रह जाता हूँ, यह समझ में नहीं आता।”

दर्पण मुस्कराते हुए बोला-“तू ध्येय से ईर्ष्या करता है।” पुनीत बोला-“नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है। वह तो मेरा अच्छा दोस्त है।” दर्पण बोला-“मैंने तुझसे पहले ही कहा था कि जो मैं देखता हूँ, वही बताता हूँ। मैं

तुझे अभी साबित करके बता सकता हूँ कि तू ध्येय से ईर्ष्या करता है। मेरी बात सुन और बता कि यह बात सच्ची है या नहीं।”

(1) जब भी ध्येय को डाँट लगती है तब तुझे अच्छा लगता है या नहीं.... हाँ।

(2) जब भी उसकी प्रशंसा होती है तब तुझे खुशी होती है या नहीं....नहीं।

(3) जब भी उसको कुछ नुकसान होता है तब तू खुश होता है या नहीं....हाँ।

(4) जब भी वह अच्छा काम करता है तो तुझे भी लगता है कि मैं उससे भी अच्छा काम करूँ..... हाँ।

(5) तू सभी से उसकी खराब आदतों की निंदा करता है.... हाँ।

(6) इसी कारण तू उसके साथ ईर्ष्या करता है.... हाँ, हाँ, हाँ करता हूँ (गुस्से में पुनीत बोला)।

दर्पण बोला-“तो बता, मैंने ठीक ही कहा था कि तू ईर्ष्या की आग में है।”

पुनीत ने पूछा-“तुम्हें यह कैसे पता चला?” दर्पण-“मैंने पहले ही कहा था कि जो मुझे दिखाई देता है, वही सत्य होता है। तेरा उदास चेहरा, ध्येय के प्रति गुस्सा और चिड़, यही तेरी ईर्ष्या का कारण है। मेरे पास तेरी यह ईर्ष्या खत्म करने का एक अच्छा उपाय है।”

पुनीत बोला-“यह उपाय मुझे जल्दी से बताओ।” दर्पण-“तो सुन, यदि तू अच्छे भावों से ध्येय के गुणों का बखान करेगा तो उसके गुण तेरे अन्दर प्रकट हो जायेंगे। दूसरे के गुणों का बखान करने से तेरी शक्ति बढ़ेगी, ईर्ष्या का नाश होगा। आज से तुम ध्येय के साथ अच्छा व्यवहार रखना शुरू कर दे।”

पुनीत का उदास चेहरा बोला-“ध्येय में गुण ही क्या हैं? यदि माइक्रोस्कोप लेकर भी ढूँढ़ने जायें तो भी एक गुण नहीं मिलेगा।” दर्पण तुरन्त बोला-“यदि तू ढूँढ़ नहीं सकता तो तू आगे भी नहीं बढ़ सकता।” पुनीत नीचे मुँह करके खड़ा रहा। दर्पण फिर से बोला-“चल, अपनी उदासी दूर कर और परीक्षा की तैयारी में लग जा। इससे पहले मुझे कुछ प्रश्नों का उत्तर दे-तू परीक्षा की तैयारी कब से चालू करता है?” पुनीत-“परीक्षा शुरू होने के एक सप्ताह पहले से।”

दर्पण-“ध्येय कब से तैयारी करता है?” पुनीत-“उसके पापा कहते हैं कि वह रोज पढ़ता है। समय से अपना काम पूरा कर लेता है। वह टी.वी. देखने, खेलने, दोस्तों से बातें करने में अलग से समय निकालता है और टाइम टेबल के अनुसार अपना कार्य पूर्ण भी कर लेता है।”

दर्पण-“देखा, ध्येय अपने समय का सदुपयोग करना जानता है। वह टेनिस का अभ्यास कब करता है?” पुनीत-“अभी हम व्यर्थ की बातों में अपना समय गुजार रहे हैं इसी समय।” दर्पण-“इसका अर्थ यह है कि वह नियमित समय पर अपना काम जिम्मेदारी के साथ पूरा कर लेता है।”

पुनीत को समझाते हुए दर्पण पुनः बोला-“पुनीत! यदि ईर्ष्या करने के बदले तू उसका सम्मान करने लगेगा तो तेरे अन्दर भी ध्येय के समान गुणों का विकास होने लगेगा।” दर्पण के इन शब्दों को सुनकर पुनीत प्रोत्साहित हो गया। वह ध्येय के गुणों, जैसे-शिष्टता, नियमितता, एकाग्रता, कड़ी मेहनत आदि का सम्मान करने लगा। इससे ध्येय के गुण पुनीत में धीरे-धीरे आने लगे।

कुछ समय बीतने के बाद जब परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ तो पुनीत बहुत खुश था। तब दर्पण ने उससे पूछा-“पुनीत! आज तू खुश क्यों है?” पुनीत बोला-“तुम्हें कैसे पता चला कि मैं आज खुश हूँ।” दर्पण बोला-“मैंने पहले ही कहा था कि जो मैं देखता हूँ वही कहता हूँ।” पुनीत मुस्कराते हुए बोला-“आज परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ है। उसमें मेरा दूसरा नम्बर आया है और पहला ध्येय का। लेकिन फिर भी मैं बहुत खुश हूँ।”

इस प्रकार दूसरों के गुणों के प्रति आदर-सद्भाव रखने से पुनीत के स्वभाव और परिणाम पर असर दिखने लगा। उसके नकारात्मक विचार धीरे-धीरे सकारात्मक होने लगे। वह दर्पण का हृदय से बहुत आभारी था, क्योंकि उसने पुनीत को ईर्ष्या से बचने का उपाय बताया था। अपनी शक्ति को पहचान कर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने के लिए उसे प्रोत्साहित जो किया था।

(1) अपनी तुलना किसी दूसरे के साथ करने से ईर्ष्या का जन्म होता है जिसके फलस्वरूप हमारा ध्यान अपने काम के बदले दूसरे पर चला जाता है। इससे हमारी आन्तरिक शक्ति और सामर्थ्य क्षीण (खत्म) हो जाते हैं।

(2) ईर्ष्या-द्वेष जैसे-जैसे बढ़ता है हमारे अन्दर दूसरे के प्रति नकारात्मक विचार आने लगते हैं।

(3) ईर्ष्या करने से हमारे अन्दर मौजूद परिश्रम, एकाग्रता आदि गुणों का नाश हो जाता है।

(4) दूसरे के गुणों को हृदय के साथ स्वीकार करने से ईर्ष्या दूर हो जाती है और उसके गुणों का हमारे अन्दर विकास होने लगता है।

-‘संस्कार सूत्रम भाग-3’ से साभार

प्र. 1 पुनीत की ध्येय से ईर्ष्या का क्या कारण था?

प्र. 2 दर्पण की क्या विशेषता होती है?

प्र. 3 ध्येय की सफलता का राज क्या था?

प्र. 4 पुनीत ने ध्येय के किन गुणों का अनुसरण किया?

प्र. 5 प्रस्तुत कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

प्र. 6 एक-दूसरे से तुलना का आधार क्या होना चाहिए?

बाल-स्तम्भ [फरवरी-2022] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी-2022 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'रोहिण्येय चोर भी बदल गया' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	पुलकित जैन, आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	कु. हेतल प्रशान्त कोठारी, धुलिया (महाराष्ट्र)	23
तृतीय पुरस्कार-200/-	भाविक जैन, जयपुर (राजस्थान)	22
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	अवधि तातेड़, आसीन्द (राजस्थान)	21
	काव्य जैन, जोधपुर (राजस्थान)	21
	लक्ष्य जैन, जयपुर (राजस्थान)	21
	दक्ष जैन, जयपुर (राजस्थान)	21
	शुभि जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	21

बाल-जिनवाणी मार्च, 2022 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 मई, 2022)

- प्र. 1. माँ के दायित्वों को निभाने को दुष्कर तप क्यों कहा गया है?
- प्र. 2. लड़की अपने घर जाने में क्यों भयभीत हो रही थी?
- प्र. 3. तस्सउत्तरी के पाठ को आत्म-शुद्धि का पाठ क्यों कहा जाता है?
- प्र. 4. Write the name of the five regulations of conduct.
- प्र. 5. 'मन जब-जब हो विचलित' कविता में निहित सन्देश लिखिए।
- प्र. 6. 'अमरा और पद्मा' कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- प्र. 7. व्यसनों से दूर रहकर हम किस प्रकार सफल व्यक्ति बन सकते हैं?
- प्र. 8. How can we save the world by adopting non-violence?
- प्र. 9. भगवान महावीर से सम्बन्धित चारों मुक्तकों में छिपे भाव को संक्षिप्त में लिखिए।
- प्र. 10. Make one sentence using each word-Monks, Wisdom, Violence and Harmony.

बाल-जिनवाणी [जनवरी-2022] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 है।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	जितेश जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	37
तृतीय पुरस्कार-300/-	सुदर्शन जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)-200/-	कु. सिमरन किरण अलीझाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	35
	प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	35
	अर्चित जैन, बठिंडा (पंजाब)	35

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506357533 ☎ : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168

A/c No. 168010100120722

PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्गों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।	श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगद। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर।
DIAMOND MEMBER (RS.200000)	श्रीमान् गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)
श्रीमान् प्रकाशचन्द जी भण्डारी, हरलूर रोड, बैंगलोर M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बैंगलोर	श्रीमान् सुगनचन्द जी छाजेड़, चौपासनी रोड, जोधपुर।
SILVER MEMBER (RS.50000)	श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरूवल्लुवर (तमिलनाडू)। श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले)
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगद) श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (भोपालगद वाले)। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.) श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांड, विजयनगर, राजस्थान	

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

‘छोटा सा चिदंतब परिब्राह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का’

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रवचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रैल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु निम्नांकित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रावकरत्नों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार उनका हार्दिक आभारी है।

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा ट्रस्ट, बीकानेर
- (2) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (3) इन्दर कुमार मनीष कुमार सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर
- (4) श्री गणपतराजजी, हेमन्त कुमारजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर
- (5) Shri Ankit ji lodha, Jewels of Jaipur Gie gold creations Pvt Ltd, Mahaveer Nagar, Jaipur
- (6) श्री राधेश्यामजी, कुशलजी, पदमजी, अशोकजी, प्रदीपजी गोटेवाला, सर्वाईमाधोपुर (राज.)
- (7) श्री सुरेशचन्दजी इन्दरचन्दजी मुणोत, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
- (8) श्री कस्तूरचन्दजी, सुशील कुमारजी, सुनील कुमारजी बाफना, जलगाँव (महाराष्ट्र)
- (9) पुष्पा चन्द्रराज सिंघवी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- (10) श्री राजेन्द्रजी नाहर, भोपाल (मध्यप्रदेश)
- (11) श्रीमती लाडजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (12) श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (13) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
- (14) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (15) श्री प्रेमचन्दजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, जयपुर-मुम्बई
- (16) सतीशचन्दजी जैन (कंजोली वाले), जयपुर।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

- (1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
- (2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोढ़ा, नागौर-जयपुर।

**उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं
वित्तीय वर्ष 2022-2023 के लिए
स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का
हार्दिक स्वागत।**



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138

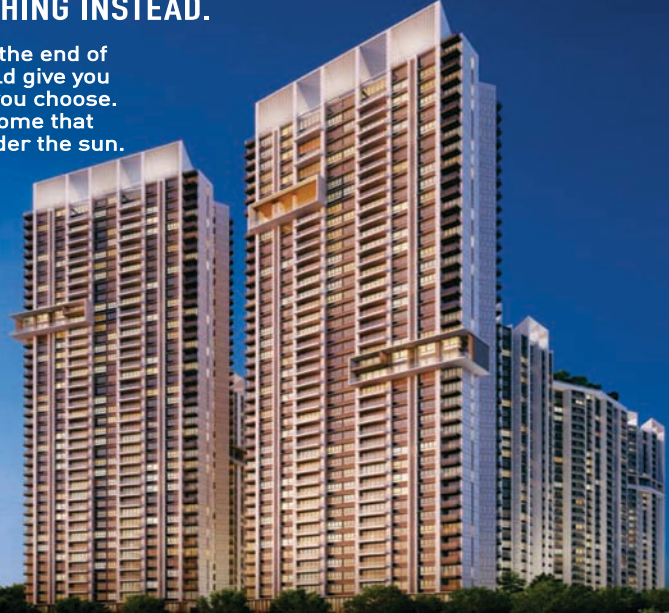




**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन